Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4-7.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

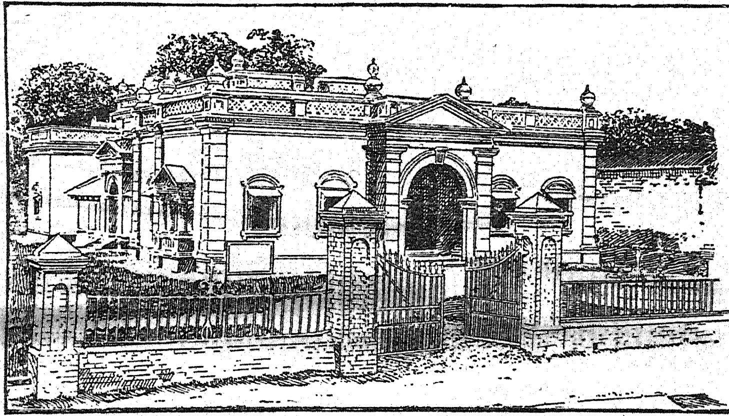
BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Rádha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIV and XXV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

36

पर्व्व २४ और २५

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १) Issued 31st. October 1906. [*Price Re. 1.*

सूचीपत्र ।

—:o:—

(२४)	धनकथा	पृष्ठ ७०५ से ७५८ तक
(२५)	शशिवृता वर्णन (अपूर्ण)	,, ७५९ ,, ८३२ ,,

—:o:—

विशेष सूचना ।

इस ग्रंथ का सारांश गद्य में लिखा जा रहा है, वह आगामी संख्या से इस ग्रन्थ के साथ में छापकर प्रकाशित किया जायगा ।

कवित्त ॥ चढ़त भांन मध्यांन । बीर गष्षर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । ओट तत्तार षान भर ॥
बज्ज घात आरिष्ट । बीरता रिष्ट गरिष्टिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि । लुथ्थि लुथ्थन पर जुट्टिय ॥
धारंग कुट्टि अन कुट्टिहै । डंक बज्जि वज्जी विपल ॥
हरुवंत देखि उभ्भै हसब । उघरि सिंभ दिष्षै सुपल ॥ छंद ॥ १५० ॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पल उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्षौ ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्षीन । प्रकृति दिष्षौ गुरु षासन ॥
थान थान जम पुक्कि । रंभ पुच्छै पक्क गृह फिरि ॥
भौ अचंभ कविचंद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी जु सुगति षग मग्ग करि । जोग मग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर भिलि सूर ग्रह । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥

गष्षर ख़ां और तातार ख़ां दोनों का मारा जाना ।

दूहा ॥ उभय सहस गष्षर परिग । थल बिंध्यो सुरतान ॥
समरसिंघ रावर सिमुख । परिग बीर[1] बिय षांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

याकूब ख़ां का घोर युद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ पर्यौ षांन आकूब मुष्षं समाहं । बजे टोप टंकार के तार साहं ॥
कटै कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
करै बीर भंगं सुभट्टं करं कं । मनो उच्छरै मीन जल मभ्भ पंकं ॥
करे दोह दोही समं चिच कोटं । परे बीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
मथी सेन दूनं भई थोर थोरी । मनों वारिजं पंति दंती झकोरी ॥
बजै घाइ अघ्घाइ निघ्घाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा वकै ज्वान भट्टं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
परै ढाल मालं विराजै कला की । मनों भीति गौषं भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्षं षगं नीर झल्लै । मनों माधवं मास वे वंक फुल्लै ॥ छं० ॥ १५६ ॥
किरव्वान कुंतं झरै पैसु कक्की । मनों बीज लट्टी कुलट्टा मनक्की ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो०—वीय ।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया।

दूहा ॥ रहिग जांम तन अद्ध घटि। टरिन बीर जुध वार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां। लयौ सैन सिर भार ॥ छं० ॥ १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली ॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उक्कारत दूर ॥
हहा हुहु गंध सुगंध्रव गांन[1]। षच्यौ घरि एक उभै रथ भांन ॥ छं० ॥१५९॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। अमीय उपावहि ढुंढहि लाल ॥
जु षिझ्झै चहुवांन कृपान कसी। सुमनो दुति दोझ्झर सी निकसी ॥ छं० ॥१६०॥
तुटि पट्टन गौ उपमाहि लह्यौ। सुपस्यौ जनु मेर सुरंग कह्यौ ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ। भमरावलि छंद सु चंद रच्यौ॥ छं० ॥ १६१ ॥
नव नंचिय रुंडति मुंड हस्यौ। तिन ठौर विभक्क भयानक सौ ॥
परि लुथ्थिय अ लुथ्थिय तहां सरसं। सुभयौ रस भ्रंकर रुद्र रसं[3] ॥ छं० ॥ १६२ ॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तहां उपमां उचरै ॥
छबि भो घन स्यांम हरत्त परी। मनों बिंब बलै नदिद्दै उतरी॥ छं० ॥ १६३ ॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद श्रृंगार पनाह हरै ॥ छं० ॥ १६४ ॥
तिन जारन गाड़न को न बचै। रनसं[4] रस तीय सु सत्य नचै ॥
धरकै धर काइर चित्त वियं। करुना रस केलि कुलान कियं॥ छं० ॥ १६५ ॥
बर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ। तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ॥ छं० ॥ १६६ ॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा ॥ अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरँभ नरसिँघ जग्गि ॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्थ करन कलि लग्गि ॥ छं० ॥ १६७ ॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाहा ॥ जब मचि रीठ अपारं। किय अति क्रम्म जवनयं साहं ॥

(१) मो०—जांन। (२) मो०—भवो।
(३) मो०—हसं। (४) को०—कृ०—संसर।

भर हर हिंदुअ भग्गं । कर धरि षग्ग धाय कूरंभं ॥ छं० ॥ १६८ ॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ।

कवित्त ॥ जबहि सेन चतुरंग । साहि अरि जंग आइ जुरि ॥
तबहि राज रघुवंस । झुकित बर षग्ग अप्प गहि ॥
हनिय मत्त गजराज । सिंघ कर मध्य सिंघ[1] बहि ॥
मनो बसत रंगरेज । मह फुल्यौ सुरंग ढहि ॥
दौरे मसंद किलकार करि । धुअ समान साहस धरै ॥
बज्जे बहून असिवर सबर । सुकवि चंद कीरति करै ॥ छं० ॥ १६९ ॥

दोनों सेनाओं का लक्ष्य पक्ष्य होकर घोर युद्ध करना ।

छं० विराज। जुरे हिंदु मीरं बहे षग्ग तीरं। मुषें मार मारं बहै सूर सारं ॥ छं० ॥ १७० ॥
भिरै दूअ भारं तुटै* षग्ग तारं। अकथ्यं करारं कहे देव पारं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
जुटै पंच षानं करक्कै कमानं। रघूवंस रायं धरै षग्ग धायं॥ छं० ॥ १७२ ॥
नरं सिंघ रूपं जुरे नेक जूपं। महंम्मद षानं रघूवंस रानं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
हयौ सेल मीरं पर्यौ मध्य वीरं। कही फौज साहं बहै कक्रवाहं ॥छं०॥ १७४ ॥
दुअं तीन षानं हयं तीहि यानं। बहै षग्ग भट्टं सुदा हिंम घट्टं ॥ छं०॥ १७५॥
बहै धार धारं करै मार मारं। हलो हल्ल मीरं नयौ नाग पीरं॥ छं० ॥ १७६ ॥
सिरै तुट्टि तारं मिले षांन सारं। अनुज्जं अपारं ……… ॥ छं० ॥ १७७ ॥
ढहावंत घायं मनो हष्ष वायं। गए सूर भेदं बरी अच्छ भेदं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
दुअं फौज राजं जु साहाब गाजं। रहै दोस सामं करै सामि कामं ॥छं०॥ १७९॥
करै देव साषी सबै कित्ति भाषी। ………………………॥ छं० ॥ १८० ॥

रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ।

कवित्त ॥ हूं तत्तो रघुवंस। भीर भंजन चहुआनिय ॥
भयौ दुलह तिन बेर। बरन बरनीं सुरतानिय ॥
बीर मंच उच्चार। लोह अक्क्षित उक्कारै ॥
मिलि अक्करि करि गांन। लोन गिद्धनि उत्तारै ॥
पुज्जंत[2] कलस थपि धवल सिर। कलह केलि भावरि फिरहि ॥
मंडप्प षेत मांनिनि मुगल। सस्त्र कटाक्ष सु झुकि करहि ॥ छं० ॥ १८१ ॥

१ मो०—सिंघ । * यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है । (२) मो०—पूजंत ।

युद्ध की शोभा का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ दोउ दीन सु दुंदुभि लोह भिले[1] । अँग अंग करक्कत[2] जंग पिले ॥
सहनाइ नफेरिय नेंक बजं । सु मनों घट भद्दव मास गजं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
घन टोप सु रंगिय तेज घुले । जनु पंतिय बग्ग हनेक मिले ॥
घन पाइक पंति झनंकत यों । मनों मोर कला करि नाचत यों ॥ छं० ॥ १८३ ॥
धुँधुरी दिस दिस्स* सवंग दिसा । दिघि पीत सु पत्तिय अद्ध निसा ॥
गज बंधि सनैन चमंकति यों । सुमनो लगि ऊक परव्वत ज्यों ॥ छं० ॥ १८४ ॥
किरवान कढंत कला दुसरी । सुमनों झर चौरिय सी पसरी ॥
कटिकंध[3] कमंधन छुट्टि जुरी । मनों बीज कला कुय छूटि परी ॥ छं० ॥ १८५ ॥
असवार सु पष्षर कट्ठि तवै । सुमनों घर बंटत[4] बंधव है ॥
करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो । मनु जावक मैं जल बंटत ज्यौ ॥ छं० ॥ १८६ ॥
भभकंत भसुंडन रुंड परी । बढि पावक ज्वाल मनों निकरी ॥
दुहु बीच भसुंडन देव लसै । मनों बाल गनेस हि पूजि हंसै ॥ छं० ॥ १८७ ॥
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली । सु मनों दधि मट्ट उपट्टि हली ॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं । सु फिरै जल सुक्कय मीन उधं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
गज उप्पर ढाल गिरै बर तैं । सु गिरैं गिरि केलि मनो जरतें ॥
गिरि केलि कमंधन चंत षरे । मनों भेष पिसाचन सांच करे ॥ छं० ॥ १८९ ॥
† बढ़ि बढ्ढि घनं घट सीस जरै । जनु बद्दल बद्दल बीज अरै ॥
जु सनाहन घाइ सुभै तन में । झर होरिका सी प्रगटी घन में ॥ छं० ॥ १९० ॥
चवसट्ठियों तारिय दै किलकी । सु नचै जनु गोपिय पेम छकी ॥
घन घाव सु बिद्दल[5] यों घुरकैं । मनों बोलि कबूतर है सुरकैं ॥ छं० ॥ १९१ ॥
दुतियं उपमा कविता सुर कै । मनो पूर नदी हय ज्यों फुरकै ॥
तरवारनि तेज परै तरसी । घन घुम्मंहि मध्य मनों झरसी ॥ छं० ॥ १९२ ॥
तिन उप्पर पंषिय बंधिय पंति । मनो षट्ट दूंद्र धनंकिय पंति ॥
पिलवान हलै करि पील गिरै । कलसा मनो देवल के विहरै ॥ छं० ॥ १९३ ॥

---

१ मो०—पिले । २ क०—अरक्कत ।
* को०—ए०—प्रति में "दिधि जीतिय नीति" पाठ है ।
३ क०—को०—ए०—बंध । ४ मो०—"बंधव बंटत" ।
† ये दोनों पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं है० । ५ ए०—वट्ठिल ।

घन छिंछ उपंम करै सुरषै । मनो मेघ प्रवालनि कै बरषै ॥
घन नाइ रची घन घुघ्घरियं । सु नचै मनों बालक बिल्लरियं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
इक सूरह की उपमा बरनों । इर मध्य गरज्जत सिंघ मनों ॥
सुर तीन हजार सु लोह मिलें । तिन में दस तीन कमंध षिलें ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दस रावर हैं बर षेत चढ्यौ । टुक की टुकरा नव टूक बढ्यौ ॥
दोइ दीन रचै इतनै उनमान । मनों तारक प्रात[1] विचंद समान ॥ छं० ॥ १९६ ॥

रावल का शत्रु सेना का इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ।

कवित्त ॥ दसहै बर कटि समर । कोरि गज गाह हथ्थ लिय ॥
छिंछ श्रोन सब अंग । पुहप जनु वृष्टि देव किय ॥
किल किंचित रस भव्यौ । लुथ्थि पर लुथ्थि अरुहिय ॥
सीस चक्कि धर जुहि । कुहि अरियन फिर जुहिय ॥
बिडुर्‍यौ देषि सुरतांन मन । सेन सब्ब मन बिडुर्‍यौ ॥
अटि हार कोइ पुज्जै नहीं । बल अभूत आतम कर्‍यौ ॥ छं० ॥ १९७ ॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कवित्त ॥ तब पृथिराज नरिंद । साह सम्हौ गज साहिय ॥
पंच बान कम्मान । साहि गोरी झुकि बाहिय ॥
सरकि सेन सब धरकि । पक्कं जंगल भए ठढ्ढे ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कृष्ण सारथ सम[2] गढ्ढे ॥
बर करकि करकि कमान कर । पंष तेज कुर्‍यौ सबल ॥
नट डोरि जानि पहर चढ्यौ । रुधिर कोरि मंडी तिलक[3] ॥ छं० ॥ १९८ ॥

सुलतान का अपनी सेना का ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया ॥ तब जंपै सुरतान अप । जीवत जाइ सु जाउ ॥

१ ए०—को०—प्रात ।
(२) ए०—मन ।　　(३) मो०—तलक ।

हूं जीवत रन रुक्किहों। मो मति इहै सुभाउ ॥
मो मति इहै सुभाउ। ताहि निरषन बल एही ॥
कर तारी घन कांह। तूल अग्गै जिम देही ॥
बीज कटा जिम प्रांन। नई काया मिल ढंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ। साहि आलम इम जंपै ॥ छं० ॥ १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना।

कवित्त ॥ सुबर बीर गज्जनेस। अंग चौरंग बात सुनि ॥
राज रंक षिल्लै विचार। नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह। दाव दिज्जै नहिं दुज्जन ॥
जस अपजस भै मरन। जहु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्ष गति। ए सरीर लग्गा रहै ॥
उच नीच चंपत चक्र गति। पति बिपत्ति जिय सब सहै ॥ छं० ॥ २०० ॥
दूहा ॥ का काया मायातिका। का ग्रहनी ग्रह कोन ॥
अप्पन अंषिय मिहचतें। जो देषियै सुलोन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

सुलतान का तातार ख़ां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते।

कवित्त ॥ सुनहि षांन तत्तार। अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पंषी बर जिते। तत्त सोइ तन मग्गे ॥
चियं बंध सेवक सुमंत। तन पें तन चाहै ॥
सुर नर गनधर और। जग्य जापह अवगाहै ॥
आचेत अवर परवसि परे। भूयन बिन मरदंग कह ॥
जम हथ्थ जीव पंजर परै। पंच सलाकह तुक्क सह ॥ छं० ॥ २०२ ॥
दूहा ॥ जमर काल सो व्याल भ्रम। पंजर तुट्टत तेम ॥
षां ततार अरदास सुनि। मो आलम मति एम ॥ छं० ॥ २०३ ॥

शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े।

कवित्त ॥ सो सेवक सुनि स्वामि। स्वामि संकटै कढावै ॥

*सो सु मित्र अप्पनौ। चित्त मित्तें न दुरावै॥
*सो बंधव अप्पनौ। दसा अवदसा न कथ्यै॥
सोइ त्रिया अप्पनी। आस मुक्कै अंसु सथ्यै॥
मति सोइ जोइ पग उप्पजै। तत्त सोइ तत्तह मिलै॥
हम परत भिरत सुरतान सुनि। गज्जन वै गज्जन चलै॥ छं०॥ २०४॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना।

कवित्त॥ तमकि तेज गोरी। नरिंद चित डोलै बल[1] साह्यौ॥
अधम भ्रत्त बिन अब्ब। पुट्ठि गोरी न समाह्यौ॥
सुबर बीर सुरतान। सेन चहुआँन ढँढोरिय॥
पगी जांनि पारष्ष। जेम दरियाव हिलोरिय॥
पक्खिल्लो षलन सुरतान दिषि। सिंघ लोक अविलरकयौ॥
मुरि गयो सेन सुरतान कौ। कच सीस तब नंषयौ॥ छं०॥ २०५॥

पांच ख़ाँ और पांच ख़वासों का घोर युद्ध मचाना।

कवित्त॥ पंच षान सुरतान। पंच षावास सु चढ्ढिय॥
पाह्लवान सुरतान। पास बाजू दोइ ठढ्ढिय॥
रन रुंध्यौ सुरतान। सेन चहुआन ढँढोरिय॥
मनु पलट्यौ नट भेस। बीर करुना रस सज्जिय॥
भर भीर तीर कुट्टिय दिषिय। तब सु ओट[2] आलम गह्यिय॥
तत्तार षांन षुरसान षां। मंत मंडि सब दिषि कढ्ढिय॥ छं०॥ २०६॥

कवित्त॥ जब सुषान षावास। भरर लग्गिय भय तप्पन॥
बढ्ढिय सार सुष मार। छंडि गोरिय बल अप्पन॥
लाल डंड सिर छत्र। देषि सुरतान साह्यि पर॥
तब दौरै भर सुभर। चलै दल चल्ल धराधर॥
बिचलिय सुफौज सुरतान लषि। तब कुट्टिय धर धीर सचि॥
षानह सुपंच षावास भिरि। सिर पर आवध रीठ मचि॥ छं०॥ २०७॥

(१) मो०—मीचत्तं।
(२) ए०—कृ०—ओल।

कवित्त ॥ दूत सुथान षावास। उतह सामंत सिंघ भर ॥
रिस रिन मत्ती रीठ। तुट्टि नाइय मसंद घर ॥
गह गहंत उच्चार। कही राजेंद्र राज गुर ॥
तबह षांन रिस ग्रब्ब। हथ्थ बाहंत हंस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करहि। कर षप्पर उनमंत मत ॥
दुअ लरै दीन बल स्वांम कें। घुरत चंब चंबान घत ॥ छं० ॥ २०८ ॥

युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला ॥ हिंदु मेच्छंभरी। ताल बज्जै चरी ॥
घाय घायं घुरी। मत्त छक्के परी ॥ छं० ॥ २०९ ॥
साहि साहाबरी। षान भुम्भै परी ॥
राज रावल्लरी। कंध कंधे धरी ॥ छं० ॥ २१० ॥
सीत तुट्टे तुरी। डक्क नद्दं करी ॥
ईस सीसं जुरी। नंचि नारद्दरी ॥ छं० ॥ २११ ॥
थेइ थेई धरी। गिद्ध सिद्धं करी ॥
जस्स जंगल्लरी। षांन षावासरी ॥ छं० ॥ २१२ ॥
जंग जुड़ें भरी। भीर राजं परी ॥
मार मारुचरी। हिंदु सामंतरी ॥ छं० ॥ २१३ ॥
चल्ल चल्लं धरी। मन्न दूहं[1] मुरी ॥
फौज पिक्खी फिरी। राज राजंगरी ॥ छं० ॥ २१४ ॥
धीर कुट्टै धरी। बोल्लि रावल्लरी ॥
चनौ मीरन्नरी। अश्व छंडे परी ॥ छं० ॥ २१५ ॥
हाय हायं सुरी। बद्धियं बंबरी ॥
काल दिट्ठं सुरी। मद्द घट्टं करी ॥ छं० ॥ २१६ ॥
दिष्षि राजंतरी। छंडि हंसं चरी ॥
कंक बंकं करी। मीरषांनू नरी ॥ छं० ॥ २१७ ॥
ढाल षांनं ढरी। अप्प छोरैं अरी ॥
कढ्ढि कीरं मरी। बाहि दूषां नरी ॥ छं ॥ २१८ ॥

सेस विच्छेदरी । रंभ थंभं ढरी ॥
देषि दाहिंम्मरी । पीप सा निठ्ठुरी ॥ छं० ॥ २१९ ॥
अल्ह सारौ सरी । दूर राजं बरी ॥
देषि लोहं जरी । षग्ग षग्गं भरी ॥ छं० ॥ २२० ॥
जुद्ध भूतं करी । काम सामंतरी ॥
भीर पक्की परी । चढ्ढि हंसे सुरी ॥ छं० ॥ २२१ ॥
भाल भल्ले सुरी । राज कित्तं करी ॥
अठ्ठ षानं गिरी । दूअ रावल्लरी ॥ छं० ॥ २२२ ॥
और सव्वं सरी । षांन ढाहे धरी ॥
कित्ति चंदं करी । नाम ले अन्नरी ॥ छं० ॥ २२३ ॥
दीह दस्सं बरी । सेष सेषं परी ॥
संक सुक्कं सुरी । भान थानं परी ॥ छं० ॥ २२४ ॥
भेद चल्ले सुरी । हूर सें अंबरी ॥
बिंद ढुंढै फिरी । जैत राजंगिरी ॥ छं ॥ २२५ ॥
कित्ति देवं करी । फौज इल्लै धुरी ॥
चल्ल विचल्लरी । कुस्स कुस्सं मरी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
.... । देव नंषै षरी ॥ २२७ ॥

कन्ह का खुरासान ख़ां को मारना ।

छंद मोतीदाम ॥ पच्चौ जहाँ सेन सुरावर सार । मनों मदमत्त कँठीर गुँजार ॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग । घुरें सुर जोरय[1] चंवक संग ॥ छं० ॥२२८॥
वहै करि वार सु संगिय सूर । परे पर नार असूर पनूर ॥
गही बर सिद्ध रु सूर समंत । भयौ जनु आंनि कै ईसर अंत ॥छं०॥२२९॥
नचै दय तारिय चौसठि नारि । बरैं बर सूरय देय षमारि ॥
मिले सम कन्ह अनी षुरसान । वकै दुइ ईसह आन समान ॥छं० ॥ २३०॥
दुअं बर धारिय संग गुमांन । हए हिय कन्ह सुषान उरांन ॥
पच्चौ षुरसान सु बंधव नेत । बढी अति देषि प्रथी पति जेत ॥ छं० ॥२३१॥

(१) मो०-जोरसु ।

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज़ होना।

दूहा ॥ परे षेत षुरसान षां। ढहि घन घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ। बजि वरताई षेन ॥ छं० ॥ २३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावे इसको पकड़ो। सब सरदारों का टूट पड़ना।

छंद मोतीदाम॥ मिले बर हिंदु तुरक्क सुतार। कटक्कट वज्जिय लोह करार ॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार। मनों कुटि सूर किरन्न प्रचार॥ छं० ॥ २३३॥
कहै[1] बर कुट्टि सुबोल उचार। जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरैं भर मीर सु सामंत सुद्ध[2]। कहै कवि कथ्थ सु अंषिन लुद्ध ॥छं०॥२३४॥
बहै स्वर[3] संग दोऊन अपार। ढहै बर मीर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआंन। गहै सुरतान चहौ षग पान॥ छं० ॥ २३५ ॥
फुले मनो साइप भ्रम्म सुरत्त। बढ्यौ मन सांहि गहंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अचो बर सूर। करौ सबमीर परग्गय चूरि ॥ छं० ॥ २३६ ॥
तपे गहि राज सु संग चिभाग। कुटे धर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राइ। दलों सुरतान करों इक घाइ ॥ छं० ॥ २३७॥
सुने बलिभद्दय पीप सु अल्ह। नरां सिर[4] निडुर रष्षन गल्ह ॥
चंपे चव सामंत धाइ परेस। बहै बर सेल क्रियौ दुह भेस॥ छं० ॥ २३८॥
लगी बर सेल कमड्ड निमास। फुले मधु[5] माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमड्ड निसार। तुटै बर ढेवल अंड अधार॥ छं० ॥ २३९ ॥
हकै बर सामंत जुद्ध अनुद्ध। परे असि टेकत उट्ठि कमंध ॥
चले बर नालय हड्डि प्रनाल। नषै बर सूर अपच्छर माल ॥ छं० ॥ २४० ॥
कुथ्यौ धर धीरज मीर अभंग। बढ़ी बर जैत सु दिष्षिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंधिय जात। अघाइय गिद्ध रु सिद्ध सुमात॥ छं० ॥ २४१॥
नचै बर नारद बीर निसान। थेई थेइ कहत वै थिरतान ॥

(१) मो०—बहै। (२) मो०—शुद्ध। (३) ए०—कृ०—को०—बर।
(४) ए०—कृ०—को०—ढहै बर। (५) मो०—मन माधव।

रिसै[६] अति ताइ तुतार सुढांन। मिलै मुहु जोर हुए मरदान ॥ छं० ॥२४२॥
हए हिय तेज ततार सुतंन । पच्यौ धर मुच्छि कढ्यौ धनि धंनि ॥
करै मुष कित्ति नषै कुसमंन। हली वर फौजय साहि सुतंन ॥ छं० ॥ २४३॥
ढहै वर मीर सु साहिज मंन । ....॥ छं० ॥ २४४॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध ।

दूहा ॥ अति संकर वर जुद्ध हुअ । इत राजन उत साहि ॥
दोऊ नैंन अंकुरि परे । बजि बीरा रस ताहि ॥ छं० ॥ २४५ ॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना ।

उअ रुष आइ सहावदी । इय रुष आइय राज ॥
इय कर षोले षग्ग वर । उअ कमान कर साज ॥ छं० ॥ २४६ ॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ जवहि साह आलम्म । झुकिक[१] कम्मान अप्पगहि ॥
तवहि राज प्रथिराज । तेग पक्करिय अप्प रहि ॥
वह वरषत वर तीर । षंचि वरषंत सार ढहि ॥
इहै तेज षग झमहि । करी तुट्टे कमंध बहि ॥
आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ। नह दिष्यो दानव रु सुर ॥
वर दाय चंद इम उच्चरै । करत कित्ति गैनह अमर ॥ छं० ॥ २४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन । शाह की सेना का भागना ।

छंद त्रिभंगी ॥ पढ़ मंदह रतनं[८] अट्ठह रतनं[६] पुनि वसु हरनं रस रहनं ।
त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई ।
अंतै गुर सोहै महि लय मोहै सिद्ध समोहै यह होई ।
विज्जू वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि भिरि जग्गं रजि रंगं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
बज्जै रिन तालं माहो मालं षग्ग सु षालं भिरि चालं ।
राजा प्रथिराजं असवर भाजं सहि सु साजं भिरि भाजं ।

(१) मो०-रचै ।　(२) मो०-झुकित ।　(३) ए०-कृ०-को०-हरयं ।
(४) ए०-कृ०-को०-हरयं ।

किरवान रुकंतं सजि बलवंतं भिरि भय अंतं कलमंतं।
षप्पर अधिकारी चैसट्ठि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० ॥ २४९ ॥
उक ईसर नहं नचि उन महं रजि रज सहं जुरि जंगं।
अद्भुत रस अंगं षग्ग उनंगं हार सुभंगं परि रंगं ॥
सामंतं सूरं चढ़ि विन्नूरं बजि रन तूरं असि चूरं।
तुट्टै धर मीरं साह गुहीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० ॥ २५० ॥
नचि मीर कमंधं हसै तसिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं।
नंषै हय हंसं तेज तरंसं सहित सरंसं करिगंसं ॥
बुल्लिय सुबिहानं हिंदुअ रानं कढ़ि क्रपानं गहि पानं ॥
झारे षग झहं विज्जल कुट्टं वाहि विकट्टं नचि नट्टं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
हनि हनि सामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं।
चव्वर चहुआनं गह गह बानं साहि सुतानं बलपानं ॥
छंडे सिर छचं साहि सु तंचं गोधीरचं मनमंतं ॥
बहरी तजि बाजं हहि गजराजं लरि षग साजं कह काजं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
तत्ते षरि राजं साहि सु साजं जै जुग काजं रस साजं ॥
आलम अरु राजं दुअ दे हाजं[1] हनि हनि वाजं भिर वाजं ॥
दिषत्री तहां राजं तजि गज राजं हैंवर साजं गुर गाजं ॥
गहि कर कंम्मानं तीर सुतानं लगि असमानं बहि वानं ॥ छं० ॥ २५३ ॥
चिस झल्लर टोपं राजन धोपं असि वर जोपं वहु कोपं ॥
है हनि सु बिहानं कर अप्पानं ग्रहि सुरतानं बलवानं ॥
उड़ि दिसि दिसि भाजं मीर अकाजं पष्षि सहाजं गहि बाजं ॥
भग्गी वर फौजं साहि सु जौजं मन करि मौजं धरि धौजं ॥ छं० ॥ २५४ ॥

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ भगी अनी षुरसान षां। कुहि मीर धर भ्रंम ॥
गह्यौ साह आलंम कर। विचलि सुभर तजि श्रंम ॥ छं० ॥ २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहैं षानजादे।

(१) मो०—रानं।

ग्रह्यौ हथ्थ गोरी अवें साहि बादे ॥
लग्यौ चित्त कोटी सुरत्तांन राह्यौ।
वजे वे निसानं सजित्यौ सराह्या ॥ छं० ॥ २५६ ॥
गयौ भग्गि कूरंभ मरहठ्ठ वाली।
गयौ सत्त मुक्के न्टपं वे पँचाली ॥
सबें सेन बंधी रहे सेन मुक्कै।
गयौ हब्बसी रोमसा ध्रंम चुक्के ॥ छं० ॥ २५७ ॥
बरा रीत गौरं भगे रुंड मुडं।
पस्यो मभ्भ सामंत गोवाल कुंडं ॥
भग्यौ कंनरी हस्त बे हस्त बानं।
भग्यौ बेदरी बल कदी छंडि पानं ॥ छं० ॥ २५८ ॥
बदं वे कुसादी पस्यौ कासमीरं।
मुलत्तान बहू कुव्यौ हथ्थ तीरं ॥
भग्यौ प्रब्बती एलची झारखंडी।
जिनै भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मंडी ॥ छं० ॥ २५९ ॥
भग्यौ वै बंगाली करंनाट वाली।
भग्यो भागि सांद्रोह कूरंभ वाली ॥
पस्यौ झूझि सा वहरी वह तीनौ।
जिने ठेलि चहुआन सब सह दीनौ ॥ छं० ॥ २६० ॥
बयं विंदु वाली भग्यौ सथ्थ सब्बं।
जिने लोहची लग्गि अंची[1] न कब्बं ॥
मयं मेछ बड्डु मयं मक्क राया।
जितें भागतें बार लागी न काया ॥ छं० ॥ २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुच्च अच्छी कुचीरं।
जिनें भग्ग तें भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यौ गज्ज पीरा उसा हत्त नाथं।
भग्यौ अग्गिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० ॥ २६२ ॥

(१) मो०—अंचन।

परयौ षांन आल्लुब संसार साषी।
जिने दीन बंदेन की लाज राषी ॥ छं० ॥ २६३ ॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना।

कवित्त ॥ गहि लीनौ सुरतान। समर लिन्नौ जसुभारी ॥
चामर छच रषत्त। बषत लुट्टे रन रारी[1] ॥
चिच कोट चव रंग। साहि दिन्नौ चहुआनं ॥
चतुर दसी रवि वार। वीर बज्जे परवानं ॥
बुल्लयौ बीर कैमास तब। धन कढ्ढन चल्लो समुद्द ॥
आरब्ब राव भीरा सुबर। चंपि सु रष्यौ गंज उद्द[2] ॥ छं० ॥ २६४ ॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना।

दूहा ॥ परे सेन गोरी गरुअ। गहि लीनौ सुरतान ॥
सोमेसर नंदन सुकर। जै लिन्नौ जय पान ॥ छं० ॥ २६५ ॥

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना।

कवित्त ॥ गह्यौ साहि आलम्म। सुजस लीनौ चहुआनं ॥
षलक षांन भग्गिय विहाल[3]। परे है गै धर थानं ॥
मीर मसंद मसंद। कटे सामंद हथ्थ भर ॥
दुअ राजन भर जुरे। सुवर लिन्नौ सु अप्पकर ॥
जै जै सबद्द जुग्गिनि करै। सीस गहै ईसन समथ ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ बर। करिय राज्य प्रारंभ कथ ॥ छं० ॥ २६६ ॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा।

दूहा ॥ करिय जैत राजन सु बर। चलिय लच्छि बर साज ॥
तब विचार राजंन गुर। कही राज सिरताज ॥ छं० ॥ २६७ ॥
तब रावर बर राज गुर। कहिय राज प्रथिराज ॥

(१) मो०--नारी।
(२) मो०--वद्द।
(३) ए० कृ० को--विहान।

ढिल्ली दिसि अच चल्लियै । फिरि सु मुहूरत साज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो ।

फिरि राजन इम उच्चरिय । सुनौ अहुट्ठ नरिंद ॥
का कारन पीछै फिरै । सो कारन कहि नंद ॥ छं० ॥ २६९ ॥

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए।

तबै सिंघ फुनि उच्चरिय । अहो समंतन राज ॥
साह गह्यौ तुअ जैत हुअ । अच करि मंगल काज ॥ छं० ॥ २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए ।

रहैं अप्प सेना सुसथ । अरु दाहिम्म सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ । करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० ॥ २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए ।

जतन लच्छि बर किज्जियै । रचौ सुभर अप्पानि ॥
जब रच फिर दूरजिंद दूत । तब कढ्ढै लच्छि आनि[2] ॥ छं० ॥ २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ।

गाथा ॥ कहि प्रथिराज नरिंदं । जु कछु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं । चलि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ।

ढिल्ली मग्ग सु चलयं । फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं । अवरं रष्षि सब्ब भार तथ्यं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

(१) मो०—करि चल दिल्ली साज ।
(२) मो० प्रति में "जब आंऊ दिल्ली सुजे तब कढ्ढे लछिआंन" ।
(३) ए० कृ० को—मग्गाइ ।

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना।

दूहा ॥ सकल सथ्थ रावर सुभर। अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद बर दाइ बर। आनि समंत सकाज ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ बड़ सामंत सु काज। अचल पुंडीर मंच गुर ॥
राम रैंन पावार। चंद हाहुल्लि सेन वर ॥
रष्षि पास न्टप सिंघ। रहै थह लच्छि सुभट्टं ॥
और सकल सब सथ्थ। जुद्ध जस लहन सुघट्टं ॥
ता मद्धि राज संबोधि थपि। सु गुर मंच बरदाइ थिर ॥
चढि चल्ले राज दिल्ली दिसा। लै जद्दू पज्जून भर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले।

दूहा ॥ जाम देव पज्जून नर। बलि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन वर। चल्ले राज गुर संग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले। आइ निकट हूतास ॥
चलत पंथ राजंन नें। पूजा करनह जास ॥ छं० ॥ २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले।

कवित्त ॥ निकट सुदिन हूतास। पूजि इन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर। नंषि श्रीफल असंष फर ॥
फिरि परदष्षिन राज। मांनि बर विप्र बेद धुर ॥
घुरै नद्द नीसांन। गांन नर तर्क नचैं बर ॥
ज्वालनिय माल तृप्पय न्टपति। अति सुदेव नद्दवेद जुत ॥
दिन बीच चले जोगिन पुरह। ग्रहिय मेछ संग्रहनि भति ॥ छं० ॥ २७९ ॥

कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़कर मिलना।

दूहा ॥ ग्रहिय साहि ग्रेहं गवन। आइ मिले सुकुमार ॥
मधुसाह अध कोस पर। छंडि तरिय पै पारि ॥ छं० ॥ २८० ॥

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना ।

चढन राज बर हुकुम दिय । रेत सुमंतहु साज ॥
जैत हुई आनंद करि । ग्रह जित्तन सुभ काज ॥ छं० ॥ २८१ ॥

चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे ।

गाथा ॥ ग्रहन जित्त अरि ग्रहियं । चैच बदी सत्तमी दिवसं ॥
गुरुवारं सुभ जोगं । राजा संपन्न धवल मझ्झेनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया ।

आये राज सुधामं । गए ग्रह मझि साल सुभ तथ्यं ॥
बोलि आइ सव वामं । निवछावरं करि गई ग्रेहं ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं । राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए ।

गई ग्रेह ते चीयं । राजन सुख विस्त्रमियं तथ्यं ॥
अति मादक उनमादं । करि सुष सेंन रमन रस क्रीडा ॥ छं ॥ २८४ ॥
दूहा ॥ क्रीड़ि वांम न्रप रंग करि । नेह संपूरन काज ॥
दीय बचन रष्षन सुजन । डोली साह सुराज ॥ छं० ॥ २८५ ॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय ।

डोली साह सहाब की । दोइ रकेव बर सथ्य ॥
सो डोली कज दस असुर । करि हुकंम मर मथ्य ॥ छं० २८६ ॥
दस आदम साहाब कज । रषि भोजन न्रप पास ॥
सुष सचाव तुम रष्षियौ । रहै राज सुभ भास[1] ॥ छं० ॥ २८७ ॥

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना ।

सुनिय बत्त गज्जन पुरह । ग्रहत साह की घत्त ॥
अनुचर आतुर अति भयौ । उर जानी अविगत्त ॥ छं० ॥ २८८ ॥

(१) ए०–कृ०–सास ।

एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार ख़ां को दिया।

डर जांनी अविगत्त जब। भजि आयौ भट मझ्झि ॥
कहर हक्कि पानीय चढि। कहि ततार अग गुझ्झ ॥ छं० २८९ ॥

ततार ख़ां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए।

गाथा ॥ सुनिय ततार सु तब्बं। रहनं तुक्क दिल्लीपुर राजं ॥
षिची आतुर पठयं। बेगं साहि दंड कज्जेनं ॥ छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ तुम जाहु सु चहुआन प्रति। कहु सलाम सब सथ्थ ॥
तुम सु बढे हिंदून में। छुटै साहि सुभ बत्त ॥ छं० ॥ २९१ ॥
तब ततार अरदास लिषि। प्रति पठई राजान ॥
तुम छंडौ पतिसाह कौं। तुम सु बडे चहुआन ॥ छं० ॥ २९२ ॥

खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना।

षिची चलि चहुआन पै। करिके सबन सलाम ॥
पंच सत्त असबार लै। कोस सत्त मुक्काम ॥ छं० ॥ २९३ ॥

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा।

छंद पद्धरी ॥ धर मग्ग चल्यौ षचीस हिंदु। अति चिंत सुरतान बंद ॥
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग। निज मंच इष्ट चित वन सु लग्ग ॥ छं०॥ २९४॥
अपसगुन सगुन चितै विचार। दिसि बाम सिंघ दिष्षी दुचार ॥
उल्लूक सबद दिय गिरह सीस। दाहिन सुपत्त मृग मृगी ईस ॥छं०॥२९५॥
मृतक रथी सनमुषह आइ। फुनि समुष ग्राम लग्गी स लाइ ॥
अति उअर षिचि आनंद जग्ग। आतुरह चल्यौ दिल्ली समग्ग॥ छं०॥२९६॥

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना।

कवित्त ॥ तब षिची लोरक्क। चले दिल्ली पुर मग्गं ॥
पंच सत्त असवार। उर सु चिंता मन भग्गं ॥
वामी देव चवंत। तार उक्कव सिर उप्परि ॥
मृग समूह दाहिने। चल्यौ पछ पिंगी निक्करि ॥

बंदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यौ कूच पर कूच धरि ॥
आए निकट्ट दिल्ली सु तट । मन चिंता अंदेस हरि ॥ छं० ॥ २९७ ॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाहा ॥ मन चिंता अंदेहं । षित्री आइ दिल्ली मझ्झेनं ॥
अहनि सिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्यं ॥ छं० ॥ २९८ ॥
तहां उतरि लोरष्यं । बाग निरष्यि उत्तिमं छाहं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तष्याहं ॥ छं० ॥ २९९ ॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा ॥ दोइ घरी दिन पक्ख रहि । चल्यौ दिल्ली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्त्रंग वर । प्रावर षिचि उछाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअ । मालनि फूल उछंग ॥
लिए बंदि षित्री सुमन । मुक्कि महुर सुभ नंग ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि षित्री दरबार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बैठे सभा विराज ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील आया है । राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी । लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त ॥ गय षित्री दरबार । द्वार पालक सम अष्षिय ॥
कूरम केहरि कहौं । साहि उक्कील सुलष्षिय ॥
गय केहरि न्रप निकट । कह्यौ गज्जन पुर दूतं ॥
पठयो षान ततार । साह छंडावन बत्तं ॥
न्रप बोलि कह्यौ हज्जूर तिहि । एका एकी मध्य लिय ॥
सनमुष्ष आइ चहुवांन को । सीस नाइ तसलीम किय ॥ ३०३ ॥

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन। राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर के बैठना॥

कवित्त॥ सभा विराजत राज। आइ बैठे सुब्बर भर॥
कन्ह काइ चहुवांन। जैत बलिभद्र सिंह नर॥
जांम देव पज्जून। बड़े सामंत लज्जभर॥
और सकल भर राज। बैठि तहां महुल रंग जुरि॥
आए सुनांम लोरक्क तब। मिलि सलाम राजन करिय॥
बैठन्न हुकुम राजांन किय। करि सलांम बैठो नरिय॥ छं०॥ ३०४॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्ज़ी राजा को दी।

दूहा॥ तब चिची प्रथिराज कों। करि सलांम तिय वार॥
लिषि अरदास ततारषां। समपी बीर विचार॥ छं०॥ ३०५॥

मधु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो।

मधू साह परधांन कर। दिय पची पत्नीस॥
किय हुकम्म वर राज नें। बंचे साह जगीस[1]॥ छं०॥ ३०६॥

तत्तार खां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना।

साटक॥ स्वस्ति श्री राजंग राजन वरं धर्म्माधि धर्मं गुरं॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्त्तते॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोहं करं॥
तुम बड्डे बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं॥ छं०॥ ३०७॥

राजा ने अर्ज़ी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया।

दूहा॥ तब चिची अरदास किय। बंचि सुनाइव[2] राज॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ। दई सीष यह काज॥ छं०॥ ३०८॥
उठि राजन दीने बहुरि। यह चिची गय अप्प॥
मन चिंता लग्गी घनी। राजन देषत तप्प॥ छं०॥ ३०९॥

(१) ए.-कृ.-को.-मुहीर। (२) मो.-कृ.-को.-ना.-सा.।

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया ।

बहुरि सु आए दिन अवर । मिलि राजन किय बत्त ॥
संमुष राजन उच्चरिय । मन सु अगोचर तत्त ॥ छं० ॥ ३१० ॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना । पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा ?

छंद पद्धरी॥ षचीस बेंन सम अष्षि राज । चहुवांन वंस तुम हिंदुलाज ॥
चीतौर स्वांमि कै संभरेस । चालुक्क राज जिहि षग्ग षेस ॥ छं० ॥ ३११ ॥
कमधज्ज संगि तिहि व्याहि अप्प । जैचंद उरहि[1] दिय अनुज नप्प[2] ॥
कइ वार साहि बंधयौ षांन । दीनो केवार जिहि जीव दांन ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
तब लोरक सम[3] पुच्छे नरेस । गोरी सु नांम किहि विधि कहेस ॥
सम राज अष्षि षची निवार । न्रप राज एह अदभुत विचार ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था । पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा ।

कवित्त ॥ बैठि पाट असुरांन । साह जल्लाल प्रमानं ॥
अनँत तेज षग ताप । अनँत दातार दिवानं ॥
पंच सत्त दस हरम । साह कामी तप भारी ॥
हमल हरम निज जांनि । *हनै कर असि वर नारी ॥
सुत ताप राज डरतें गहन । कांम पैर निसि साह मन ॥
सुरतांन पैर अग्गैं धरिग । सेष निजांम सु हुअ प्रसन ॥ छं० ॥ ३१४ ॥

शेख़ निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें

(१) को०—कृ०—ए०—तुअर ।　　(२) कृ०—ए०—नाय ।
(३) मो०—समह ।
* मो०—प्रति में "हनै कर वर कर नारी" पाठ है ।

ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजांम सुसेष[1]। लेष सांई इमलेषं॥
अहो साह जल्लाल। आलि तुम्म समथ सदष्षं॥
महा प्रबल तप तीन। दीन हिंदू दल[2] आलम॥
धरि करिहै निज पांन। जोर जुग्गिनि पुर जालम॥
अज्जाव नारि तिहि पाप तें। असुध किंत्ति दुनियां रचै॥
दस दिसा दप्प असुरांन दल। लिहि लिलाट तित्तौ लचै॥ छं०॥ ३१५।

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद चित्रअष्षरी॥ आयो निज सुरतानह गेहं। बेन निजाम उवर दुष लेहं॥
जौं मुम्म सुत ह्वैहै बल कारी। तौ मुम्म मारि लेइ धर सारी॥ छं०॥ ३१६॥
तितें नारि इक ग्रभह धरयौ। दासी कांन साह अनुसरयौ॥
ततषिन साह सीस हनि नारी। समह गरभ धर मंड[3] सुधारी॥ छं०॥ ३१७॥
बरष पंच अनि ऊपर वीतं। हुअं साह सुरतान सुअतं॥
सबै षांन मिलि मंच विचारं। कवन सीस अब छच सुधारं॥ छं०॥ ३१८॥
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अदभुत रस दिष्षि प्रकासी॥
अष्षिय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[4] कथा एक परमानं॥ छं०॥ ३१९॥
झूठी होइ तौ सजा लहीजै। सची हूऔ निवाजस कीजै॥
सबै षांन मिलि पूछै बत्तं। कहिवे सेष सु क्या कुदरत्तं॥ छं०॥ ३२०॥

[१] मो०--प्रसनि कानि हंसेष। [२] ए०--कृ०--को०--अलि।
[३] मो०--मंडह। [४] ए०--कृ०--को०--कुद्दरति।

बीबी फतेसाह की घरनी। कुदरति गोर मद्धि एक धरनी॥
गोरि मद्धि इक चेलक वासं। देष सरूप कोटि रवि भासं॥ छं० ॥३२१॥
सबै षांन मधि गोर सिधाए। करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए॥ छं० ॥३२२॥

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया।

दूहा॥ गोरि दिखाई षांन तिहि। ततषिन भंजी पाज॥
निकस्यौ सूरति सरस कै। जोति भांन महराज॥ छं० ॥ ३२३॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा। इस की जाति गोरी है। यह हिन्दुस्तान पर राज्य करैगा।

कवित्त॥ जोति रूप महराज। साहतें प्रगट सवायौ॥
षांना षांन जिहान। बेगि निज्जूमि बुलायौ॥
लिषिय जनम तिय लेष। सेष तत षिन इम अष्षौ॥
नाम साह साहाब। जाति गोरी तिहि दष्षौ॥
बहुतेज तषत तप जग्गि है। धरा हिंद सम लग्गि है॥
दस दिसा साह दौही फिरै। घन बीरा रस भुग्गि है॥ छं० ॥ ३२४॥

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई।

दूहा॥ जातें बहु रिन भग्गि है। फुनि तिहि गहि है पांनि॥
पुब्ब कथा षिची कहै। सुनहु राज चहुआंन॥ छं० ॥ ३२५॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है। उसको और तीस हज़ार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे।

कवित्त॥ तब सुराज प्रथिराज। कहै षिची सुनि बत्तं॥
हम आलम गति कहैं। सोइ मानै करि सत्तं॥
गज सु एक सिंघली। नाम स्रृंगारहार गज॥
अति पीय साह साहाब। लषै निसि दिन आलम सुज॥

अप्पौ सु मोहि वह डंड करि । तीस सहस हय नेक बल ॥
कुटै जु साहि साहाब तब । हम तुम रहै सु प्रेम भल ॥ छं० ॥ ३२६ ॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए ।

दूहा ॥ तब षित्री इम उच्चरै । सुनौ राज प्रथुराज ॥
जो मंगो सो देउ तुम । कुटै साहि बर आज ॥ छं० ॥ ३२७ ॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इक़रार हुआ है वह भेजो ।

थप्पि वत्त इह पत्र लिषि । दियौ दूत के हथ्थ ॥
जो कछु कियौ करार कर । सो पठवो तुम अथ्थ ॥ छं० ॥ ३२८ ॥

पत्र पाते तातार ख़ां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे ।

तब ततार षां मुक्कि दिय । रजत हयग्गय नंग ॥
अहि निस आतुर आइचर । उभय सु दस दिन संग ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना ।

कवित्त ॥ दिय सु दंड सुरतांन । गय सु इक्कति पंचह हय ॥
ऐराकी बर उंच । उभय पष्पैं सु निरम्मय ॥
नाम पट्ट स्रंगार । षट्ट रिति मद्द पट्ट भर ॥
अलि गुंजत मकरंद । वास भज्जंत अवर डर ॥
है सहस तीस अनि साज भल । दिय सु दंड सुरतान तय ॥
मुक्यौ सु राज प्रथिराज तब । चल्यौ साह गज्जन पुरय ॥ छं० ॥ ३३० ॥

सुलतान का ग़ज़नी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना ।

दूहा ॥ चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय । दै सुदंड प्रति पिथ्थ ॥
मिलिय उम्मरा अप्पने । करिय बैर सम सथ्थ ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

शाह के महल में आने पर तातार ख़ां खुरासान ख़ां का बड़ा आनन्द मनाना ।

गयौ साहि आलम महल । करी बैर बर अप्प ॥
मिलि ततार षुरसांन षां । बड़ वधत्त मिलि तप्प ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ वद्द सु पट्ट शृंगार। मत्त गज राज पटा झर ॥
रहै नरिंद मुष अग्ग। रास रेसंम फंद पर ॥
जव राजन चढ़ि चलै। तबहि मुष अग्ग निरष्षै ॥
जे अनंत गज प्रवल। ते सु प्रंमल सह धष्षै ॥
जब चढ़ै राज टामंक करि। तव अजव्व सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अदभूत लिषि। दुअ कपोल बूंदन वहै ॥ छं० ॥ ३३३ ॥

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन।

कवित्त ॥ सत्त हथ्थ ऊरद्ध। हथ्थ नव देह लँबाइय ॥
दस हथ्थां परिमांन। पीठ कत्ती गिर ढाइय ॥
भद्र जात उतपंन। दुरद्द हद पाट शृंगारं ॥
जो रावर कहि चंद। कोट गढ़ ढाहन वारं ॥
च्यालीस कोस चालंत मग। लिये लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं करज। पंभारें डारंत घन* ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चौहान का आना।

एक सुदिन राजन्न। चढिव सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत। जाइ सथ पच्छ मिलंते ॥
सत्त सहस असवार। मिले मुष राज सुरत्ते ॥
जांम देव पज्जून। मान मरदन मरदत्ते ॥
सिंघह पवार सुभ सथ्थ तहँ। जैत राव वलिभद्र सम ॥
चहुआन कन्ह नर नाह वर। आतुर षरि आयेव अम ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

गाथा ॥ परि कर सकल सिकारं। लीने सब राजनं राजं ॥
अवर सूर सामंतं। धरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना।

* छन्द ३३४ मो॰ प्रति में नहीं है।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नारिंद प्रति। कही सु अनुचर एक ॥
सुभ बराह एकल प्रबल। कही षबरि सु बिबेक ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावे।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय। अरे सिकारी साज ॥
मति एकल बन जाइ भजि। करि रोकन को साज ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना।

कवित्त ॥ एक दिसा कूकरह। एक दिसि मूलह धारिय ॥
एक दिसा षेदा अनंत। एक दिसि और प्रचारिय ॥
एक दिसा राजंग। एक दिसि आनि अनुचारिय ॥
एक दिसा सामंत। एक बहु भांतिय तारिय ॥
यौं व्यौंत सब्ब राजन करिय। हक्कि सोर उच्चारि भर ॥
निकसंत सु सूकर अप्प रह। हने तीर षंचे सु कर ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदारों का राजा की बड़ाई करना।

दूहा ॥ लग्यौ बांन बाराह उर। पर्यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल सामंत तब। कही सबन धन[1] अच्छि ॥ छं० ॥ ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया।

घन अनँद राजन भरिय। चल्यौ राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही। नाहर घात सु राज ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलैंगे।

तब सुराज से मुष्ष कहि। सुनौ सबै प्रति सूर ॥
बिन सुघात अग्यार में। आन राज इँद नूर ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको।

(१) मो०—परिकर।

कवित्त ॥ नदि सु एक जल किंदु । तहं सु एकह सुभ कोहर ॥
बहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचे केहरी । हनिब इक हषभ अहारै ॥
अति अरिष्ट आभूत । कोइन पग अग संचारै ॥
उच्चरै राज दिल्ली धनिय । पारद्धी हक्कौ तुमैं ॥
बड़ सुभट आंन सोमेस की । बिन अग्या घातन रमै ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ तब सु राज प्रथिराज । पाट शृंगार संगि गज ॥
बड पष्षर[1] तन रज्जि । दंति कट्टारि बंधि सज ॥
उभय पष्ष असवार । गिरद रष्षे करि राजन ॥
तीरंदाज अभूल । भूल रष्षे करि ताजन ॥
सें मुष्ष राज यों उच्चरे । हक्कारौ केहरि सकल ॥
सा वचन सुनत करि कूह भर । गज्ज सु केहरि अप्प वल ॥ छं० ॥३४४॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना । कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ।

निसांनी ॥ सुने गहव्वह केहरी उय्यो हक्कारे ।
कंपि धरद्धर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥
कोइक काल अभूत कैं पचायन भारे ।
गात सु दीरघ हथ्थ गुर जीहा जक भारे[2] ॥ छं० ॥ ३४५ ॥
नष तिष्षा गिर वज्र कै पुंछन तिष्षारे ।
कंध सु जट्टा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
दिष्षौ मरद महावली कंधा उप्पारे ।
गज्जत गज्जत आइया अरियन कें थारे ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

(१) ए. कृ. को.—घत । (२) मो.—जीहा भक कारे ।

सिंह सु सम्हा चल्लिया गजराज संभारे।
तव राजन गज चंपिया हैंवर ठट टारे॥
तीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे।
नेरां आयां जैत राव सिंगनि उभ्भारे॥ छं० ॥ ३४७॥
छोड़े सीह सु चल्लिया नाहर ललकारे।
पारधि एकें चंपिया हथ्थल पक्कारे॥
राज कमान सु षंचि कर तरीन तिष्षारे।
फूटि दुवा सूवार पार गज्जन जिभ्भारे॥ छं० ॥ ३४८॥
करिहै तत्ता कूरंभ झुक्या असि झारे।
बाहे बब्बर वीचह्वै द्वै टूक निनारे॥
मनों सवन विच सुभ्भि थावहि तंतू सारे।
भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे॥ छं० ॥ ३४९॥
धनि माता अरु धनि पिता पज्जून पचारे॥ छं० ॥ ३५०॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे।

दूहा ॥ घन सिकार राजन करिय। हनि बराह अनि अट्ठ॥
बाजे बज्जन सुबर[1] बजि। करि राजन पहु पट्ट॥ छं० ॥ ३५१॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया।

हनि सिकार वाराह बर। दीए सब सामंत॥
बंटि सु दीनौ अबर भर। करि उच्छाह अनंत॥ छं० ॥ ३५२॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना।

कवित्त ॥ तव प्रथिराज नरिंद। आइ दिल्ली पुर मझ्झं॥
अप्प चिंत बर अवर। बैठि सिंहासन रज्जं॥
अवर सूर सामंत। सकल सभ्भा भर मंडे॥
तव सु चंद बरदाइ। आइ कुसुमावलि छंडे॥
बैठे सु सबनि उच्चार करि। सुनिय गान गायन सकल॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पति। करि अनंद दंडे सुपल॥ छं० ॥ ३५३॥

(१) मो॰—सुरस।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना ।

दूहा ॥ एक सुदिन देवंग सों । बोलिय राज नरिंद ॥
देउ मुहूरत दुज सु गुर । तिहि हम करैं अनंद ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

राजगुरु का बैसाष सुदी तीज को मुहूर्त निकालना ।

तब दुजराज सु उच्चरिय । सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत त्रतिय बैसाष दिन । सुभ दिन चल्लौ समाथ ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
सुभ सँजोग अंतर घरी । कहत बचन देवग्गि ॥
सोइ सुदिन आनंद करि । चल्लौ सुराज गुनग्गि ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना ।

कवित्त ॥ चढिय राज सुभ जोग । करि सुमंगल अनंद गुर[1] ॥
दै सु विप्र धन चंड । दीन अनि दान लोक कर ॥
बढि सामंत रु सूर । करै उच्छव उमत्त पर ॥
बजत नद्द नीसांन । चवै जै जया देव नर ॥
सेनह सु सथ्य है पंच सय । नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तह सुक्कक कुल्लाल घट । भरि वाहन मै मन मिले ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना । राजा का शुभ शकुन मानना ।

दूहा ॥ नैरनाइका एक चलि । तन आभ्रन्न अलंकि ॥
देखि न्रिपति रह सिर मिले । दुअ आनंद असंकि ॥ छं० ॥ ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना ।

गज राजन द्वादस रहे । सुभ सँयोग सुभ साथ ॥
करिग कूक्क उतिम प्रचर । षडि लसकर प्रथि माथ ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
कूच कूच राजन चले । सथ सामंत अभंग ॥
पंच सत्त असवार संग । षडि मिलि सावँत संग ॥ छं० ॥ ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना ।

(१) मो.—वर ।

दीह निसा चहुआंन चलि। आइ अचानक राज॥
तब जानी जब दिष्षि न्रप। मिलि सब सेन समाज॥ छं०॥ ३६१॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना।

कवित्त॥ मिल्ले सुभर अप्पान। जांनि आतुर षडि राजं॥
हाहुलि रा पुंडीर। अचल चौहान सु साजं॥
राम रैंन पावार। सु गुर गुरराज समाजं॥
अवर सुभर सामंत। बहुत परिकर सम राजं॥
इत्तने आइ सब बैठि मिलि। तब जानी जब दिष्षि न्रप॥
सुनि बैंनि षबरि आतुर तुरत। मन प्रमोद आनंद वप॥ छं०॥ ३६२॥
गाथा॥ आतुर षडि[1] राजानं। मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं॥
हुअ आनंद अपारं। मिलियं सिंघ राज सामंतं॥ छं०॥ ३६३॥

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना।

कवित्त॥ मिल्ले राज बर सिंघ। प्रेम पूरन राजन भर॥
घरी दोइ बैठे सुतथ। बत्त सिकार कहिय गुर॥
अरु सु दंड पतिसाह। कत्य कारन कहि राजन॥
सुनि दाहिम्मरु चंद। सुभट[2] सब कही सभा जन॥
चव राज सिंघ प्रति सब कही। अरु कठ्ठन लछी गहिय॥
आयौ सु राज थह अप्पनैं। एक निसा राजन रहिय॥ छं०॥ ३६४॥

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना।

कवित्त॥ बजि नरिंद जय पत्त। बीय बज्जा घन बज्जै॥
ताइप घर गजराज। राज दरबारन गज्जै॥
चामर छत्र रषत्त। तषत लीनौ सुरतानी॥
उत्तर वै साहाब। गयौ मुलतानह पानी॥
छंडयौ छत्र सुरतांन सिर। राज छत्र सिर मंडयौ॥
बाजंत नद्द नीसान घन। बंधि साह दँडि छंडयौ॥ छं०॥ ३६५॥

(१) ए. कृ. को.—षरि। (२) ए.—सनि।

गाथा॥ जित्ते वज्जन वज्जं। सज्जे सेन सब सुभट्टायं॥
सुद्धे षेत सु सूरं।। उप्पारियं कोक सुभट्टायं॥ छं०॥ ३६६॥

राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना।

कवित्त॥ बर बंध्यौ सुरतान। लच्छि कढ्ढन क्रम दिन्ना॥
भई षबरि कै मास। राज अग्गै होय लिन्ना॥
सत्त मंत जोतिगी[1]। सब्ब जोतिग उच्चारै॥
द्रिष्टि राहु ग्रह दुष्ट। मंत्र जंत्रह बर टारै[2]॥
पुच्छयौ बीर चहुआंन तब। घन अरिष्ट गुन संभवै॥
लच्छिन्न लच्छि अरु बंचि बिधि। तब बहि मंतत सुन्नवै॥ छं०॥ ३६७॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का बर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे।

कवित्त॥ धन कढ्ढन चहुआंन। बोलि कैमासह पुच्छिय॥
बहु अदभुत जस सुन्यौ। आइ कढ्ढन बर लच्छिय॥
पुब्ब कथा चहुआंन। हों जु आगम सब जानो॥
देवी सुर बरदाई। कहों सु उर अंतर आनो॥
अदभूत वत्त धन निक्करत। दोइ बीर दानव जगे॥
सो सूर धीर धीरज्ज जिय। छंडिय सत्त काइर भगे॥ छं०॥ ३६८॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया।

दूहा॥ सो षट्टू रहे थांन बर। द्रव्य अजै जै राज॥
ता देषन चहुआन फिरि। गौ आषेट बिराज॥ छं०॥ ३६९॥

(१) मो॰--जोतिषी। (२) मो॰--वर दारै।

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी।

अति आदर आखेट न्टप। पति पुर षट्टू पास ॥
पाहन एक पयाल में। संपेष्यो कैमास ॥ छं० ॥ ३७० ॥

कवित्त ॥ संपेष्यौ कैमास। आस बंधी मन संती ॥
ज्यौं बाल चंद निसि करक। मकर दिन मास वसंती ॥
यों उद्दिम न्टप सेव। सेव न्टप सेव सुमंती ॥
ज्यों कन कलंक लगि अंक। सुबर बर बीर अनंती ॥
बच क्रम्म क्रोध अम्मर अरस। सुमन वास ज्यौं वायवर ॥
लछिनह लछि अरु बंचि विच। हुबर हीर तत्तह सुनर ॥ छं० ॥३७१॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा।

दूहा ॥ मंची न्टप सामंत सम। परी सु पाहल पास ॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि। लगि बंचन कैमास ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
ऊरध अंगुल सठ चिसठ। तीर कहत चवसठ्ठि ॥
तहां अक्कर न्रिम्यौ सु इम। सरमै द्रव्य अनिठ्ठ ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग। तिय अंगुल सत[1] अंक ॥
अंगुल अंगुल अंक में। एकादसै प्रसंक ॥ छं० ॥ ३७४ ॥
भवतव्यह जो दुज लषै। घरी दीह पल मास ॥
हृदय क्रोध ज्यों द्रिग लषै। त्यों लष्यौ कैमास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारि सुमंत तिहि। सरमय[2] मप्पिय बांह ॥
मंडि सु अंगुल विगुलह। द्रव्य निरत्तिय ताह ॥ छं० ॥ ३७६ ॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धन अरिष्ट न्टप जोइ ॥
सोइ पूजा क्रत चिच पति। तिन पर वज्जन होय ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

(१) मो०-छह। (२) मो०-सरमं।

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों के दूर करके नागैार बन के धन को पावैंगे।

पहिलै अष्षिय चंद बर। कहिय व्यास जग जोति॥
बीर सघन नागैार धन। * लभ अरिष्ट प्रथु होत॥ छं०॥ ३७८॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं।

कवित्त॥ पुच्छि राजा गुर सिंघ। सु गुरु देवग्गि सत्ति पति॥
धन अरिष्ट गुन होइ। तास मेठन्न रचैा मति॥
सोइ सुभ काज सु राज। सुजस संग्रहैा सक्र भति॥
सुर सुकाज सुद्धरै। अप्प उद्धरत कज्ज गति॥
बुल्लिय सु राज सम चित्त पति। तुम कारन पुज्जौ सुग्रह॥
आरिष्ट सु गुन दूरी करन। या मंगल कज्जै सुग्रह॥ छं०॥ ३७९॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कैान है।

गाथा॥ बुल्लिय भट्ट सु चंदं। हो राजन लच्छि कढ्ढिज्जै॥
ज्यों बंध्यौ निरमांन। मेटन कवन सोइ बिधि पत्तं॥ छं०॥ ३८०॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो।

दूहा॥ थांन निरष्षिय राज बदि। अच्छिर द्रव्य सु अच्छ॥
सुबर सूर सामंत मिलि। निसि सथ रष्षा अच्छ॥ छं०॥ ३८१॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्त्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास्य ने पढ़ा।

कवित्त॥ सथ्थ तथ्थ निसि रष्षि। दीन वासन ग्रह थानह॥
अबर सब्ब सामंत। कीन पारस विस्रामह॥

* मो०-प्रति में "लभहिं अरिष्टं होत" पाठ है।

रैनि मध्य विन चंद । जगे सामंत स्वांमि तँह ॥
नींद सयन हुअ रुध्ध । षनिय सम द्रव्य राज थह ॥
षोदंत पुरष दुक्कह प्रगट । सिलह धत्त सत्तह सुमय ॥
नहि सकय अंक लिष्षौ सुपर । बंचि राज कैमास तय ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा ॥ सुनो सूर सामंत सब । सु हृदय सकल[1] रजान ॥
जो न हसै मुहि बवर[1] कोइ । तौ दिष्षौ पाषान ॥ छं० ॥ ३८३ ॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे ।

न्याय नांम कैमास तुझ । दुज दीनौ सुबाइ ॥
ज्यों बेली फल भारतें । न्याइन मैं सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयौ समय इमरत्तरी । ज्यों वय संधि सुबाल ॥
मध्य मुठ्ठि कंमान की । रही रत्ति तिन ताल ॥ छं० ॥ ३८५ ॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे ।

तब दिष्षो वह थांन तिन । सस्त्र अनी छिति भंजि ॥
अप सु दिष्षो चव सुवल । रहे दूरि सब भज्जि ॥ छं० ॥ ३८६ ॥

विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीरज ने असंख्य धन पाया ।

साक सुविक्रम इक्क दह । तीसह अट्ठ संपत्त ॥
चहुआनां न्रप सोम सुअ । लभ्भि वित्त अनमित्त ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे ।

(१) ए. कृ. को.—सकल ।

अप्प मंच बंध्यौ सु कवि । द्रव्य निरष्यौ जाइ ॥
चिहूं दिसा जौ देखियै । दिष्ट न आवै ठाइ ॥ छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ दिष्यौ जीयड प्रमांन । मध्य राजा रघुवंसिय ॥
वाहन सोसत पुत्त । तात अग्यान न गंसिय ॥
दुष्ट देइ दिन मान । राज अग्या सुन मांनै ॥
सोक अग्गि तन दभ्भक । गयौ सुरलोक निथांनै ॥
रचि मंच जंच पुत्तलि करिय । होम दिष्ट दानव जलिय ॥
चिंतै सु चित्त कविचंद तहं । करयि बात इह हम भलिय ॥ ३८९ ॥

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए ।

गाथा ॥ गृह वरदाइय बत्तं । कहन लग्गि भयं क्रमयं ॥
तुछ अंतर भर सेनं । आए लग्गि ठाइयं राजं ॥ छं० ॥ ३९० ॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो ।

दूहा ॥ यह आए वर राज धर । दिय हुकम्म सिल कट्टि ॥
हुअ हुकम्म राजंन कौ । कढै सिला सिर कट्टि ॥ छं० ॥ ३९१ ॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी ।

कट्टि सीस सिल कढ्ढि करि । दियौ बचन षोदान ॥
तब सु कंपि भुअ धर धरिय । हांक सुनी न्रप कान ॥ छं० ॥ ३९२ ॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब ख़ज़ाने का मुंह खुल गया ।

कवित्त ॥ सस्त्र अनी छिति षनी । सेन सुत्तौ चावदिसि ॥
सपत धात पाषांन । तीस अंगुल दल बल कसि ॥
दादस अंगुल उंच । निठु करि ग्रीवह[1] लाइय ॥
उघरि मुष्ष वर द्रव्य । कही कवि चंद न जाइय ॥

(१) ए० कृ० को०--यावह ।

सिल तरति हलंतल भ्रम्म हलि । द्रव्य परष्षिय मध्य ग्रसि ॥
सामंत सूर द्रुम उच्चरै । भलौ बीर कैमास लसि ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ।

सुनिय वत्त चहुआन । भयौ आचिज्ज सब्बघन ॥
भूमि किति संजुत्त । ग्रहे आवै अभंग धन ॥
पुर सु तिष्य धर मध्य । क्रोध जाजुल्य नैन रत ॥
मुर खंगर विच बंधि । ग्रीव[1] लीनो उछंग तन ॥
षोद्यो भूमि द्वादस सु हथ । हंकि बीर दानव गजिय ॥
कवि चंद दंद मन मच्चि बँध्यौ । चित्त चिंत ब्रह्मंड लगिय ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया ।

छंद भुजंगप्रयात् ॥ प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं । पगप्पत्ति गायं अहप्पत्ति गातं ॥
स्वयं वीर दानव्व हक्यो हकारं । बरं बंध रक्की परक्के प्रहारं ॥ छं० ॥ ३९५ ॥
बरं व्योम ग्रब्बं षहं पत्ति संक्यौ । करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यौ ॥
पयं पाइ उठ्ठे महा रोम[2] झुम्मी । मनों चक्क फेरै कुलालं स भुम्मी ॥
छं० ॥ ३९६ ॥
षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया । दिनं रत्त पीतं षिनं स्याम काया ॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं । षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥
षिनं बाल वृद्धं षिनं वै किसोरं । भयं भीम भीमं षिनं दिव्य गौरं ॥
षिनं मोह माया षिनं दठ्ठ बज्जै । षिनं मोहनी मोह रूपंति सज्जै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥
षिनं मै विडाली षिनं विप्र माया । षिनं मेक रूपं षगं हथ्य धाया ॥
हयं ग्रीव रूपं षिनं मझ्झ दीसै । षिनं गज्जियं सिंघ आहत्त रीसै ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

(१) ए. कृ. को.--ग्राव । (२) मो.--रोस ।

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति को कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले ।

कवित्त ॥ तोरि बीर संकर समुद्द । छंडि गजराज थांन गय ॥
भयौ समुद्द अरिष्ट । ढुंढि लछ्छी न मत्ति चय ॥
सत्त मत्त छुट्टयौ । अप्प अप्पन संभारै ॥
भो अचिज्ज सामंत । व्यास बचनं न बिचारै ॥
कविचंद मंच आरंभ बर । उमा उमा कहि वंचयौ ॥
अप्पियै बचन मुहि मात तुह । तुअ काली कालजचयौ ॥ छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ करि अस्तुति कविचंद बर । अहो मात बरदान ॥
इह माया मैं बहु तन । कढ़ै लच्छि तुअ पान ॥ छं० ॥ ४०१ ॥

देवी की स्तुति ।

छंद बिराज ॥ सुनी देवि बानी । चढ़ी सिंघ रानी ॥
मयं मत्त माया । तुही तूं उपाया ॥ छं० ॥ ४०२ ॥
अरी शुद्ध भव्यं । प्रकत्ती पुरष्यं ॥
निराधार बंधी । निसंधे निसंधी ॥ छं० ॥ ४०३ ॥
चिहूं चक्र षंडी । इकं पाइ मंडी ॥
जपौं तोहि तोही । जगचक्र मोही ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
निसा पत्त मारै । दया वज्ज तारै ॥
तूही मंच मंची । तनं जा पविची ॥ छं० ॥ ४०५ ॥
तुही आसमानं । तुही भूमि थानं ॥
तुही बाग बानी । कला निद्धि रानी ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
कवी चंद चंदं । करै दूरि दंदं ॥
कलं षग्ग धारै । प्रनेता उचारै ॥ छं० ॥ ४०७ ॥
निसा बीर बढ्यौ । इहां आइ ठढ्यौ ॥ छं० ॥ ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया ।

दूहा ॥ मात प्रसंनन गुन गहिर । दियौ हुंकि हुंकार ॥
दियौ बर सु दानव मलन । कियौ देव जयकार ॥ छं० ॥ ४०९ ॥

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ । दानव मारा गया ।

कवित्त ॥ तब प्रथि राज नरिंद । बीर दानव हक्कारिय ॥
सबद दुग्ग संभक्ष्यौ । पच्छ दीनी हुंकारिय ॥
दिषत सथ्थ सब तथ्थ । कथ्थ कोइ बैन न मंडै ॥
भीत सीत भय अंग[1] । रंग[2] रस रोस सु चंडै ॥
अरु नाद प्रान सम अेच तिह । कज्जल कूट समान सुइ ॥
मन चिंत चंद प्रारथ्थनह । जवै देवि डर आन उइ ॥ छं० ॥ ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर । रुक्कि संकिन मग मुक्किन ॥
छिनक मंत निय संत । तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद । मंच दुरगा तब पढ्यौ ॥
करी नवनि कर जोर । जाइ अग्गै भयौ ठढ्ढौ ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष । चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुहित । उचित चंद अप्पन कहिय ॥ छं० ॥४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी ।

दूहा ॥ करि अस्तुति द्रढ चरन गहि । पूछी भइ विगत्ति ॥
जु ककु आदि पुच्छै सहित । कहन सु बीर बिमत्ति ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन ।

कहै बीर कविचंद तुअ । पूब कथा कहुं मंडि ॥
जिन लच्छी धर मुक्कियै । धर रष्षै धन छंडि ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है ।

जुग सु आदि हुअ मंच गुर । चेता जुग हुअ सत्त ॥
द्वापर जुग पूजा प्रसिध । कलि जुग बीरं दत्त ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं ।

(१) ए० कृ० को०-अंग । (२) ए०-सार ।

गाथा ॥ हुअ आनंद सु बीरं । बुल्लिय सु प्रसंन होइ कल बानी ॥
सुनि उतपत्ति सु कव्वी । कहि अब रघुबंस आदि संकेतं ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था ।

कवित्त ॥ *तिहि तजिय सु रघुबंस । पुच मारंत हृह षिज्जि ॥
चित कीनौ चरचित्त । मरन अँग आगम लष्षिज्ज ॥
जो बरजै बहु बार । ध्रंम मानै न भयंकर ॥
सोक अग्नि तिन दभ्भि । प्रान छंडौ रतियंकर[1] ॥
‡ सत बरस राज तय अंत करि । किति ध्रंम संगह यहय ॥
आध्रंम किति ज्यों मंडनह । सो उब्बरि बीरनि रहिय ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा ।

कवित्त ॥ तिहि वाहन बल सूर । धरम रष्यो रघुबंसी ॥
वेद ध्रंम उथ्थापि । काल कंटक वल कंसी ॥
सज्जि तेज जाजुल्य । जग्य विध्वंसिय सब्बल ॥
कमल समूह अरिष्ट । जीति दगपाल धंम पल ॥
मारग्ग हत्ति उथ्थापि करि । द्विज सराप सब रिष्षि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु बरि । अमर सिंह बल जीति इलि ॥ छं० ॥ ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा ।

मिलि अयास आयास । आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर । धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति चहु पीर ।सुबर मंगल फिरि आइय ॥
विहि अध्रंम जरि तास । मांहि सो कछु न समाइय ॥

---

* मो०—"तिहि तजिय डर रघुबंस पुत्र चारन पुच्छ खिज ।"　　　(१) मो०—यंकर ।

† मो० प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिसमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत्त बरस राजा ने सबल राजंत अंत कर, सब सौरव्य गिह अरि अंत करि कित्त धर्म संग्रह गहिय ।

आकास मध्य ता मध्यतें। फटिक बीर है चीर हुअ॥
ते बीर बहुत दानव अतुल। भये काल थानय रहय॥ छं०॥ ४१८॥

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई।

बहु बित्त बर काल। चंद बरदाइ थान हम॥
को जीवत देष्यो न। मरत देष्यौ न न जे हम॥
मान ग्रभ्भ जम निका। राम तामस करि नच्यौ॥
दूल हद्दै अंगनै। कौन हूचै को रुच्यौ॥
जीरन सु जगा संसार भौ। लच्छि न जीरन भइय इह॥
आयंत जात धंधौ सकल। ग्यानवंत जानहि सु इह॥ छं०॥ ४१९॥

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे।

दूहा॥ तब प्रथिराज नरिंद बर। अह सुमंचि कविचंद॥
इष्ट बत्त बर संमुहै। ज्यो दानव करै न दंद॥ छं०॥ ४२०॥

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया।

छंद चोटक॥ कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन न्रपं। निज मंच बलं कल तच जपं॥
भुज भान सुरं भज भान दिसं। बर इष्टय चंद कविंद कसं॥
॥ छं०॥ ४२१॥
सब देव क्रमं क्रम दीन न्रपं। जय जग्यह जाप करंत तपं॥
घन गंध सुगंधन की हलितं। चलि सीत न तप्प सुभं मरुतं॥
॥ छं०॥ ४२२॥
घन सार म्रगम्मद होम जरैं। तिन उप्पर भौरन भौर परैं॥
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं। करि मंच सुदेव बलिं बलनं॥
॥ छं०॥ ४२३॥

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा।

कवित्त ॥ न्टप पूजी रघुवंस । नाम धृम्माधिराज सुअ ॥
बिय बाहन न्टप सूर । पुत्र आनंद चंद दुअ ॥
सब जित्ते द्रगपाल । माल लिन्नौ अधृंम कलि ॥
राज नीति सब मुक्कि । क्रंम बंध्यौ अक्रंम कलि ॥
अदभूत मरन छिन भंग गति । चित वित्त क्रम अनुसरिय ॥
तप भंग[1] गच्छता जांनि नह । नाम बीर दानव धरिय ॥ छं० ॥ ४२४ ॥

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था । दैवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई ।

दूहा ॥ कहै बीर सुनि चंद तुअ । अप्प कथा कहौं मंडि ॥
जा मुक्की लच्छी धरनि । सो रष्यों उर संडि ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
हौं रष्यों इन भंति करि । अहो चंद बरदाइ ॥
रघुवंसी अति मोह मय । अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
माया काया पुत्तरी । क्रोधवंत हम बीर ॥
रहे छंडि हैं लच्छि यह । विस्मित तुम इह धीर ॥ छं० ॥ ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ क्रोध लोभ जानी न । मोह माया न अलंकन ॥
मोह गीत अरु सीत । जग्गि जा जापय सुक्कृत ॥
बहु बिबेक विमांन । राज बिसतरहि नीति बहु ॥
नव निवर्त धुनि वेद । कर्म छेदन अभेद लहि ॥
सो बहि सांइ सेसब सुलप । जोवन बै विष अलप मन ॥
रघुवंस बृद्ध आवस्त त्रिय । जोग मग्ग सो छंडि[2] तन ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन ।

स्लोक ॥ सत जुगे वंधयो देवो । त्रेतायां सोम जाधयो[3] ॥
द्वापरे वाहनो सूरो । कलिजुगे बीर भीषम ॥ छं० ॥ ४२९ ॥
सतजुगे ब्रह्मपुत्रस्य । त्रेतायां बीर भक्षय[4] ॥
द्वापरे पिचि वंशस्य । कलिजुगे सूद्र ग्रहनिका ॥ छं० ॥ ४३० ॥

(१) मो०-भग । (२) मो०-थंडि ।
(३) मो०-जोधयो । (४) मो०-भषिय ।

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने साम्हने धन निकालने को कहना।

कवित्त ॥ हम सु भयंकर बल्ल। भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बल्ल। कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तों समुद प्रमान। सु तन छिन गिरि दिष्षहि ॥
सुनि न होइ देखी न। तोइ ब्रह्मंड सु लष्षहि ॥
दैवान दुसंकह दुष्ट गति। देव जोग को गढ्ढै ॥
आतम्म मनुच्छन जीव बल्ल। सो देषत धन कढ्ढै ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे।

अरिल्ल ॥ *बुल्लै चंद सुनौ बर बीरं। तुम त्रिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं। कढ्ढै धन तुम बचन सु भूपं ॥ छं० ॥ ४३२ ॥
गाथा ॥ कहै बीर चंदं बर बंदं। हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं। होइ प्रसंन देहु बर बचनं ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर वीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की अज्ञा दी।

दूहा ॥ सुर बानी सुन भट्ट की। मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कढ्ढौ सु धन। प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो।

अरिल्ल ॥ बीर बचंनति चंद प्रकासिय। कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंत्र जप। सब प्रसंन हुअ लहैं धन्न न्रप ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करैं।

कवित्त ॥ तुम समान कोइ आन। पान पन दान मान मन ॥
कवन श्रवन रस राग। दैव परंग अंग नन ॥

* मो०—प्रति में "बुल्लै धन चन्द सुनों बर वीरं" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है।

राजस तामस सत्त । मत्त जोगिंद विराजहि ॥
जीह एक गुन कोटि । रत्ति सो बोलन लाजहि ॥
महदेव[2] सेव तुम चरन रत । पति पवित्र मन मोह धरि ॥
हिंड्यौ सु बीर उत्तर दिसा । दूह पसाव चहुआन करि ॥ छं० ॥ ४३६ ॥

बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो ।

दूहा ॥ कहै बीर कबिचंद सैां । हों सु प्रसन्नैां तोहि ॥
तीन लोक में जुगति बनि । सुभ्भन नाहीं मोहि ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
पंडित बोलि रु जप करौ । होम दान ग्रह मान ॥
महिष मोहि पूजा करौ । तैा कढ्ढौ पाषान ॥ छं० ४३८ ॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया । चन्द का राजा से कहना कि साह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो ।

कवित्त ॥ सुरग गयौ दानव्व । बत्त वल महिष उचारिय ॥
मंत्र तंत्र वंधयैा । बलन अप्पन सम्हारिय ॥
बर गज्जनी नरिंद । बंधि छंड्यौ चहुवानं ॥
धन कढ्ढुन[2] तिन थांन । बज्जि निर्घोष निसानं ॥
आनंद मंत्र कैमास बल । तिथ्थि घरी बल पुच्छिवर ॥
जै जया सिंह आहुट्ट पति । मिलि विभूत कढ्ढौ सुभर ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाय, पंडित ने होम की सामिग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया ।

छंद चोटक ॥ तब बुल्लिय राजन राज गुरं । सु मनो गुर राजत देव दरं ।
बुलि बेद सु पंडित जोतिगयं । जिन बुद्धि सु ब्रह्मय सुद्ध लयं ॥
छं० ॥ ४४० ॥

(१) मो०— सहदेव । (२) मो०—कढ्ढव ।

तिन मंगिय होम प्रकार सयं। रचि जग्य अकार प्रकार मयं॥
मिटई[४] जिह दोष[५] सु होइ जयं। ... ... छं० ॥ ४४१ ॥
कढ़ि लच्छि दिसा क्रमि देवि न्रपं। कवि चंद अनंदिय मंच जपं॥
विधि भांन सुरंभिय भांन दिसं। सब देव क्रमं क्रम होइ रसं॥ छं०॥४४२॥
जय जग्य रु जाप करै बनिता। धन गंध सुगंधन की हनिता॥
सु रची रवनीय सवै अवनी। धज छत्तन बेदिय मंडि फनी॥ छं०॥ ४४३॥
झरि चंदन पाटक पाट करी। अनुराग सु कुंकम होम जरी॥
नव रत्त कला कल सान छुटे। मनुं द्वादस भान इहां प्रगटे॥
छं० ॥ ४४४ ॥
धुनि सुंनिय बेदन होत रुषं। प्रगट्यौ कमलानन तास मुषं॥
छं० ॥ ४४५ ॥

छः प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त॥ कढ्ढि बीर पाषान। राज षट रष्षि प्रधानं॥
चंद भट्ट गुरुराम। कन्ह रष्षिग चहुआनं॥
रष्षे अत्ता ताइ। ईस लड्ढौ बर भारी॥
दैव बत्त संजोग। भोग लड्ढौ रन रारी॥
रष्षिजै भीम रघुबंस बल। अरु रष्षै पुंडीर सह॥
अनवत्त अग्य लै स्यांम की। पंच दीह तिन थान रहि[१]॥ छं०॥ ४४६॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देख कर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान। ग्रेह निकस्यौ अचंभम्॥
हेम हीर हिंडोल। हेम पुत्तरी सुरंभम्॥
हेम हथ्थ वाजिंच। न्रत्य पुत्तरि जरि जंचिय॥
इह अचंभ पुत्तरी। जानि सर जीवन मंचिय॥

(१) मो॰-लहि।

आलिंग नयन करि सिथल गति। तिहि दिष्षत मन मयन हकि ॥
आचंभ चंद देखत भयौ। रंभ कि न्रत्यत तार चुकि ॥ छं० ॥ ४४७ ॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य्य करना।

दूहा ॥ सुर उद्योत गुरराज तिहि। पुत्तरि दिष्षि अचंभ ॥
रति पति मन संमुह धरै। घट सु घटिय आरंभ ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

चन्द का कहना कि यह मायारूपी है।

कहै चंद गुर राज सुनि। यह माया बल रूप ॥
न करि मोह कर गहि सु दुज। म्रर्किं[1] बहोरिय नूप ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है?

राज गुरू कहि चंद सों। हो कविराज विचारि ॥
कोन रूप अवतार किय। क्यों लच्छिय पर नारि ॥ छं० ॥ ४५० ॥

चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा।

कवित्त ॥ तत सु चंद बर दाइ। राज गुरु बचन अप्प हर ॥
छिन इक धरौ विलंब। कहों बर बीर पुच्छि नर ॥
करि अस्तुति कवि बानि। बीर देवाधि देव सुनि ॥
हम मनुष्य मय मोह। तास नहिं लहै अंत पुनि[2] ॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ। कोन रूप इह पुत्तरिय ॥
रह लच्छि थान सुर केम तत[3]। कौन काज बर सुद्धरिय ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है।

गाथा ॥ सुर बांनीयं चंदं। सुप्रसन्नं देव मय कब्बी ॥
इह तेजं रिधि रांनी। संपेषे सु चंद गुरु कब्बी ॥ छं० ॥ ४५२ ॥

यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटके भोग

(१) मो०--मुरछि। (२) मो०--फुनि।
(३) मो०--तन।

सकते हो। यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा।

कवित्त ॥ इह सु छत्य बल रूप। देव देखहु सु मोह मन ॥
माया कोश सु लच्छि। अनुरुरै सु लच्छि रत ॥
इह लच्छी बर रूप। तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
हम वचंन इह रिद्धि। तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥
भोगवन काज संभरि सुपहु[1]। इह बिधिना अप कर गढ़िय[2] ॥
सुनि चंद वचन आनंद हुअ। राज गुरू संसय मिटिय ॥ छं० ॥ ४५३ ॥

इस हिँडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे।

दूहा ॥ हिंडोलौ बर हेम करि। सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसंन होइ रष्षियौ। पूजन करि गुर राज ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
षिन धरि माया अप्प दुरि। गए सु अंमर देव ॥
फिरि कढ्ढन लग्गे सु द्रव। लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरँग का देखना।

कवित्त ॥ कलस बंक चंवक्क। लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु हीर। रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग। कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुद्दर कलस पाषान। मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय। अह कुबेर करि लष्ययौ[3] ॥
गुरराज राम भट्टह सहित। फिरि सुरंग सब दिष्षयौ ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना।

कवित्त ॥ ता पच्छैं कवि चंद। राज गुर संमुह दिष्यौ ॥

(१) मो०—सपहु।
(२) ए० कृ० को०—घटिय।
(३) मो०—लिष्ययौ।

ब्रह्म थांन शिव थान । थान पति नाक विसष्यौ ॥
नवति बीर अरु जोग । सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ ॥
च्यारि षंग लच्छी प्रमान । धूम द्वादस अँग दिट्ठा ॥
सा अंग बाल पुत्तलि अचँभ । छाइ भाइ विभ्रम बद्दै ॥
लावंनि चिंत उत्तर रहति । बंक कटाछन चित्त है ॥ छं० ॥ ४५७ ॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना । कुछ देर में सँभल कर उठना ।

कवित्त ॥ मुच्छि पत्र्यौ कवि चंद । मुच्छि दुजराज पत्र्यौ कल ॥
नाच भंग तन भंग । अंष झल मलिय नैन जल ॥
उष्ट कंप तन स्वेद । भेद बल बिन [1]कवि किन्नौ ॥
चढ़िय अंग पिंडुरिय । गात सोभत जल भिन्नौ ॥
सिथल चरन गति भंग है । वै विलास अभिलाष गति ॥
जग्गेव मुच्छि दुजराज सब । देव एव चिच्चं सुभति ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ।

दूहा ॥ मुच्छि उठ्यौ गुर राज तब । पुच्छ्यौ संभरि बार ।
जु कछु सुवर अज्ञा न्रपति । धन निकस्यौ अप्पार ॥ छं० ॥ ४५९ ॥

धन के कलश आदि का वर्णन । रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना ।

कवित्त ॥ सत्त[2] कलस चंवक्रिय । सत्त[3] अध मंडि रजक्किय ॥
हेम कलस सत पंच । कलस पाषान सतक्किय ॥
सत्त अट्ठ बाजिच । सहस अष षग्ग प्रमानं ॥
हेम हीर हिंडोल । एक आचंभ सु थानं ॥
जान्यो न देव देवाधि गति । दैव जोग सिंहासनह ॥
चिचंग राव रावर समर । सम सुराज प्रथु आसनह ॥ छं० ॥ ४६० ॥

(१) ए० कृ० को०–कंठ ।
(२) ए० कृ० को०–सित्त । (३) ए० कृ० को०–सित ।

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए।

एक सुदिन संध्या समय। विंझासनि के थान ॥
एक अचंभे देखियै। जो आवै चहुआन ॥ छं० ॥ ४६१ ॥
उभय राज बर वत्त करि। चले सुथानक देव ॥
निकट देखि देवी सुभट। गए सिंघ बर सेव ॥ छं० ॥ ४६२ ॥
आए न्रप चिचंग पति। अरु संभरी नरिंद ॥
तब लगि राम सु विप्र ने। करिय अचिज्ज सु चंद ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन।

छंद भुजंगी। सम्मं चक्कियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं सम्मं सूर नदं ॥
घनं सध्य मध्यं दोऊ बीर राजं। तिनं देषतें वामता काम लाजं ॥ छं० ॥ ४६४ ॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लग्गि गेनं। मनों चंद बीयं सियं[1] कीय हेनं ॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की। दोऊ भ्रंम षंडे जमं डंड चक्की ॥ छं० ॥४६५॥
दोऊ रत्त[2] माया ननं अग्ग लग्गै। मनों कंज[3] पत्तं जलं भिंटि भग्गै ॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं। जिनै सोभियं कंठ रष हिंदु लाजं ॥ छं० ॥ ४६६ ॥

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त। वेद मंत्र दुज राम। उभय कारन क्रित किन्नौ ॥
समर समरसन कीन। राज उनहार सुलिन्नौ ॥
दस महिष्प बल भंजि। चंद मंचं प्रारंभे ॥
न्रप आज्ञा नन दीन्। सस्त्र मंगै प्रारंभे ॥
आरंभ मंत्र चवसट्ठि जगि। है हुंकारव सद्द हुअ ॥
गत दंद चंद चंदाननहु। मात प्रसंनन मत्त जुअ ॥ छं० ॥ ४६७ ॥

(१) ए.—सियंकी अ। (२) ए.—दत्त।
(३) ए. कृ. को.—कंप। (४) मो.—मगं।

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया ।

दूहा ॥ सिंघासन प्रिथिराज ले । मात वरंनन कीन ॥
मात प्रसन चहुआन कौं । जै हुंकारव दीन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

देवी पृथ्वीराज को आशिर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गईं ।

कवित्त । हुअ प्रसाद चवसट्ठि । हथ्थ सिंघासन अप्पिय ॥
बल अप्पौ प्रथिराज । कित्ति कलसां लगि थप्पिय ॥
बिय सपत्त लभ्भै न । पुत्त लभ्भै सु थान तुअ ॥
मन सु बंस जय लभै । सज्ज अनुकूल चित्त जुअ ॥
पूजनह थान रविवार कहि । आदिष्ट मात अंतर भइय ॥
सुभ लच्छि सुभग्गह आइ तँह । वर सुहेम हत्थां दइय ॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी । रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है । पाटन के यादव राजा की कुवँरि ससिव्रता की सगाई का बिचार ॥

कवित्त । मँगि सिंघासन राज । लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिंद । अग्गैं धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आहुट्ठ । राज दिख्खिय दिस आइय ॥
वर पट्टन जहां नरिंद । लिखि दूत पठाइय ॥
ओतान राग चहुआन हुअ । कथा जंपि ससिवृत्त किय ॥
पावस प्रमान कहिय बिकट । सुबर राज यों मत्त किय ॥ छं० ॥ ४७० ॥

गाथा । सिंघासने सुरेसं । अह सु लच्छि सा स्वयं अप्पियं ॥
सो अग्गै वर सिंघं । मुक्के राज परिकरं सब्बं ॥ छं० ॥ ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इंकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो ।

कवित्त ॥ रंजि राज दष्षिन गिरेस । राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद । कहा गुन कहै सु भल्लिय ॥

हम सु तुम्म सगपंन[1] । जानि आए तुम सध्यं ॥
तुम छडुए छडुआंन । मुष्ष कढ्ढौ सु अरध्यं ॥
तुम कहिय बत्त अब जो हमैं । तुम समान नहिं प्रीति भति ॥
उच्चरौ बचन तुम राज बर । सो हम छहय सुमत्ति गत्ति ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा ॥ अति क्रोधित रावर समर । जब दिष्षौ प्रथिराज ॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय । लेहु लच्छि धरि साज ॥ ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए । रावल का आग्रह करना ।

कवित्त ॥ तबहि जुग्गबर समर । राज राजन प्रति बुल्लिय ॥
हम सु सीष संभवैं । चलैं चित्रकोट सु थल्लिय ॥
तब राजन उच्चरिय । रहो दस दिन सब मिल्लिय ॥
रमें सरस आषेट । करैं क्रीला धर दिल्लिय ॥
तब कहत राज आहुठपति । अहो राज राजंन[2] गुर ॥
हम चलें राज काजंग गुर । भर सु सब्ब समनेह उर ॥ छं० ॥ ४७४ ॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने बिदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले ।

दूहा ॥ भरे सु सकल सनेह करि । रावर मंगिय सीष ॥
तब सुराज राजंन गुर । उठि मिल्लि सज्जन दीष ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा ऐसा ही स्नेह बनाए रहिएगा ।

देत सीष प्रथिराज न्रप । इह बुल्लिय गुर राज ॥
होत सगप्पन ग्रेह रह । रष्षन रहियौ[3] काज ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

(१) ए. कृ. को.—सगपन । (२) मो.—राजंग ।
(३) मो.—रहिऊं

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है ।

नृप सन रावर उच्चरिय । तुम सम नेह न कोइ ॥
जीव एक पंजर उभय । कहन लोइ है दोइ ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

रावल समर सिंह गद्गद हो बिदा हुए, और अपने देश की ओर चले ।

तब सनेह नृप नैन भरि । अंसुअ आप सु राज ॥
समर सिंघ चित्तौर कौं । दिय अग्या सु समाज ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

रावल को बिदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेट भेजा ।

जब रावर सीषह सु करि । चढ़ि दष्षिन गिर राह ॥
तब सुराज प्रथिराज गुर । बोलि चंद बिरदाह ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

कवित्त ॥ तबहि राज प्रथिराज । बोलि कैमास चंद बर ॥
दिय अग्या बर सेव । कीए आएस राव गुर ॥
*जुगम सिंघ बर क्रमिय । लेहु परिकर करि वेसं ॥
गय सुपंच मद गंध । सच हय साज सुरेसं ॥
लै चले चंद बर दाइ बर । जहां राज रावर सुभर ॥
लैषरी बसत अन्नेक सुर । करि अस्तुति सुष कोटि तर[1] ॥ छं० ॥ ४८० ॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया ॥

दूहा । राजन बर रष्षिय प्रसन । करिय सब्ब सामंत ॥
माल मुत्ति दिय चंद कवि । चल्यौ चित्रगढ़ भंति ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना ।

* मो०—"मग सिंह जिहि क्रमिय" ।

(१) मो०—नर ।

अरिल्ल ॥ फिरि आये कैमास चंद बर । मिले राज तहं पूर्न प्रेम भर ॥
ढिल्ली पुर आवत बहुआनंद । अति तोरन उच्छव संमानंद ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया । राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला ।

कवित्त ॥ बंचि राज कैमास । सोई अंतर सिल लीनह ॥
द्रव्य नाम उभरीय । भरिय कर बासे तीनह ॥
एकादस गज पूर । पंथ संभरि पुर थानह ॥
वासुर सत संक्रमे । भरिय भंडार बिधानह ॥
संचरिय राज मृगया बहुरि । पुर षट्टू पारस रवन ॥
कर पच हुढ़ जहां[1] सुपह । आइ राज भेंट्या सुजन ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया । सरदारों का बांट का वर्णन ।

बंटि दियौ प्रथिराज । भाग किन्ने सह अब्बर ॥
एक भाग कैमास । तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड । भाग अट्ठौ बर कन्हं ॥
द्वादस भाग नरिंद । दियौ परिगह सब धंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट आवै नहीं । चिकट कुंभ ज्यों जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पचह कमल । भिदै न मति ह्वीवै उछिद ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

दूहा ॥ एक भाग दिय विप्र कर । करै राज सुष कंद ॥
धन लभ्भिय प्रथिराज धन । कथी कथ्य कवि चंद ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया । बड़ा आनन्द उत्सव हुआ ।

कवित्त ॥ अति तोरन उक्कवह । आइ ढिल्लीय निकट बर ॥
रैन कुमार सु आइ । सुबर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त दून असवार । कहत नामी अग्गै भर ॥
छंडि तुरिय पय लग्गि । दीय सा चढ़न सीष गुर ॥

(१) मो०– जटाजूट बह ।

बंढै व चढ़ै तुरियं समथ। आए नंद उछाह घर॥
जित्ते मलेच्छ लभ्यौ सुधन। अति तोरन उच्छव नयर॥ छं०॥ ४८६॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए।

गाथा॥ अति तोरन उच्छाहं। आए जेठ सुदि त्रयोदसियं॥
सुभ जोगं रविवारं। गहनं साह बढ्ढि जस भारं॥ छं०॥ ४८७॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया।

दूहा॥ ग्रहन साहि जस बढ़िय धर। आइ धवल मधि साल॥
त्रिया सकल आई सु तहँ। मुजरा करन सु हाल॥ छं०॥ ४८८॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं।

गाथा॥ दाहिम्मी प्रथु भट्टी। पुंडीरी आइ नृप ढिग्गं॥
करि न्योछावरि सकलं। नृप दी सीष गइय ग्रह अप्पं॥ छं०॥ ४८९॥

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सवेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा।

राजा धवल संपत्तं। गये ग्रह रति तथ्थ पुंडीरं॥
करि रस अनंग क्रीडा। बढ़िय सुवेलि सुमन मन मथी॥ छं०॥ ४९०॥
सुमन वेलि मन मथ्थी। करि क्रीडा हुअ वर प्रातं॥
अंतर साल वयट्ठं। मन विचार साहयं दंडं॥ छं॥ ४९१॥

बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा॥

कवित्त॥ दंड सुबर पतिसाह। दीय हय बंटि राज बर॥
बीस सुभर हय कन्ह। बीस हय उंचह निड्डुर॥
बीस दूअ रघुबंस। बीस उभ्भय दाहिम्मं॥
अत्तताइ अल्हन पहाड़। बीस हय जैत गुरंमं॥
औरह सु सकल भर बीस अध। बंटि बंटि दिय सबन नर॥
रष्पन सु गल्ह राजंद गुर। जस रष्यौ निज वर सुकर॥ छं०॥ ४९२॥

गाथा ॥ जस रष्षौ कर अप्पं । मुत्तिय माल लालयं द्रव्वं ॥
आरोही पुर दत्तं । कवि दीनौ सु अवर कर साहं ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

दूहा ॥ सकल दंड पतिसाह कौ । बंटि दियौ सब सूर ॥
तपत राज अति पच्चिवर । ग्रीषम विन्निय पूर ॥ छं० ॥ ४९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्टू बन मध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चौबीसमों प्रस्तावः ॥ २४ ॥



अथ शशिव्रतावर्णनं नाम प्रस्ताव।

(पचीसवां समय।)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना।

दूहा ॥ आदि कथा शशिवृत्त की। कहत अब्ब संमूल ॥
दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि। कह्नि लच्छि उन मूल ॥ छं० ॥ १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम ऋतु क्रीड़त[1] सुराजन। षिति उकलंत षेह नभ साजन ॥
विषम बायु तपित[2] तनुभाजन। लग्गि सीत सम्मीर सुकाजन[3] ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ लग्गि सीत कल मंद। नीर निकटं सु रजत घट[4] ॥
अमित सुरंग सुर संध। तनह उवटंत रजति पट ॥
मलय चंद मल्लिका। धाम धारा अह सुब्बर ॥
रंजि बिपन बाटिका। तीस द्रुम छांह रजति तरु ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अति। कवि केसर घनसार घति ॥
क्रीलंत राज ग्रीषम सुरिति। आगम पावस भइय भति ॥ छं० ॥ ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना।

गाथा ॥ ग्रीषम वित्तिय कालं। आगम पावस दीह मच्छेनं ॥
दिसि दष्षिन वर देशं। नाइक[5] आइ चंद्रोदयं नामे ॥ छं० ॥ ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा।

सभा विराजित राजं। तहां नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलत मान दिय राजं। पुच्छिय विगति देस रह मम्मं[6] ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए०—कृ०—को०—क्रीलंत। (२) ए०—कृ०—को०—तपि तम तन।
(३) मो०—राजन। (४) मो०—पट।
(५) ए०—कृ०—को०—ताइक। (६) ए०—कृ०—को०—मम्मं।

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ इह संभरि न्रप उच्चरिय । अहो सु नट गुरराइ ॥
गुन उचार[1] कछु किज्जियै । ज्यौं दिज्जै दानाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं ।

गाथा ॥ नाटक प्रमान कथयं[2] । सुनि राजन धी ढिल्लीसं ॥
पाचं घर के सब्वं । गुन सुनियै चितयं लायं ॥ छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ अवसर नत्त प्रगट्ट किय । जंच मृदंग सुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर । करन नृत्य बहु गान ॥ छं० ॥ ८ ॥

देवी की बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ।

आदि सकल अस्तुति करिय । पहुपंजलि परिदेव ॥
कहि अंगल[3] धरनी निरषि । करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ॥ ९ ॥
चंद चारु मागध सुअह[4] । गीत प्रबंध प्रसन्न[5] ॥
उघटि चिघटि सब प्रमुष दै । देषि विगति सुर भिन्न[6] ॥ छं० ॥ १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना ।

तब सुनह इम उच्चरिय । हो राजन नर इंद ॥
बहु बिवेक संगीत कल । अष्टह नृत्य सुनंद ॥ छं० ॥ ११ ॥

आठों भेदों के नाम ।

श्लोक ॥ मृदंगी दंडिका ताली । कहली स्रुन घुर्घरी[7] ॥
नृत्य गीत प्रबंधं च । अष्टांगो[8] नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना ।

दूहा ॥ कहिय नृपति अष्टंग सुधि । रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन्न दिय । फिरि पुच्छिय थह न्यान ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए.–उचार । (२) मो–कथियं ।
(३) मो.–धरती । (४) मो.–सुरुअ । (५) मो.–प्रमान । (६) मो.–तान ।
(७) मो. घर्घरी । (८) ए.–कृ.–को.–अष्टागो ।

राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना।

तब राजन हों उच्चरिय। अहो सु नटवर राय ॥
कोन थान ठौरह सु तुम। कहो सु गुन प्रति भाय ॥ छं० ॥ १४ ॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई।

तब नट नाम करि उच्चरिय। सुनहु राज दिल्लीस ॥
हो। बंश जद्दव नृपति। देव गिरी बसि जीस ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ देवगिरी जद्दव नरेश। अति प्रबल तपत तप ॥
संगीतह बर कला। लहन शुभ ग्यान सुभत वय ॥
ग्यान[1] तान[2] गुन लहन। भेद सुन ग्यान विचारं ॥
तास राज संभीर। रहों नट विद्य उचारं।
ता ग्रह सु पाव अनेक गुन। रहैं सु तहं निशि दीह पर ॥
राजंत राज जद्दव नृपति। ज्यों सुदेव[3] पति नाक गुर ॥ छं० ॥ १६ ॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया।

गाथा ॥ तिहि ग्रह नट बर रूपं। आए संगेत सीष कुरषेतं ॥
तुम गुन अति संभरियं[4]। आइन हूआ एन दिल्लि मझेनं ॥ छं० ॥ १७ ॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का विवाह किसके साथ निश्चय हुआ है।

कहि संभरि नृप राजं। हो नट राइ सुनहु बर बचनं ॥
किहि ब्याहन बर संगं। को राजन कवन घर मझ्झं ॥ छं० ॥ १८ ॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है।

पर धर उजेन मझ्झं। करि पामरि सगप्पनं राजं ॥
शुभ अंत करि कादं। ब्याहन मन कीन राइ कमधज्जं* ॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) मो०—मान। (२) मो०—मान।
(३) ए०—कृ०—को०—इंद। (४) ए०—कृ०—को०—संभरिय।
* ब्याहन कीन कमधज्जं।

दूहा ॥ कै सगपन जद्दव नृपति। करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुत्र अनूप है। तिन गुन ब्याहन कज्ज ॥ छं० ॥ २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि। सगपन राजहोरं[1] ॥
पंम्मारी दिय पुत्र पर। तिहि पुत्री बर ठौरं ॥ छं० ॥ २१ ॥
पुत्री बरी उजेन दिसि। पहिलै पंग स पुत्त ॥
अवन गवन पुर आदि दै। पढि जद्दव ग्रह तत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है। पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया।

गाथा ॥ पठवन किय दुज जहां। पुत्री दीय पुरो[2] उज्जेनं ॥
तिहि पुत्री नारत्तं। व्याही पंग पुत्त अज वूढं ॥ छं० ॥ २३ ॥

नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना।

दूहा ॥ सुनि राजन क्यों करि कहों। जो शशिव्रत्ता रूप ॥
जीह एक ब्रन्नत न बनि। तिन गुन ब्रन्न अनूप ॥ छं० ॥ २४ ॥

सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना।

तब राजन ऊठी सभा। फिरि दीनी सब सीष ॥
अंदर नट बुलाइ कैं। पुछ्छिय विगति बिसीष[3] ॥ छं० ॥ २५ ॥

नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना।

कवित्त ॥ कहै सु नट राजिंद। ब्रह्म आमोदक्क दिन ॥
चंद कला मुष कंज। लच्छि सहजंह सरूपतन ॥
नैंन सु मृग शुक नास। अधर बर बिंब पक्क मनि ॥
कंठ कपोत मृनाल भुज्ज। नारंगि उरज तनि ॥
कटि लंक सिंह युग जंघ रंभ। चलत हंस गति गयंद लजि ॥
सा नृपति काज त्रभिय तरुनि। मनों मेनिका रूप सजि ॥ छं० ॥ २६ ॥
दोहा ॥ कह गुन बरनौं राज कहि। कुंअरी जद्दव नाथ ॥
विधना रचि पचि कर करी। मनुं मेंनिका समाथ ॥ छं० ॥ २७ ॥

(१) मो.–रजहोरं। (२) ए.–कृ.–को.–पुरि।
(३) ए.–कृ.–को.–विसेष।

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो ।

अरिल्ल ॥ सुनि राजन्न लगो कोनानं । लग्गे मीन केतु कन बानं ॥
कहै नट सौं राजंन बर प्रेमं । मच्च सगपन्न मा करहि सुक्रेमं ॥ छं० ॥ २८ ॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा । मुझ से इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा ।

दूहा ॥ पुनि नट बर सौं उच्चरिय । फिरि कहिहौं राजिंद ॥
जौ मुझ कीयौ होइ है । तौ करि हौं नृप इंद ॥ छं० ॥ २९ ॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना ।

तब राजन नट सीष दिय । गज सु एक है पंच ॥
चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति । परसन हरि चरनंच ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता के ओर लगा रहा ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रिति बित्ती सुभ राजं । पावस आगम भई समाजं ॥
सुनि नट बैन अपुब्ब आहुब बथ । मन धीरज्ज हंस आनम पथ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना ।

दूहा ॥ हर सेवा राजन करत । क्रमिय मास जब संग ॥
अद्ध निसा शिव आइ कै । दिय सु बचन मन रंग ॥ छं० ॥ ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना ।

जो कामन मन सहई । हो पूरे हर ईस ॥
तन चिंता करि राज गुर । आयौ गुन तुछ दीस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना ।

कवित्त ॥ हुअ प्रभात जब राज । सुपन मन मद्धि राज रस ॥
मदन होइ शिव शिवा । काम सीझै सु इंद जस ॥

मन जाने वर अप्प । लगि ओमान राज उर ॥
चिच मदावनगैंद[1] । बहुरि उतरैन अवर पर ॥
तन धीर करत पावस सुरिनि । छिन छिन जुग जुग जात जिय ॥
बर मोर सोर दद्दुर बचन । लगि नपन तन असम किय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता से विरह में व्याकुल होना ।

कवित्त ॥ मोर सोर चिहुं ओर । घटा आसाढ़ बंधि नभ ॥
बच दादुर झिंगुरन । रटत चातिग[2] रंजन सुभ ॥
नील बरन बसुमतिय । पहिर आभ्रंन अलंकिय ॥
चंद बधू सिर व्यंज[3] । धरे बसुमत्ति सु रज्जिय ॥
बरषंत बूंद घन देष सर । नव सुमरै जइन कुंअरि ॥
तन हंस धीर धीरज सुनन । इष फुट्टे मनमथ्थ करि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन ।

छंद पद्धरी ॥ घन घटा बंधि नभ मेघ छाय । दामिंनिय दमकि जामिनिय जाय ॥
बोलंत मोर गिर बर सुहाइ । चातिग्ग रटत चिहुं ओर नाइ ॥ छं० ॥ ३६ ॥
दादुरन सोर दस दिस डराइ । रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ ॥
बिरहिनी दूरि जिन[4] पंथ नाह । तिहि बुंद लगत जनु दैघ जाह ॥ छं० ॥ ३७ ॥
दंपती करै क्रीला उमंग[5] । मनमथ्थ रहसि बढि अंग अंग ॥
बिरहनी रटत पप्पीह[6] नार । प्रफुलित्त लता लहरिय बार ॥ छं० ॥ ३८ ॥
घन हच्छ लता कलिपुस्फ[7] मंत । रुब रंग रंग पावसह कंत ॥
उम्भरिय चलिय सलिता संपूर । चलि मिलिय गंग सायरह नूर ॥ छं० ॥ ३९ ॥
रति करन कीलनह[8] राज थाह । तन हंस धीर तन सुष्प नाह ॥
नहि सजे सुष्प जबि बिषन बाह । तन होन नपनि शीतन सुहाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
तन प्रीत सुहय गय नारि मांहि । अनिताप जंत तन रोन मांहि ॥
तन नीदसुष्प[9] तन राज अंग । सुगेतु घन मन मथ्थ पंग ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

१ ए० कृ० को०—गयंद, गयँद । २ मो०—चातुक । ३ मो०—व्यंद ।
४ ए०—तिन । ५ मो०—कृ०—उतंग । ६ शा०—बप्पीह ।
७ ए०—पुज्ज । ८ ए० कृ०—कील । ९ मो०—दुषं ।

भेद्दैव अंग अंग रोन राइ। जांनै न कोइ बर अवर भाइ॥
यों करत गई पावसी विषम्म। किय सुमन[1] दसा दल्लन बरंम॥ छं०॥४२॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन।

दूहा॥ गत पावस आगम शरद। गई गुडल नभ मान॥
ज्यों सद् गुरु मिलि अंदरद। [2]मिलि प्रगट्ट गुरु ग्यान॥ छं०॥ ४३॥

शरदागमन-शरद वर्णन।

सुक्कि पंक उत्तरि सरित। गय बल्ली[3] कुमिलाइ॥
जलधर बिन यों मेदनी। ज्यों पति हीन त्रियाइ॥ छं०॥ ४४॥

छंद पद्धरी॥ न्रम्मलिय[4] कला उग्गयो सोम। कंदर्प प्रगट उद्दित[5] व्योम॥
सरिता सुनीर आए निवांन। पंगु रन हरै चिय द्रग लजान॥
मल्लिका फूल सुगंध वाई[6]। संजोग कंत रहिं लप्पटाइ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब। जम प्रभा सुभ्भ सुनि राज अंब॥
दैशास पूजि न्रप रजि विवेक[7]। सिर छच चौर राजंत[8] नेक॥
आगम्म शरद रितु चलन साज। आनंद उम्मर उमगे सु राज॥
अति प्रीति सूर सामंत काज। पति नाक सभा हेमंत लाज॥
किय सुमन चलन गिरि दल्लनेस। आनान राग लग्यो असेस॥ छं०॥४५॥

अरिल्ल॥ पावस रितु कीलंत सु राजन। फिरि आइय दिन सरद समाजन॥
करन राज कीला आषेटं। संक्रमि देस मद्धि मन भेटं॥ छं०॥ ४६॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना।

कवित्त॥ सम सिकार कजिराज। सबर चतुरंग सु सज्जिय॥
सघन सूर सामंत। अप्प अप्पन भर गज्जिय॥
रंजि राज प्रथिराज। राज कीलन मन लाइय[4]॥
बर पट्टन जद्दवन। दूत राज पै पठाइय॥

(१) मो०-दिसा। (२) मो०-मिले पगट। (३) मो०-बेली।
(४) मो०-निर्म्मली। (५) मो० कृ० को०-उद्दित सु। (६) ए० कृ० को-बाइ।
(७) ए०-कृ०-को०-विमेक। (८) मो०-राजत अनेक।

आतान राग चहुआन हुअ। कथा जंपि सुचित्त क्रिय ॥
अब कहत कथ विस्तार किय। जो राजन दूतन करिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना।

गाथा ॥ एक दिन अन्तर क्रमियं। राज[1] कीलंत अप्प धर मज्झं ॥
एक सुदिन राजानं। कीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ कील राज आषेट चढ़ि। अन्तर दिन हुअ आदि ॥
मिलिन जोग विधि लिषियबर। करि सनद्द चढ़ि सादि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना।

अरिल्ल ॥ कीलन राज[2] चढ़े आषेटं। माघ बद्दि दुतिया दिन भेटं ॥
दिन सुभवार सु मंगल लहियं। करन सिकार अप्प चढ़ि चलियं ॥ छं० ॥ ५० ॥

राजा की धूमधाम का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज। साज आषेट लिए सजि ॥
सथ्थ सुभट सामंत। संग सेना सु तुच्छ रजि ॥
जाम देव का कन्ह। अत्त ताई निडुर गुर ॥
मंति मंची कैमास। राव चामंड जुझ्झ[3] भर ॥
परमार सिंघ सूरन समथ। रघुबंसी राजन सुबर ॥
इतनें सहित भर सैंन चलि। उडी रेनु आयास पर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

बन में जानवरों का वर्णन।

बागुर जाल बयल्ल। हिरन चीते सु स्वांन गन ॥
कालबून, म्रग, बिहंग। विवाह तहीय चलत बन ॥
सर नावक बंदूक। हरित जन बसन विरज्जिय ॥
गै जिमि गिरि करि अग्ग। अप्प बन संपति सज्जिय ॥
है भारि भईय कांनन सकल। मग अमग्ग दल संचरिय ॥
षिल्लन सिकार चढ्ढिय न्रपति। प्रथियराज मद्धि संभरिय ॥ छं० ॥ ५२ ॥

शिकार का वर्णन।

(१) मो०--दक्षणेश। (२) मो०--भाइय। (३) मो०--युद्दान।

इन[1] सु साज मृगया सु। बाज उत्तंग अंग बर॥
निरष निमष संचरहि। निमित्र जोजन जोजन सर॥
छित्त लिये जिम पवन। वेग जग्गै जिम अग्गिय॥
घट कुहै जिम सद्द। उरह चक्रबाक विसग्गिय[2]॥
यों बंधि राज आषेट बर। वपु सुव सुभ्र दिष्षे सु चष॥
धह मंगि अंषि मंगल पवन। सवै होइ जोजन समष॥ छं०॥ ५३॥
घुर घुरंत घन स्वांन। अप्प पंजर तीतर बर॥
मच्छ जाल बग्गुरि हि। फंद फैदैन सुबर धर॥
धनक बान हक्कां सु। सिंघ पंजर जल रष्षन॥
षाट षैर विसमिल्ल। नार नारक्क चिच पन॥
सर हद्द सुरस लग्गै रमत। भुल्लै साथ श्री नाथ पति॥
कविचंद विरद बंनन करै। श्रवन सुनै दिल्लिय न्रपति॥ छं०॥ ५४॥

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना।

गाथा॥ जित जित कुहे पंषी। थावर जलह जंगमं जोती॥
ससि पालं हरि[3] पालं[4]। भूपालं काल प्रति पालं॥ छं०॥ ५५॥

भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना।

भालक आइ सहीयं। बाराहं कोस ऋहुयं पंचं॥
आतुर षरि राजानं। अति अदभुत रूप शूकरयं॥ छं०॥ ५६॥

राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना।

दूहा॥ गये सुवन राजन सु[illegible]र। करन घात सु प्रपंच॥
कोलाहल सुनि सूकरह। उठि चय कोस पुलंच॥ छं०॥ ५७॥
तिहि को दर इक प्रबल षह। षेदि सुहै डर तार॥
फिरि अष्षो राजन्न प्रति। व्यौरो बोल उचार॥ छं०॥ ५८॥

(१) क्रु०-राजन। (२) ए०-क्रु०-को०-राजन। (३) ए०-क्रुक्रु।
(१) ए०-हन। (२) मो०-विक्रस्सिय।
(१) मो०-हर। (२) मो०-माल।

सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक वधिक का आकर सूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना।

और सकल सामंत भर। आइ संपते तथ्य ॥
अरज राज प्रथिराज सम। कही बधिक इह[1] कथ्य ॥ छं० ॥ ५९ ॥
षय सु दिवस राजन क्रमिय। तीस कोस चै अग्ग ॥
जंगल धरैं वेद चय। तिन नालूर सुरंग ॥ छं० ॥ ६० ॥
बधिक कही इह राजप्रति। घात करै सुभ संच ॥
दल सब्बह तजि चल्लियै। तुबक गही तुर तंच ॥ छं० ॥ ६१ ॥

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना।

तब राजन्न तुरंग तजि। गहि दिढ़ तुबक सुकंध ॥
कोद्दर मध्य बराह बर। करिय चोट सुर संध ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना।

कवित्त ॥ हनिग राज बाराह। अप्प बधिक इन्नाम दिय ॥
सुभर सकल सामंत। रंजि राजन्न[2] सुभंतिय ॥
बारी को सहुआन। तास धरा इह सुब्बर ॥
तहं विराम करि राज। अवर सामंत अप्प जुर ॥
जब भई गोठि तथ्थह सुबर। तब परिहार सु सह किय ॥
सामंत सुभर राजंन[3] अर। आहारे बिंजन सुलिय[4] ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना।

दूहा ॥ दिल्ली वैहै ऐगहन। खन्दा * अषेटक राज ॥
चावदिसि सुर जंपई। धन चहुआन समाज ॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) मो० इक। (२) मो०- राजचक्रति। (३) मो०--राजान।
(१) मो० धारौ। (२) मो०--राजान। (३) मो०--लय।
* ए--कृ०--को०--ऐगहन बरन अखेटक राज।

कवित्त ॥ उभय सत्त म्रग मुदित । बंधि फै दैत रहति बर ॥
यों बंधे म्रग बीय । कहै ओपमा चंद बर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यांन बधि मुक्तित आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि डुलावै ॥
आनई लज्ज गुन जस पकरि । आंनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यों आने म्रग बीय गस ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवन बाय पुर ॥
कन्न हढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुच्छै न चित्त जुर ॥
दीप नयन प्रज्जरै । कन्न लंबे कँध डारे ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल गति हारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोसभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पामर रुपाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ॥ ६६ ॥

राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना ।

कवित्त ॥ इक्क समय राजन्न । करन क्रीला धर अप्पं ॥
विपन मध्य संक्रमन । करन आषेट सु तप्पं[१] ॥
ग्रह करि तुपक्क सु राज । म्रग्ग कत्ती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छैं धरि हल्लिय ॥
कर हथ्थ डार हक्कन सुपर । चले राज तुक्क बधिक सथ ॥
लग्गै सुरंग आषेट कौ । क्रम्यौ राज पर भूमि पथ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा ।

पुच्छ कथा शुक कहो । समह गंध्रवी सुप्रेमहि ॥
स्रवन संमि संजोगि । राज समधरी सुनेमहि ॥

(४) उपमा सु ।　　(५) मो॰-सु ।
(१) आखेटक ।

... ... । इम चिंतिय मन मझ्झि ।
कै करो पति जुग्गनि ईसह । ईस पुज्जै सु जग्गीसह ॥
शुक चिति बाल अति लघु सुनत । ततविन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न जद्दव न्रपति । नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ॥ ६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहां जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से ससिव्रता की सगाई का संदेसा देना । एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरंत देवगिरि की ओर चला ।

नाल केर दुज गहिय । द्वार जै चंद गयो बपु ॥
करी षब्बर है जमह । अप्प अंदर बुलाइ न्रप ॥
नाल केर दुज आनि । कह्यो राजन अब धारी ॥
देव सु गिरि न्रिप थान । पुंज ससि वृत्त कुमारी ॥
सो दइय बंध नृप बीर कहु । लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंध्रव कथ । चल्यौ सु दक्खन देव धर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी ।

दूहा ॥ चल्यौ सु दछिन देव गिरि । जहां शशिवृत्त कुमारि ॥
विपन मझ्झि क्रीड़ा करन । समह बाल चितचारि ॥ छं० ॥ ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो । हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूँ ।

कवित्त ॥ हेम हंस तन धरिय । बिपन मझ्झ विश्राम लिय ।
दिष्षि तास शशिव्रत्त । अतिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व । हत्थ लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान । कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चरयौ हंस ससिव्रत्त सम । मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन । तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ॥ ७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई।

कवित्त ॥ कहै बाल सुनि हंस। कवन हम पुब्ब जम्म कह ॥
कवन पत्ति हम लहँहिं। लेष विहार लहो दूह ॥
तबै हंस उच्चस्यौ। सुनहि शशिहत्ता नारी ॥
चित्ररेष अपछरि। सगीन अति रूप धरारी ॥
तिहि गरब इन्द्र सम कलह करि। क्रोध देवबंडी सुरम ॥
दच्छिन नरेस न्रप तान बँधु। पुंज ग्रहै अवतार सुम ॥ छं० ॥ ७२ ॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है।

चौपाई ॥ कहै हंस सुनि बाल बिचारी। पंग बधुर बीर सु पुत्तारी ॥
तिहि तु दई मातु पितु बंधं। सो तुम जोग नहीं बर कंधं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

तेम रहै बर बरष इक्क महि। हय गय अनन भुंभिक्ष हैं समतहि ॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयौ। करि करुना यह इन्द्र पठायौ ॥ छं० ॥ ७४ ॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं ॥

तब उच्चरिय बाल सम तेहं। तुम माता सम पिता सनेहं ॥
मुझ्झ सहाय अवरि को करिहौ। पानि ग्रहन तुम चित अनुहरिहौ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है।

चौपाई ॥ तब बोल्यो दुजराज बिचारं। सुनि ससिव्रत्त कथ्थ इक सारं ॥
दिल्ली वै चहुवान महा भर। सो तुम जोग चिन्तयौ हम बर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया।

सत सामंत सूर बलकारी। तिन सम जुद्ध सु देव बिचारी ॥
जिन गहियौ सर बर गज्जन वै। हय गय मंडि छंडि फुनि हिय वै।
छं० ॥ ७७ ॥

महा बली चालुक्य भीमदेव को जीता है। यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवैंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी।

गुज्जर वै चालुक भीमनर। ते दिन राति डरै जंगल धर ॥
बरन जोग तुम तेह विचारं। सुनि की सुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
तहां तुम पिता क्रपा करि जाउ। दिल्ली वै अनुराग उपाउ ॥
मांस षटह हौं हत्तह मंडौं। ष्युना आवै तौ तन छंडौं ॥ छं० ॥ ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया।

तब उड़ि चल्यौ देह दिस उत्तरि। ढिग ससिव्रत रष्षि निज सुंदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो दुजराजं। सोवन देह नगं नग साजं ॥ छं० ॥ ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना।

कवित्त ॥ बय किसोर प्रथिराज। रम्य हा रम्य प्रकारं ॥
सेत पष्य विय चंद। कला उद्दित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन। हंस दिष्यौ अप अष्षिय ॥
चरन भग्ग दुति होत। हेम पक्की वियलष्षिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर। धाइ न्रपति बर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति दूत कथ। रहसि राज सों सब कहिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ विपन मध्य आचिज्ज इह । दिष्षि राज प्रथिराज ॥

धूत दूत कलधौत तन । हंस सरूप विराज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना ।

संझ सपत्तौ न्रपति पै । दूत सु जद्दव राइ ॥

बर कग्गद न्रप हथ्थ दै । कहि श्रोतान बधाइ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है । इतना कहकर चुप हो जाना ।

कह्यो दूत मन अप्पनै । जो बंनो विधि जोइ ॥

दोषु[1] जानि नन बंन कहि । न्रप श्रोतान न होइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चौपाई ॥ अति सु मनह चिंते परि मांन । मानहु थके सिंध जल वांन ॥

दारुन अप्प एक सोइ जाइ । चिंतौ कहा सु अंनह पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ इह कहि बत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥

मानो उरग छछूंदरी । कंठ लगावहि धाई ॥ छं० ॥ ८६ ॥

गाथा ॥ मुष जंपी मन बत्तं । दूतं जे नवाइ छिर पुछं ॥

बर चहुआन कमानं । किम जद्दों नमों नम नाउं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है ।

दूहा ॥ इह अष्षी चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥

सुनिवेकों ससिव्रत्त गुन । सारदऊ ललचाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ।

राका अरु सूरज्ज विच । उदै अस्त दुहु बेर ॥

बर शशिव्रत्ता सोभई । मनों स्रृङ्गार सुमेर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन ।

इन वै इन रूपह तरुनि । इन गुन आवै मान ॥

सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ९० ॥

(१) मो०—देशु ।

छंद चोटक ॥ बय संधिह बाल प्रमान ब्रनं। कहि चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
बय स्यामऽरु शैशव अंकुरयं। अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
जल सैसव मुद्ध समान भयं। रबि बाल बहिक्रम लै अथयं[1] ॥
बरसै सब जोबन संधि अती। सु मिलें जनु पित्तह बाल जती ॥ छं० ९२ ॥
जुर ही लगि सै सब जुब्बनता*। सुमनों ससि रंतन राज[2] हिता ॥
जु चलै मुरि मारुत अंकुरिता। सु मनों मुरवेस मुरी मुरिता ॥ छं० ॥ ९३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंच अली। गुन जंपि कवित्त सु चंद बली ॥ छं० ९४ ॥

कवित्त ॥ ससिर अंत आवन बसंत। बालह सैसव गम ॥
अलिन पंच कोकिल सुकंठ। सजि गुंड मिलत भ्रम ॥
मुर मारुत मुरि चले। मुरे मुरि बैस प्रमानं ॥
तुरू कों परसिस फुट्टि। आन किस्सोर रँगानं ॥
लीनी न अमि नक स्याम नन। मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न वयन आवन बसन। अग्याता जोवन अरिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

कवित्त ॥ पत्त पुरातन झरिग। पत्त अंकुरिय उट्ठ तुरू ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय। चढ़िय सैसब किसोर कुरू ॥
शीतल[3] मंद सुगंध। आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंब। तुरूकं सरसानं ॥
बढ्ढै न सीत कटि छीन ह्वै। लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कहै। बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना। सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना।

दूहा ॥ श्रवनन भव श्रोतान व्रप। मन बंछै चछुआन ॥
मनु ससिव्रत्त कुंआरि कौ। पद्यो उर द्वर बान ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) मो.—अत्थमियं। * मो.—सु लगी जनु शैशव योबनता।
(२) मो.—राज। (३) मो.—शीत।

कवित्त ॥ निसि नरिंद चहुआन । चित्त मनोरत्थ विचारै ॥
भई दीह सब निशा । निशा सयनंतर धारै ॥
सयनंतर ससिवृत्त । चाटु चटु बैन उचारै[1] ॥
चारु चारु बर बयन । मान माननि संभारै ॥
दैवान मनोरथ चित्त बर । भव भव क्रन्नन कह करै ॥
भो प्रात दूत पुच्छै न्रपति । जद्दोवै चित्तै धरै ॥ छं० ॥ ९८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना ।

दूहा ॥ बर बंध्यौ ससि वृत्त कौ । अरु न्रप भान कुंआर ॥
बेंद्दी दिन कमधज्ज कै । नाम बीरबर भार ॥ छं० ॥ ९९ ॥
ससिवृता वृत आइ है । बरु देख्यौ बर कौन ॥
न्रप वै भान स्वयंबरह । एक ब्रत्त बल लीन ॥ छं० ॥ १०० ॥
जैत षंभ मंड्यौ नृपति । बान हनन वृत लीन ॥
ता काजै दिसि दिसि नृपति । धर धर कग्गर दीन ॥ छं० ॥ १०१ ॥
दूह अमंत[2] न्रप वर जितै । कियौ न मन्नै ताम ॥
दारुन वृत लीजै नहीं । दूह कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूह सुनंत प्रस्थान दै । बर पंचमि रबि बार[2] ॥
पच्छ चलाइ गवन्न सुनि । कांनन बीरत[3] बार ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दोऊ वाल पावक्क बनि । सुनि परि उठ्ठह गात ॥
मानों चीय चतुद्दशी । कै शशि उद्विय प्रात ॥ छं० ॥ १०४ ॥
सुनि कै आसन उठ्ठि बर । ढुंढत फिरत सु जोइ ॥
कंत कंत के करत ही । कान भनक कछु होई ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बीर चंद जैचंद बँधु । देवरु पुंज कुंआरि ॥
न्रप पठये चहुआन पै । दै शशिवृत्ता नारि ॥ छं० ॥ १०६ ॥

शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन ।

(१) ए.–कृ.–को.–उवारै ।　　(२) मो.–अमृत ।
(३) कृ.–वार ।

आगम बीर बसंत कौ । शिशिर संपते अंत ॥
प्रीतम पतन सु प्रीत कौ । दैन बांह सो कंत ॥ छं० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ शशिर सु बिथुरत बन । वियोग बिकुरत बन कंते ॥
ढुंढन आस रहि सास । कंत आयो न वसंते ॥
उपवन पत्त झंझरिय । बिरह पंजर संझंझरि ॥
आस अनदिन हुलसि । विपन हुलसै सु सलंझरि ॥
अनमेष जपत इच्छा सुघन । आनँद उर भूषन तजै ॥
दोऊन छोड़ कवि चंद कहि । असु रष्षिरु धज सम सजै ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शशिव्रता का चित्ररेषा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन ।

कवित्त ॥ चित्र रेष बाला विचित्र । चंद्री चन्द्रानन ॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी । चित पुत्तरि परमानन[1] ॥
काम बान संजुरी । बाल अंजुरी सु लच्छिय ॥
मार कलह उत्तरी । पुब्ब अच्छरी सु लच्छिय ॥
लच्छिन बत्तीस लच्छी सहज । रति पति चित्त समंधरै ॥
संग्रहै हत चहुआन कौ । गवरि पुज्ज दिन प्रति करै ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बरनी जोग बरन्न को । बर भुल्लै करतार ॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै । सत्त समुद्रह पार ॥ छं० ॥ ११० ॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए ।

जा कारन ढुंढ़त फिरत । सो पायौ दीलीस ॥
अब जद्दव ससिव्रत चढ़िय । दीनी ईस जगीस ॥ छं० ॥ १११ ॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं ।

शिवा बानि शिव वचन करि । हो येठयो प्रति तुझ्झ ॥
कारन कुंअरि हत्त कौ । मन कामन भय मुझ्झ ॥ छं० ॥ ११२ ॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन ।

(१) मो०—समानन ।

सुभ लच्छ जहव प्रिया । कहियै का सु विवेक ॥
हंस कहै राजन सुनिय । उत्तिम लच्छिन केक ॥ छं० ॥ ११३ ॥
काव्य ॥ पीनो ह्यपीन उरजा, सम शशि बदना, पद्म पचायताक्षी ॥
व्यंबोष्टी तुंग नासा, गज गति गमना, दक्षना वृत्त नाभी ॥
संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रथु जघा, वाम मध्या सु वेसी ॥
हेमागी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम बाना कटाक्षी ॥ छं० ॥११४ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ।

मुरिल्ल ॥ सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय । तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय ॥
चारि जुगत्ति त्रिया परकारं । कहु दुजराज सु लच्छिन सारं ॥ छं० ॥११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती ।

दूहा ॥ कही हंस जहो सु कथ । लगि श्रोतान सुराज ॥
छिनन हंस धीरज धरै । लगै बान सम साज ॥ छं० ॥ ११६ ॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है ।

कहै हंस बर राज सुनि । अति अनेक है जाति ॥
पद्मनि है जहव कुंअरि । आंन तरुनि अनि भांति ॥ छं० ॥ ११७ ॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना ।

राज कहै दुजराज सुनि । करि बरनन कथि सोइ ॥
को लच्छिन उत्तिम त्रिया । कहियै सो सब जोइ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना ।

चारि जाति है त्रीय तन । पदमिनि हस्तिनि चित्त ॥
फुनि संषिनिय प्रमान इह । मन नह रंजिय मित्त ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना ।

छंद पद्धरी ॥ सुनि हंस बैन उर लगी बत्त । विधिना लिषंत क्यों मिटै पत्त ।
श्रोतान राग उर लगे राज । तन लगे बान समरह सु साज ॥ छं० ॥ १२० ॥

बुल्लिस राज फिरि हंस बत्त । सुनि श्रवन बैंन मन भयौ रत्त ॥
पुच्छनह राज सब त्रिय विवेक। उच्चर्यौ* हंस सा बत्त एक ॥ छं० ॥ १२१ ॥
तुम देव अंस जानौ सु भेउ । हम कहत परम दुज लहै केउ ॥
लच्छिन प्रकार चव त्रिय विवेक। करि वरन सुनावहु भांति नेक ॥ छं० ॥१२२॥

हंस का लक्षण वर्णन करना ।

गाथा ॥ कहै विवेक सुहंसं । त्रीय प्रकार चार लहि इंदं ॥
सुनि राजन सुभ वांनी । आनंदे श्रवन मझ्झेनं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
दूहा ॥ तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद ॥
पद्मिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन ।

अरिल्ल ॥ रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन बान इहि ॥
बचन सु अमृत धार रती रति जांनि जिहि ॥
इला[1] सील कुल बाल छती कामोदरी ॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु सुंदरी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

पद्मिनी का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुटिल केस पद्मिनी । चक्र हल्लन तन सोभा ॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल । गँध पद्म आलोभा ॥
सुर सब्बूह हंसी प्रमांन । निंद्रा तुछ जंपै ॥
अलप बाद मित काम । रत्त अभया भै कंपै ॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज । असन बसन चतुरंग गति ॥
आवंक लोइ लग्गै सहज । कांम बांन भूलंत रति ॥ छं० ॥ १२६ ॥

हस्तिनी का वर्णन ।

उर्द्ध केस हस्तिनी । वक्र अस्तन दसनं दुति ॥
मधुर गंध गरनाट । भुल्लि भ्रम कांम बाम रति ॥
गूढ़ सबद मन जा । विषान रंगन कामोदरि ॥
चित्र नयन चंचल । विसाल बरनी जंमोदरि ॥

* मो०—कहि हंस राज यों बत्त एक । (१) कृ० स०—इली ।

छिन हृदय हसय विहसय लहय । वसि चित्तह चित पुत्तलिय[1] ॥
नीवीय मान जानैं वहुत । कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन ।

दीर्घ केस चिचिनी । चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध स्रग चिच निद्र । कोक शब्दन उच्चारन ॥
सील नील लज्जा प्रमांन । रत्ति मैं भय घन मारैं ॥
अलस नयन रस वलित । कलित कल बोल उचारैं ॥
धीरज्ज छिमा कवि लोक करि । अवलोकन गुन औसरैं ॥
विस्तीर्ण संच मोहन पढै । चित्त वित्त कंतहु हरैं ॥ छं० ॥ १२८ ॥

संषिनी का वर्णन ।

अलप केस कुच स्थूल । थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उदर लंकीस । थूल छिस लंगध बारन ॥
घोर निद्र[2] तन तास । अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर । सबद कलहंतर मंडै ॥
आचार ध्रंन नहि सुद्ध मन । विधि विचार विभचार घन ॥
आसंष संष संषिनि गुननि । सुष्य नाह पावै न तन ॥ छं० ॥ १२९ ॥

शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ।

दूहा ॥ सुनौ श्रवन चहुवांन वर । देवगिगरि न्रप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति । कहि औपम सुनि कान ॥ छं० ॥ १३० ॥

छंदनाराच ॥ चढंत वेस सामयं । अरंभ ग्रेह कामयं ॥
उठंति एहि हल्लिता । वियद्द चंद्र चल्लिता ॥ छं० ॥ १३१ ॥
नषं सुरंग रंजनं । तरक्क दर्प्प कंजनं ॥
हलंत पेंड रच्चयौ । अरुन्न नील कच्चयौ ॥ छं० ॥ १३२ ॥
रही सु कंति थावकं[3] । चलंत हंस सावकं ॥
दो हंस अंग अंगुरी । उपंम काक विज्जुरी ॥ छं० ॥ १३३ ॥

---

(१) मो.—फुत्तरिय ।　　　　(२) मो.—नीद ।
(३) ए. कृ. को.—जायकं ।

मराल छोड़ मुक्कियं । चरंन चंपि लुक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुभ्भियं । अनंग अंग लुभ्भियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडुरी । भराइ काम सुंदरी ॥
दुती उपंम जंघ की । किधौं उलहि रंभ की ॥ छं० ॥ १३५ ॥
त्रितिय उपंम जंघरी । षराद् काम की करी ॥
कनक्क षंभ रंभ सी । अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली । सयन्न काम की छली ॥
उतंग भाग अग्रता । मनों तुलाकि दंडिता ॥ छं० ॥ १३७ ॥
छकीन छीन लंकयं । कमांन काम अंकयं ॥
सरोम राइ राजई । उपंम कब्वि भ्राजई ॥ छं० ॥ १३८ ॥
सुमेर शृंग कंदकै । चढ़ै पपील चंद कै ॥
उपंम कब्वि ठहई । धनक्क मुट्ठि चढ्ढई ॥ छं० ॥ १३९ ॥
थनं विपान थोरयौ । अनंग बान ओरयौ[1] ॥
सुरंग रोम बाल सी । जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० ॥ १४० ॥
उपंम चंद ग्रीव की । मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंम तं लहै । कपोत कंठ कंक है ॥ छं० ॥ १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद कौ । हस्यौ कलंक चंद कौ ॥
दसन्न जोति कामिनी । मनों दमक्कि दामिनी ॥ छं० ॥ १४२ ॥

हसंत कब्वि में कही । सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी । सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० ॥ १४३ ॥
दसन्न चारु मानयं । प्रभात कै प्रमानयं ॥
दिपंत जोति नासिका । सु गत्ति कीर चासिका ॥ छं० ॥ १४४ ॥
षुभी जराइ राजई । उपंम कब्वि साजई ॥
मनों तरक्क विक्कुरे । मिलंत चंद उक्कुरे ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तटंक कन्न राजई । उपंम ता समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै । धरे षरास बाढ़िकै ॥ छं० ॥ १४६ ॥

(१) ए० कृ० को०—आरयौ ।

सुमत्ति नास जीपकै। चुनंत कीर सीपकै॥
सुभाइ बंक नैन की। हरंत चित्त मैंन की॥ छं०॥ १४७॥
हलंत नेंन भूव ले। धरंत चंद जूव ले॥
लिलाट आड़ सोभई। अनंग थान लोभई॥ छं०॥ १४८॥
सुरंग केस पासयं। सु मुक्ति मंडि भासयं॥
किरंन सूर साजकी। अहार दूध भास की॥ छं॥ १४९॥
त्रिषंड मंडयौ गुही। उपंम काक विज्जुही॥
सोवन्न षंभ दुस्तरी। उरग्ग चीय उत्तरी॥ छं०॥ १५०॥
शृंगार भार भारियं। विलोकि काम पारियं॥
श्रवन्न मंडनं धरी। अनंग चित्त हीं हरी॥ छं०॥ छं०॥ १५१॥
विसाल बाल विभ्भरी। कविंद बुद्धि विस्तरी॥ छं०॥ १५२॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ।

दूहा॥ जंपि राज दुज राज सम। तुम मति रूप अलोइ॥
कवन काज अवतार इत। सत्य कहाै तुम सोइ॥ छं०॥ १५३॥

हंस का विवरण कहना।

हंस कहै राजन्नसुनि। [1]कहों उतपत्ति चियेन॥
सुनहु राज मन प्रसन होइ। विवरि कहों सब बेंन॥ छं० १५४॥

इन्द्र और चित्ररेषा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन।

कवित्त॥ एक समै सुर ईस। अप्प पुर इन्द थान गय॥
आगम देव सुनेव। नाग पति अति उछाह भय॥
अरघ पाद करि धूप। करै मंगल अपुव्व सुर॥
सुभ आसन रचि रुद्र। करै घर सार बारि तर॥
अस्तुत्ति करन लग्गौ सुरिंद। तब प्रसन्न भय ईस प्रति॥
उच्चरिय कूट जट इंद सों। सुभ दिष्यौ अच्छर नृपति॥ छं॥ १५५॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना।

रंभ घृताची मैन। मँजुघोषा सुरंग चिय॥
उरवसि केसी नारि। तुरत तिल्लोत्तमानि पिय॥

(१) मो०—कए उतपति तिय दैान।

किय शृंगार सुंदरिय। आइ उब्भी सुर बामं॥
देषि चिया मन प्रमुदि। हुऔ मन उद्दित कामं॥
अब सरस नृत्य कारनह कजि। जंच मृदंग [1]उपन्न सजि
अस्तुति अनेक पढि घोष चिय। पहुपंजुलि सुर इंद्र कजि॥ छं०॥१५६॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना।

तब सु कोप धरि ईस। दियौ सुर श्राप पतन धरि॥
और रंभ किय नृत्य। सुबर अनेक विद्दि पर॥
बहु बिवेक कल मान। ताल मंडै चिग्गन सुर॥
रंजि राज सुर ईस। दीन बर बानि रंभगुर॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति। उभय देव आनंद हुअ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर। सुबर प्रमोदिय मन सँभुअ॥ छं०॥ १५७॥

शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा। पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा।

दूहा॥ करि प्रसंन सुर राज चिय। मुष अस्तुति सुर कीन॥
बर बानी पुर इंदकै। [2]यह सुवाक्य सिव दीन॥ छं०॥ १५८॥
परै तुम्भ्भ उत्तिम घरनि। पुत्री भूमि नरिंद॥
दुअ पष्पां सिर छचहै। करि सेवा द्दर इंद॥ छं॥ १५९॥
बचन ईस तें बर लहै। हरन होइ तुअ नारि॥
कलह केलि भावन भवन। ह्वै है जुद्ध अपार॥ छं०॥ १६०॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है।

कही बांनि कैलास पति। मैनकेस सुनि नारि॥
परस दोष भरतार सम। करत सु क्रीड अपार॥ छं०॥ १६१॥

(१) मो०-उपम्म। (२) किय वधाय दिवतीन।

दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी ।

गाथा ॥ तुछ दिन अंतर क्रमियं । आगम भरतार यांमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुम्भफ ईस बर बांनी ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलस गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति बरन किया है ।

कवित्त ॥ दै सराय सुर नारि । अप्प करि ईस थान चलि ॥
घन अस्तुति कर इंद्र । प्रमुदि अति रुद्र वानि फलि ॥
चलै थान कैलास । परी अच्छरी [1]मृतं पुर ॥
जद्दव ग्रह चिय जाइ । उअर उप्पजी कुंअरि बर ॥
देवास थान तपि भान न्रप । तिहि पुची ससिहृत कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुचिय । तुअ कारन साथह उअरि ॥ छं० ॥ १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है ।

दूहा ॥ और सुवर संकेत [2]सुनि । हंस कहै नर राज ॥
मेंन केस अवतार इह । तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० ॥ १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया हूं । शीघ्र चलो । राजा का प्रस्तुत होना । दस सहस्र सेना सजना ।

(१) मो॰—धारा । (२) मो॰—ऋह । (३) मो॰—क्रारि ।

छंदगाघा ॥ हंस कहै न्रप राज बिचारं। जो पूछै कारन हत्यारं ॥
देव गिरि जद्दों न्रप भानं। ता पुत्री ससिव्रत्त सुजानं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सो मंगी कम धज्ज सुराजं। तिहि गुन सुनि चहुवानं सुताजं ॥
छंडे तमि पित मान सुहानं। बरन ह्रत्त लीनै चहुवानं ॥ छं० ॥ १६६ ॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं। तप आचरन क्रम्म संदेसं ॥
हौं गुन तास हंस भय रूपं। पुच्छि चिय कारन सुनिय सु भूपं ॥ छं० ॥ १६७ ॥
ढील्ली वै अच्छे दृढ़ नेमं। हौं पठयौ सु तुभ्भ प्रति प्रेमं ॥
प्रसन ईस अंबिका समेतं। वुल्यौ राज सैल संकेतं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
चढ़न कहिय राजन सो हेसं। उड्डि चलौ दच्छिण तुम देसं ॥
सुनत श्रवन चल्यौ न्रप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं ॥ छं० ॥ १६९ ॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै। दस सहस्स सज्जी न्रप हेवै ॥ छं० ॥ १७० ॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो।

गाथा। जंपै दुज सम राजं। तव गुन व्रंन कीन अपारं ॥
हम गुन किम संभरियं। लग्गे श्रोतान राग किम जद्दों ॥ छं० ॥ १७१ ॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा ॥ हंस कहै राजन्न सुनि। इह उतपति अनुराग ॥
श्रवन सुनौ संभरि सु पहु। कहौं ह्रत्त संलाग ॥ छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ देवग्गिरि नृपभान। सोम वंसी सुतपै नृप ॥
तिन अनंत बल तेज। बहुल है गै पैदल तप ॥
नयर मध्य कोटीस। बसै बानिक्क अनंत लच्छि ॥
धर्म तप्पनह पार। न कोऊ दास रहै इक्कु ॥
सा एक लष्प पयदल्ल पुल्लत। षग्ग जोर [1]षूनं वहै ॥
जद्दव नरिंद सब गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लहै ॥ छं० ॥ १७३ ॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुत्र नारेन। पुत्रि ससिव्रत्ता प्रमानं ॥
दुअ अनंत सूरत्ति। रूप मकरंद सु जानं ॥

(१) मो.--खूनी।

भगिनि भ्रात दुत्र प्रीत। पिता माता प्रिय मानं॥
अति उछाह रग रमै। असन इक ठाम प्रधानं॥
सबरिष्य भई सचहरु दुत्र। अति अभूत लच्छिन प्रबल॥
लालित सरूप पिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल॥ छं० ॥१७४॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंच। नाम आनंद चंद भर॥
तिन भगिनी चंद्रिका। व्याह व्याही सु दूरि धरि॥
नैर कोट हिस्सार। तास षिचीय प्रमथ बर॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्य अनुभवै दीह पर॥
कोइक्क दिवस भर तार वहि। तुच्छ दीह परलोक गत॥
आनई बहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्य निसि दिन करत॥ छं० ॥१७५॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा॥ अति प्रवीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज॥ छं० ॥ १७६ ॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिवृत्त सुत्र। पठन विद्य सुभ काज॥
देवि कुंवरि अदभुत अवय। रंजित है अति लाज॥ छं० ॥ १७७ ॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है।

कवित्त॥ जब षिचिन चंद्रिका। कहै गुन नित चहुवानं॥
जस पराक्रम राज। तेइ बरने दिन मानं॥
राजकुंअरि जब सुनै। तबै उभ्भरै रोम तन॥
फिरि पुच्छै ससिवृत्त। सद्दि एकंत मत्त गुन॥

जे जे सु पराक्रम राज किय। सोइ कहै षिचिन समथ ॥
स्रोतान राग लग्यौ उअर। तो दृत्त लिनौ सुनो सुकथ ॥ छं० ॥ १७८॥

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी।

दूहा ॥ यों वरष्ष दुअ वित्ति गय। भइय वैस बर उंच ॥
तब कामन सु कलेव सुर। करे सेव सुचि संच ॥ छं० ॥ १७९ ॥

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही।

हर सेवा निस प्रति करै[1]। मन वचा क्रम वंध ॥
बर चहुआन सुकामना। सेवा ईस सुगंध ॥ १८० ॥
कवित्त ॥ कहै हंस सुनि राज। करों ब्रंनन सु कह्यो गुर ॥
दिवस च्यार प्रजंत। ओर मो सरन लहो पर ॥
सेवत नित प्रति ईस। मास पंचह वित्तिय वर ॥
एक सुदिन सिव सिवा। वचन संपुट लग्गी कर ॥
देवाधि देव सुनि ईस बर। करि सुचित्त कूंआरि सु व्रत ॥
पारथ्थ रुंड माली सरस। पर संगा गवरी करत ॥ छं० ॥ १८१ ॥
दूहा ॥ इह सुनि दस दिन गए बहि। सुनि रहि वचन सुईश ॥
एक सुदिन ससिवृत्त ने। किय द्रढ नेम जगीश ॥ छं० ॥ १८२॥
बर बरिहों संभरि सु पहु। वियौ पुरुष मुष भ्रात ॥
मिलन किया हर मास प्रति। भषिवे संनर घात ॥ छं० ॥ १८३ ॥

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में बर देना।

बचन सिवा सिव वाच दिया। पति पावै चहुआन ॥
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति। हुअ सुपनंतर मान ॥ छं० ॥ १८४ ॥
कै जानै मन अप्पनौ। कै षिचिन कै ईस ॥
और शिवा सुनि ईस प्रति। किय अस्तुति बर दीस ॥ छं० ॥ १८५ ॥

(१) मो.—करन।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त ॥ हुअ प्रसंन सिव सिवा। बोलि हूं पठय तुम्झ प्रति ॥
इह बरनी तुम जोग। चंद जोसना वान व्रत ॥
ज्यों रुकमिनि हरि देव। प्रीति अति बढ़ै प्रेम भर ॥
इह गुन हंस सरूप। नाम दुजराज भनिय चर[1] ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। व्याहन पठयौ सु गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध पुंज व्याहन सुकज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा ॥ फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त ॥ कहै दुज सकल बांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि॥
देवगिरी जद्दव नरेस। रचि बहु भांति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संषपक दुज कही। सुनि रु राजंन वहै नर ॥
प्रोहित सुहत्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिसा इकमास प्रति। चलि[2] राजन गुर मिलि सुजुरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥

(१) मो.—वर।　　(२) मो.—चलिल राजगुर।

पठए जद्दव सुनाथ। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं ॥
हय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर ॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त व्याह पर॥
हेमंग पंच सत लेइ दुज। सुर राजन अग्गैं धरिय ॥
ते बस्त अनेकं बिधि सुबर। रंजि राज अप्पन सु जिय॥ छं० ॥ १८९॥

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल सुविंद कर॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर॥
बोलयौ तब प्रोहित सुबर। अहो राज पंगुरन सुनि॥
लै चलै बींद ननकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु पुनि॥ छं०॥१९०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा॥ ह्वै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुम सुत्र बंध॥
प्रेरि सथ्थ जब अप्प पर। अति पर घर सुत्र नंघ॥ छं० ॥ १९१॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवग्गिरि कज व्याह॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उच्छव करनाह॥ छं० ॥१९२॥

हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी॥ चढि चलिय सब्ब रठ्ठौर सेन। उडि रेंन रथ्थ रुक्किय सुगेन॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वारुनिय गंध है सजि मदंध॥छं०॥१९३॥
सा अद्ध लष्ष पै पुलिय नैर। हज्जार सात मैगल सु भैर॥

(१) मो.- विरम।

दर कूच धरे बल बंस [1]बीर । व्याहनह काज उच्छव सु बीर ॥छं०॥१९४॥
कह हंस राज राजन सु बत्त । चढ़ि चलौ कलू रष्षन सुकत्थ ॥
तुम योग नारि बरनी [2]कुमारि । हूं पठय ईस तुअ हत्त नारि ॥छं०॥१९५॥
उन लियौ हत्त तुअ द्दढ़ नेम । नन करि विरम्म राजन सु एम ॥
इक मास अवधि दुज कहै वत्त । व्याहन सु काज मन करौ [3]रत्त॥छं०॥१९६॥
बर ईस भयौ अरु सिवा बानि । सुख लहौ बहुत हम दुज बषानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कीन । तन रोम अंग उब्भारि चीन्ह ॥छं०॥१९७॥
दस सहस सेन सजि पास राज । चढ़नैं सुचित्त करि बाज साज ॥छं०॥१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना ।

दूहा ॥ कह संभारि बर हंस सुनि । कह जहौं संकेत ॥
कौन थान हम मिलन है । कहन बीच संमेत ॥ छं० ॥१९९॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना ।

गाथा ॥ कह यह दुज संकेतं । हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं ।
तेरसि उज्जल माघे । व्याहन बरनीय थान हर सिद्धिं ॥छं०॥२००॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा ।

दूहा ॥ तब राजन फिरि उच्चरै । हो देवस दुजराज ॥
जो संकेत सु हम कहिय । सो अष्षी चिय काज॥ छं० ॥ २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए ।

अरिल्ल॥ सो अष्षिय हम नेम सु दृढ्ढं । तुम अवस्य आवो प्रभु गढ्ढं ॥
सेत माघ त्रयोदसि सा वहि । हर सुकलेव थांन सुति भावहि॥छं०॥२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना ।

दूहा ॥ इह कहि हंस सु उड़ि गयौ । लग्यौ राज श्रोतान ॥
छिन न हंस धीरज धरत । सुख जीवन दुख प्रान ॥ छं० ॥ २०३ ॥

(१) मो.–धरि । (२) मो.–कुंआरि । (३) मो.–सत्त ।

दस हजार सेना सहित पथ्वीराज का तैयारी करना ।

दस सहस्र हेंवर चढ़िय । न्त्रप दिल्ली चहुआन ॥
हुकम सद्दि साहन कियौ । दै सूरन विलहान ॥ छं० ॥ २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना ।

छंद भुजंगी ॥ दियौ कन्ह चहुआंन मानिक्क बाजी । जिनैं देषतें चित्त की गत्ति लाजी
मुषं मभ्झ पायं कढ़ै वाज राजं । मनो वग्ग भीषं क्षतं कढ़्ढ पाजं ॥ छं० ॥ २०५ ॥
दियौ बाजि इंदं बरं जाम देवं । दिपै तेज ऐसैं चिरं पंष एवं ॥
धरै पाइ ऐसे इलं मभिझ जैसे । सुनै जैन भ्रंमं धरै पाइ तैसे ॥ छं० ॥ २०६ ॥
चढ़्यौ राव कैमास चिन्तं तुरंगी । रहै तेज पासं उछद्दंत अंगी ॥
[1]चमक्कंत [2]नालं विसालं खुरंगी । मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी छं० ॥ २०७
उड़ै झार झारं पयं नाल झारी । समं बूंद धावै मनौं चार तारी ॥
चढ़े राजहंसं सु चामंड [3]जोटं । मनो तेज बंधी मुनी बाइ मोटं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
डुलै [4]कंन नांहीं सिलीका सुग्रीवं । मनों जोति बंधी [5]सुनृवात दीवं ॥
चढ़्यौ राज षीची प्रसंगं पहूपा । उड़ै वास ज्यों वाय [6]वग्गै अनूपा ॥ छं० २०९ ॥
बंध चौंर चित्तं चमक्कंत चाहं । हरद्वार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ॥
चढ़्यौ राज पट्टं अजानंत बाहं । कही कव्विराजं उपम्माति चाहं ॥ छं० ॥ २१० ॥
दियै [7]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै । बलं ताहि दिष्षै सरित्ता अमुझै ॥
दियौ म्रग्गराजं चढ़्यौ देवराजी । उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी ॥ छं० ॥ २११ ॥
चढ़्यौ निड्डुरं राइ अंगं अभंगं । छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं ॥
चढ़्यौ हाहुली राइ जंबू नरिंदं । बढ़्यौ बांन ज्यों तेज कम्मान चंदं ॥ छं० ॥ २१२ ॥
चढ़्यौ लंगरी राव लंगा सुबीरं । किधौं वाय बढ़्यौ बुभं जानि धीरं ॥
चढ़्यौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं । किधौं वाय बुंदं स छुट्टीय साजं ॥ छं० ॥ २१३ ॥
चढ़्यौ राव लष्षं सु लष्षं पवारं । भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ॥
किधौं अग्गि दंडं भ्रजं बाल फेरैं । किधौं भौर हथ्थं किधौं चक्र हेरैं ॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) मो.--चमक्काति । (२) मो.--तालं ।
(३) ए.--जोतं । (४) ए.--कैन । (५) ए.--मुनि बात ।
(६) मो.--वेगै । (७) मो.--वाच ।

किधों राति बोहिथ्थ भ्रमि भोर नारं। कही चंद कब्बी उपमाति चारं।
चढ्यौ चंद पुंडीर राजीव नामं। तिनं [1]ओपमा चंद देषी बिरामं॥छं०॥२१५॥
जिनें गत्ति जीती सयन्नं पगारं। चली अंषि के पंष चित्तं बधारं॥
चढ्यौ अत्त ताई उतंगं तुरंगा। मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा॥छं०॥२१६॥
चढ्यौ राव रामं [2]रघूवंस बीरं। गतिं सूर जित्ती म्रगं चंद भीरं॥
चढ्यौ दाहिमं देव नर सिंघ कैसे। मनो चित्त की अर्थ की गत्ति जैसे॥छं०॥२१७
चढ्यौ भोज राजं पहारं चिनैतं। फुटै सद्द तंजं अवाजं [3]चितेतं॥
चढ्यौ बीर जोद्धं कनक्कं कुमारं। चली कृत्य पूरन्न आचार पारं॥छं०॥२१८॥
चढ्यौ राव पज्जून कूरंभ बीरं। बढ़े लोह अग्गं धनं जैतपूरं॥
चढ्यौ सामलौ सूर सारंग ताजी। गही होड़ बंधी वयं वाम पाजी॥छं०॥२१९॥
चढ्यौ अल्हनं बीर बंधव्व पानं। चढ्यौ दान ज्यों ग्रहनं जुद्ध वानं॥
चढ्यौ लष्य लष्यी सलष्यं बघेला। बढ्यौ नेत ज्यों देह देषै सु हेला॥छं०॥२२०॥
चढ़े सब्ब सामंत छल बलत बीरं। मनों भान छुट्टी [4]किरन्नी कि तीरं॥
चढ्यौ बाज राजं प्रथीराज राजं। तबै पष्षर्‌यो बाज साकत्ति साजं॥छं०॥२२१
उड़ैं सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं। बरं ओपमा चंद जंपी कविंदं॥
द्रुमं ज्यों मरोरै [5]शिरं स्वामि हेतं। मयूरं कला बाज रची बंधि नेतं॥छं०॥२२२॥
चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं। तबै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीनं प्रमानं॥छं०॥२२३॥
जगें बीर बीराधि डोरू बजावैं। नचै नद्द नंदी चिघाई चिघावैं॥छं०॥२२४॥

माघ बदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा॥ [6]आगम निगम जांनि कै। चलि न्रप [7]सुक्कंवार॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये तुर तार॥ छं०॥ २२५॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद चोटक॥ कवि चंद सु ब्रंनन राज करं। सोइ चोटक छंद प्रमान धरं॥

(१) मो.-उप्पमा। (२) मो.--रघोबंस।
(३) मो.--त्रिनेतं। (४) मो.--किरन्नं।
(५) ए.--सिरं। (६) ए.--अगम निरागम।

जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजै अगनं॥छं०॥२२६॥
विवहार धरै बरनं सु बरं। पढ़ि पिंगल बाहन कोन हरं॥
वर चोजन चारु सुरंग इलं। तहां भौर न मोर सुरंग हुलं॥छं०॥२२७॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहों तहां केलि [1]अचिज्ज बरं॥
तहां पल्लव [2]लल्लित रत्त बचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं॥छं०॥२२८॥
झमकैं बर नंग मयूष कसी। निकसी तहां केतक सी बिकसी॥
सु चलें बर मंद सुगंध प्रकार। बढ़ी दिसि दस्स सु उज्जल मार॥छं०॥२२९॥
बजै मधु रंग सु गंधन भ्रंग। बजे सहनाइ न फेरि [3]उपंग॥
हलै बर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहिं पिलप्पित जोर॥छं०॥२३०॥
बुलै कल कंठ सु कंठह सद्द। तहां चढ़ कब्बि वसीठ उवद्द॥
सकस कुसंम रु अंकुस पानि। हने हर काम असो [4]गज जानि॥छं०॥२३१॥
अतसी बर पुफ्फ सु वाढ़हि भृंग। बजै गज पांनि सु इंदुब रंग॥
लता ललिताइ हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रुपतिताल॥छं०॥२३२॥
विकासित केसर [5]कुंकुम कांम। सरोज [6]सुरंभ अनूपम नांम॥
उहां मिटि ताल तरंगिनि कांम। उहां चलिते नियना तिहि ठांम॥छं०॥२३३॥
उहां बरहा जनु उप्परि केल। किने तब ढीठ हिया छबि मेल॥
हलै जनु नेजे षजूर बसंत। ढली बन राह सुढालह मंत॥छं०॥२३४॥
तजी बर बाल सुरंग सुभेस। चल्यौ प्रथिराज सु दष्षिन देस॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचंद। सही चहुआन प्रथी पर इंद॥छं०॥२३५॥

दूहा॥ चढ़ढि चलिय प्रथिराज बर। देवग्गिरिधर राज।
त। सुकन्ह बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज॥ छं० ॥ २३६ ॥
कहत कन्ह बरदाय बर। अहो राज सुभ मांनि॥
कहो पथांन सज्यौं कहां। सोहम कहों प्रमांन॥ छं० ॥ २३७ ॥

चलने के सयम राजा को भय दिलानेवाले सकुनों का होना।

(१) मो.--अचाज्जि। (२) मो--लालित।
(३) ए.--उतंग। (४) मो.--गिन।
(५) ए.--कुसुम। (६) मो.--सरूप।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भै भीत उपन्नौ ॥
स्यांम अंग तन छिद्र। कलस संमुहं सपन्नौ ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य। रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं। केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लुट्टिय अनंग भय भीत गति। मन अलुब्भ निद्रा [1]असति ॥
विब्भाइ भाइ उनमोद पति। मंद मंद सक्कति हसति ॥ छं०॥२३८॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना।

अरिल्ल ॥ सो भय भीत देषि कवि पुच्छिय। जंपि कहौ मति मोहि सु अच्छिय ॥
तुम सब जांन त्रिमान प्रमानं। जंपि कहौ कविराज सुजानं॥ छं०॥२३९॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद।

दूहा ॥ पाछे बीर सगुन्न भय। ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गनय ऊपजै। कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० ॥ २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है।

कवित्त ॥ सीस डोलि कविचंद। चित्त अंदेह उपन्नौ ॥
पुब्ब बैर चहुआन। बैर कमधज्ज दिपन्नौ ॥
सवर जोर संग्राम। निबर अँगम्यौ न जाइय ॥
को जम हथ्थ पसारि। लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय।
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि। कोन बांह सायर तिरै ॥
[4]अपसगुन जानि चहुआन चलि। दै विधान त्रिम्मित करै ॥ छं०॥२४१॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला।

(१) मो.-असित (२) मो.-सह। (३) ए. कृ. को.-मैडाप्र। (४) ए. कृ. को.-असुम्भ।

कवित्त ॥ बेस मद्द बल मद्द। और बंध्यौ सुरतानी ॥
राज मद्द उनमद्द। काम मद्दह परिमानी ॥
अरु अवनी औतांन। तौन बंध्यौ चहुआनं ॥
दल बद्दल पावस्स। चल्यौ दछिन धर वानं ॥
[1]छतीस कुली बर वंस विय। चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ॥
उपवन्न बंब बज्जी बिषम। खान थान दिगपाल हलि ॥ छं०॥२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना।

दूहा ॥ इन अग्गैं कमधज्ज लै। आइ सँपतौ थान ॥
माघ नवमि चंबक बजै। चहुआना परिमान ॥ छं० ॥ २४३ ॥

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन।

जैचन्द का आना सुन शशिव्रता का दुखी होना।

कवित्त ॥ [2]एक लष्ष दस अग्ग। सेन सज्जे कमधज्जं ॥
बीय सहस बारुन्न। सत्त हज्जार फवज्जं ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल। अद्ध साइक वहंतं ॥
सजि समूह चतुरंग। दिसा दछिन [3]परजंतं ॥
सुनि श्रवन कुंअरि शशिव्रत्त लिय। सुनि अवाज बर बीर घन।
चहुआन व्रत्त लीनो अधम। प्रान हीन कढ्ढन सुमन ॥ छं०॥२४४॥

शशिव्रता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना।

दूहा ॥ मिलि पूजै बर बीर कौ। करी भगति घन भाइ ॥
बाला प्रान [4]सुकढ्ढनह। अंतर ध्रम्म न जाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों

(१) मो.-छत्रीस। (२) ए.कृ. को.-एह।
(३) ए. कृ. को.-फरजंतं। (४) मो.-फढ्ढतँह।

का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना।

[1]कहै सषीं समझाइ कर। पुब्ब कथा कहुं मंडि॥
घरी अद्ध जो सुनिहि तुअ। प्रान बाल नन छंडि॥ छं०॥ २४६॥
छंद पद्धरी॥ मिलि बाल ताहि रचि कहै बत्त। संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त॥
दैवान बत्त जानै न कोइ। लिष्षे जु अंक मिट्टय न सोइ॥छं०२४७॥
बल बीर जुद्ध पंडव नरेश। बन ग्रह्यौ राज मुक्क्यौ सुदेश॥
[2]जिप्पनह सब्ब दृगपाल जोग। संध्यो सुजोग तजि राज भोग॥छं०॥२४८॥
बलि राइ जग्य आरंभ सत्य। जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त॥
मुक्किय सुथान तिन मान षंडि। सेवहु सुदेव पाताल मंडि॥छं०॥२४९॥
कट्टन कलंक शशि जग्य कीन। का कुष्ट अंग छिन मान हीन॥
नघु राइ कीन राज सु अनूप। का कुष्ट काल संहर्‌यौ कूप॥छं०॥२५०॥
श्रीराम हथ्थ पकर्‌यौ प्रवीन। आरन्य बहुत दुष सीय कीन॥
गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान। झकझोरि परी देवन समान॥छं०॥२५१॥
सिय लई निशाचर रूप चीन्ह। मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन॥
आतम्म घात [3]मंडो विशाल। पावै न सुष्ष वं भ्रमें काल॥छं०॥२५२॥
तिय मात तात बंधह सु देहि। बाला विचित्र ते [4]वृत्त लेहि॥
कुलजाहि धंम ग्रह राजनीति। जे मँडहि बाल गुरजनन जीति॥छं०॥२५३॥
शशिवृत्त जु वत्तिय मत्ति मानि। हित काज मत्ति हम दै प्रमान॥
पंषी न पच्छि को लगै धाइ। आवै न वृत्त पै जंम जाइ॥छं०॥२५४॥
आवै न मेह ग्रह लगै अग्गि। पावै न जीव को दान मग्गि॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ। जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ॥२५५॥
मंनै न बाल उर मत्त मान। चिंत्यौ सुतात कढ्ढन परान॥छं०॥२५६॥
चौपाई॥ मिलि मिलि बाल रचावैं बाले। तन मन मनै न चित व्रत साले॥
बहुत करें सिंगार सारे। मनो मृतक नव रंग न धारे॥छं०॥ २५७॥
छंद पद्धरी॥ राजन अनक पुत्री त्ति व्याह। शशिवृत्त देव कन्या सिवाह॥

---

(१) मो.-कही। (२) मो.-जिप्पतह।
(३) मो.-मंडै। (४) ए. कृ. को.-वृद्द।

चहुआन चिंत जुग्गिन [1]पुरेस। आहत्त बीर जिन करहु भेस।। छं०॥२५८॥
निब्बरै बाद जौ करो मंच। साधम्म वीर कढ्ढै [2]जु कंत ॥छं०॥२५९॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा।

दूहा ॥ कंति कंति प्रति बढ्ढई। चढ़ै चाइ चहुआन ॥
मो पुच्छै प्रति तान जो। बीर चंद दै दान ॥ छं० ॥ २६० ॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीरचन्द को कन्यादान दीजिए।

गाथा ॥ बीरं चंद सुदानं। पानं विधाय नित्तयौ गुरयं ॥
बुल्लै न्रप हंम्मीरं। साइ संमीरं साइ मंगायं ॥ छं० ॥ २६१ ॥
दूहा ॥ जं हंमीर संमीर गति। समुह सु दुज्जन भेव ॥
जिन बड़वानल कुप्पयौ। सार मत्ति प्रति सेव ॥ छं० ॥ २६२ ॥
सार भार संसार कौ। नव निधि नव प्रति पान ॥
व्याह वीर शशिव्रत्त कौं। अप दीजैं प्रति दान ॥ छं० ॥ २६३ ॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा।

बाल प्रान कढ्ढत सुपुनि। सगुन एक मन मान ॥
बढि अवाज चहुआन की। अली सुन्यौ अप कान ॥ छं० ॥ २६४ ॥
यों सु सुनिय न्रप भांन नैं। पुचि प्रलय व्रत कीन ॥
चर [3]पिष्षिय चहुआन पै। जद्दव [4]मोकल दीन ॥ छं० ॥ २६५ ॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिव्रता मिलेगी।

मुक्काए मति वंतिनी। न्रप कग्गद दै हथ्थ ॥
पूजा मिसि बाला सुभर। संभु थान मिलि तथ्थ ॥ छं० ॥ २६६ ॥

(१) ए. कृ. को.- परेस। (२) मो.-सु।
(३) ए. कृ. को.-छिप्पय। (४) मो.-कलि।

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना।

कवित्त ॥ हय गय दल चतुरंग। कंक मंझ्यौति कन्ह सिर ॥
राजह्व वग्गरी। रांम रघुवंस जुद्ध जुर ॥
निडुर रा रट्टौर। सेन सज्जै भ्रत रज्जै ॥
एक एक संपज्ज। एक एकन गुन लज्जै ॥
जुग्गिनि डहकि बंबरि लसथ। जिम जिम शंकर सिर [1]धुनिय ॥
अत ताइ उत उत्तंग बर। बावारो सारह [2]सुनिय ॥ छं० ॥ २६७ ॥

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं।

गाथा ॥ सार प्रहारति भेवो। देवो देवत्त जुद्धयौ बलयं
गंध्रव्वी प्रति ब्याहं। सा ब्याहं सूर कलयामं[3] ॥ छं० ॥ २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना।

कवित्त ॥ सेन [4]सद्धि संमुहिय। भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्धि जो मद्धि। लाज लभ्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक। कै ध्यांन लभ्भै जोगिंदं ॥
बलह काम कलहंत। कि कह विश्रवासत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि न्रपति। बीर चंद आगम विषम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै। बढ़ै सार सारह विभ्रम ॥छं०॥२६९॥
दूहा ॥ सार धार पूजै नहै। षिति सामंत न नाथ ॥
आवृत बीर क्यों पूजई। दैव दैवतह साथ ॥ छं० ॥ २७० ॥
गाथा ॥ दुश्र वंस अंस सरिसं। बज्जं बाहु बलयो बलयं ॥
बज्जं दृष्टिति रिष्टं। सानिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० ॥ २७१ ॥
अरिल्ल ॥ बर बरिष्ट बर लोभ प्रकार। लष्य लष्य सा मंतह सार ॥
तिन बर बर अंगम प्रति जानिय। सो देवत देवत्तह मानिय ॥छं०॥२७२॥
कवित्त ॥ अति प्रचंड बलवंड। बैर [5]बाहरू तत्ताइय।

(१) मो.-धुनय। (२) मो.-सुनय। (३) कलयामि। (४) मो.-मध्य।
(८) मो.-बाहरू तनाइय।

माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय ॥
दल दुंदन सिंधु रहि। बाहु दंतन उप्पारहि ॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त भर। देवग्गिरि संक्है चलिय ॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल मह्लरति मति कलिय ॥छं०॥२७३॥
दूहा ॥ अकल वीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत ॥
भीम भयानक बल सु वृत। जे भंजै गज दंत ॥ छं० ॥२७४॥
[1] लभ्भै जस लिष्षीय बर। दैव जोग नह[2] हथ्थ ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कौं। सोइ प्रन मन समरथ्थ ॥ छं० ॥ २७५ ॥
चाहुआन कै कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज ॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज ॥ छं० ॥२७६॥
गाथा ॥ घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं ॥
जानिज्जै न्रप नैरं। दिष्ष न काजैव सोभियं नैनं ॥ छं० ॥२७७॥
दूहा ॥ रंभ्र गवष्षनि नैर मधि। जारि न चिंत प्रमान ॥
मानहु न्रप प्रथिराज कौ। रंभ्र नैन [3]प्रत प्रान ॥ छं० २७८ ॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिवृता का प्रसन्न होना।

कवित्त ॥ दुहूं पास न्रप नयर। राज दिष्षै प्रति राजं ॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज संमुह प्रति साजं ॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि दि्ग पलक उघारिय ॥
राज कित्ति संभरन। गोष श्रवनन संभारिय ॥
किंकिनि सुपाइ घुंघर सु गज। राज निसान सबद्द प्रति ॥
चहुआन राव आगम सुव्रत। कमल हीय बढ्ढिय मुरति ॥छं०॥२७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

(१) मो.-लभै सुजस लिक्खंत बर (२) मो.-नन।
(३) मो.--तजि।

दूहा ॥ काम कलह रत बढ्ढ प्रति। सुनिय भान न्रप कान ॥
आनंदह दुष उप्पज्जै। मरन सु निश्चय मान ॥ छं० २८० ॥
श्लोक ॥ मंगलस्य सदा व्याहं। अव्याहं सु मंगलं ॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे। [1]जेक कंज सु कंजभिः ॥ छं० २८१ ॥

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना।

कवित्त ॥ फिरिग पंति चिहु पास। सूर उभ्भौ चाव द्दिसि ॥
अतित जुद्ध आवद्ध। मत्त[2] बरषंत बीर असि ॥
और व्याह मंगलह। व्याह मंगल अधिकारिय ॥
परि पिशाच दानव। सु बुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुष पुत्त कौ। घर लीनौ जम सद्दकैं ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। को पुज्जै रन वद्दिकैं॥ छं० ॥ २८२ ॥
दूहा ॥ को पुज्जै बद्दत [3]सुरन। बयन सयन प्रथिराज ॥
अट्टत जित्ति जित्तिय सयल। [4]को मंडै कृत काज ॥ छं० ॥ २८३ ॥
गाथा ॥ को मंडै क्रत काजं। साजं जुाद्धय सूर योवनं ॥
तारिज्जैं सजि राजं। बंकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं० ॥ २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना। पृथ्वीराज का वहां पहुंचना।

देवालय भगवती। पूजैवं पूजयो बालं ॥
सुबर पुछ्यौ प्रथिराजं। कुज संसा बीरयो हथ्थं ॥ छं० ॥ २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ विषम ठौर बंकम बिषम। कल [5]सोभित वृत कंद ॥
जो प्रथिराजह अंग में। मनों प्रथी पुर इंद ॥ छं० ॥ २८६ ॥
मनों राज पृथ्वी पुरह। धनि सुध्रम्म लवलेश ॥
मानहु बीर नरिंद कौ। रति आयौ अविशेश ॥ २८७ ॥

(१) मो.-कंजे कंज सुकं कजसि। (२) ए. कृ. को.--बरषन्न।
(३) ए. कृ. को.-नर। (४) मो.-मंडै को। (५) मो.-सोभत।

सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यों करंत [1]दुत्तिय बियौ। कथा श्रवन सुनि मंत॥
जाकौ तें पतिव्रत्त [2]लिय। सो आयौ अलि कंत॥ छं०॥ २८८॥

शशिव्रता का आँख उठाकर देखना। दोनों की आँखे मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त॥
श्रोताने दिष्टांन अरु। मिलि पुच्छै [3]दोइ मित्त॥ छं०॥ २८९॥

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना॥ कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग विराजही।
कछु पुच्छन कों जाहिपै पुच्छत लाजही॥
नैंन सैंन में बात स्रवनन सों कहै॥
काम किधों प्रथिराज भेद करिना लहै॥ छं०॥ २९०॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा॥ नैंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानैं बहु भंत॥
मेरे जीय अंदेस है। कही न मैं पिय जंत॥ छं०॥ २९१॥
श्रवनन सन नैंना कही। [4]तुम जानौ चहुआन॥
काम न्रपति कौ रूप धरि। आवत है इन थान॥ छं०॥ २९२॥

हंस ने पहुँचकर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय में तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयौ समषि। कह्यौ अहो शशिवृत्त॥
चाहुआन आयौ प्रछन। मिलन थांन हर सित्त॥ छं०॥ २९३॥
कवित्त॥ [5]घेरि गांम जद्दव नरिंद। उभ्भे चिहु पासं॥

(१) मो.-दुदिय। (२) मो.-लियौ।
(३) मो.-दोय। (४) ए. कृ.--जिन। (५) ए.-घेरि

पल नंषिय रंभा सु । करन आरंभ प्रवासं ॥
एक एक गुन करहि । सब्ब फूले सत पच्चं ॥
तिन मध्यह शशिव्रत्त । भई कम्मोदनि मंचं ॥
[1]पित पुच्छि पुच्छि परिवार सब । पुच्छि बंध रज्जन सकल ॥
आवृत्त तात अग्या सुग्रहि । भईय बाल बुध्या विकल ॥ छं० ॥ २९४ ॥
दूहा ॥ बिकल बाल जहं सकल हुअ । बुद्धि विकल प्रति साज ॥
[2]भान वचन सच्चौ सुकरि । जिन अप्पी प्रथिराज ॥ छं० ॥ २९५ ॥
गाथा ॥ बीरं चंद सुव्याहं । सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥
संभरि क्रन शशिव्रतं । अगम बीराइमं जनंत तयौ ॥ छं० ॥ २९६ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त ॥ पुच्छि मात पित पुच्छि । पुच्छि परिवार ग्रेह सब ॥
मैं व्रत लियौ निवद्ध । गवरि पुज्जनं बाल जब ॥
तिन थानक सब देव । नीति आरंभ व्रत लीनौ ॥
तव प्रसाद उप्पनौ । मोहि इच्छा व्रत दीनौ ॥
तिन काल व्रत्त लीनौ सुमैं । गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल ॥
बारंज बात तुअ मोह हुअ । कहै और अब लहि [3]अफल ॥ छं०॥ २९७॥
दूहा ॥ दुष देवल कौ छंडनह । उर सिंचन अंकूर ॥
दीह काल बल वीचि बदि । लिय समान संपूर ॥ छं० ॥ २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन।

बाला बेनी छोरि करि । छुट्टे चिहर सुभाइ ॥
कनक थंभ तें ऊतरी । उरग सुता दरसाइ ॥ छं० ॥ २९९ ॥
कवित्त ॥ तजि भूखन बर बाल । एक आचिज्ज उपन्नौ ॥
लता हेम पर चंद । उभै षंजन ढिग चिन्हौ ॥
श्रीफल उरज विसाल । बाववर भ्रंग सुपत्ती ॥
सुकि सुत रंग अरन्नि । करी भग्गावल वत्ती ॥
सोभंत उरगपति भुअ शरन । हंस मुत्ति चर [4]बर करी ॥
सुध काज चढ़ै पप्पील सुत । काम पत्तिनी दुख डरी ॥ छं० ॥ ३०० ॥

(१) मो.-पति ।　(२) मो.-तान ।　(३) मो.-नवल ।　(४) मो.-चर ।

३

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना।

दूहा ॥ ते दासी दस बाल ढिग । तिर बरने कवि चंद ॥
तिन में बाल सुसोभियै । मनों प्रथीपुर इंद ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन।

छंद चोटक ॥ मय मंजन मंडित बाल तनं । घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मंजि चली । कि मनो कस कुंदन षंभ हली ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनसी । सुहली मनु साष मदन्न कसी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूषन नभ्भ मनौ उतरी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
सिगरी लट यों बिथरी बिगसें । शशि के मुख तें अहि सें निकसैं ॥
रँग रत्त उवट्टन उज्जलके । तिन में कछु सेत सुधा चलि के ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परिपान सु कुंकम मज्जन कै । नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ॥ ३०५ ॥
दूहा ॥ छुटि म्रग मद कै कांम छुटि । छुटि सुगंध की बास ॥
तुंग मनों दो तन दियौ । कंचन षंभ प्रकास ॥ छं० ॥ ३०६ ॥
कुंडलिया ॥ धर उप्पर कुच कनि परी । राजस तामस रंग ॥
तीजो तिहि सत काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग । मदिन मिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संमूह । करी भइ फेरि पतंगी ॥
*बरं सिर दार बिमार । संभु चहुआन नाह नर ॥
गंग यमुन भारत्थ । हत्थ जोरंत सु अद्धर ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
दूहा ॥ तिमिर बीर गवनं कुवट । चिगुन तेज रवि चास ॥
चवनित विक्रम परिस की । [1]काम ज्वाल बल हास ॥ छं० ॥ ३०८ ॥
कुंडलिया ॥ करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभूषन न समान ॥
केहं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान । केश वागुरि विस्तारिय ॥

---

* छंद ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध हैं। पाठ चारों प्रतियों में समान है।
(१) मो.-द्वल।

हावभाव कटाच्छ। ठुंकि पुट्टी दिय भारिय॥
बेठि नैन न्रप मूल। पेम [1]देषन गह सज्जन॥
मन म्रग पिय क्रत काज। ताकि बंधन किय मज्जन॥ छं०॥ ३०९॥

छंद नाराच॥ सुगंध केस पासयं। सुलग्गि मुत्ति छंडियं॥
अनेक पुप्प बीचि गुंथि। भासिता चिषंडियं॥
मनों सनाग पुप्फ जाति। तीन पंथि मंडियं॥
दुती कि नाग चंदनं। चढ़ंत दुद्ध पंडियं॥ छं०॥ ३१०॥
सिंदूर मध्य गुच्छता। अगंमदं विराजयं॥
मनो कि सूर उग्गतें। [2]गहे सु पुच लाजयं॥
सु तुच्छ सुच्छ पाट आट। पेम वाट सोभियं॥
मनो कि चदं राह वान। बे प्रमान लोभयं॥ छं०॥ ३११॥
कनक्क काम कुंडिलं। हलंत तेज उब्भरे॥
ससी सहाइ मान भाइ। सज्जि सूर दो करे॥
दुती उपम्म बिंद की। किरन्न चंद दिट्ठयं॥
मनों कि सुर इंद गोदि। अप्प आनि विट्ठयं॥ छं०॥ ३१२॥
भुवन्न बंक संक जूअ। नैन म्रग्ग जूवयं॥
ऊरद्धता चपल्ल गत्ति। [3]अच्छ आनि ऊवयं॥
कटाक्ष नैन बंक संक। चित्त मान बंकयं॥
सुछंडि वै सु कुंचितं। श्रवन्न बान नंषयं॥ छं०॥ ३१३॥
सुगंधता अनेक भांति। चीर चारु मंडियं॥
सु केहरी कटिं प्रमान। बीच बंधि छंडियं॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी। सुभंत गात ता जरी॥
बनाइ काम पंच बान। ओट जोट लै धरी॥ छं०॥ ३१४॥
सुरंग [5]माल्ल लाल्ल बाल्ल। ता विसाल छंडयं॥
सु पुव्व बैर जानि काम। अग्गि संभ मंडयं॥
[6]दुती उपम्म मुत्ति माल। यों विसाल ता कही॥

(१) मो.-षेदन। (२) मो.-गहंत रहे लाजयं। (३) ए. कृ. को.-अप्प।
(४) ए. कृ को.-रंग। (५) मो.-लाल माल (६) ए.-उदी

जु भारथी सु [1]गंग लै। सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट। रत्ति पत्ति तें षुली ॥
सुरंग तिथ्थ थान मंडि। ईस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि। षोडसं बषानयं ॥
सु मुत्ति तात मोर तन्न। [2]गोदरं बषानयं ॥ छं० ॥ ३१६ ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि। पीत रत्त जावकं ॥
अभूषनं धरंत चित्त। मित्त हित्त शावकं ॥
बनाइ कें चौँडोल लोल। चढ्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोषिता सुरंग थान। अस्तु तास उच्चरी ॥ छं ॥ ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना।

दूहा ॥ सजि शृंगार शशिवृत्त तन। चढ़ि चौँडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अंबिका। आई बाल सु अंग ॥ छं० ॥ ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना।

सज्जि सेन जद्दव न्वपति। दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग। दस दिसि [3]लष्षन लोल ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना। राजा की सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ अरुनोदय उद्यमह। सुच्छि लिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस बाजित्त। ढोल चंबकी सुमत गुर ॥
अद्ध सहस नफ्फेरि। सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन। कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज संग सेना सकल। अकल अपूरब बत्त बर ॥
चर सकल विकल अलि कुलन कौं। सुचित मित्त इक्कह सु थिर॥ छं० ॥ ३२० ॥

(१) मो.-मंग (२) ए.-सांदरं
(३) मो.-दिष्षन।

गाथा ॥ गुज्जर वै गुज्जर धनी । सथ्थं सेनाह सब्बयौ बीरं ॥
जांनैनि सबर अद्वं । उग्गे वा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

मन्दिर के पास पहुंचकर शशिवृता का पैदल चलना ।

हरनंत पति तुरंगं । साहस मंचाय गिद्वयो रनयं ॥
देवालेयं पासं । सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

शशिवृता के उस समय की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच ॥ चली अली घनं बनं । सुभंत सथ्थ संघनं ॥
विहंग भंगयो पुरं । चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ॥ ३२३ ॥
अलीन जुथ्थ आवरं । मनो विहंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा । उवंत जानि अंबजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं । अनंग अंग लोभयं ॥
उठंत कुंभ कुचयं । उपंम कब्बि सुचयं ॥ छं० ॥ ३२५ ॥
मनों जरंत बाल की । धरी सु आनि लालकी ॥
सुभंत रोमराजयं । [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ॥ ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका । चलंत लोभ आलिका ॥
सुरंग सोभ पिंडुरी । षरादि काम षिंडुरी ॥ छं० ॥ ३२७ ॥
नितंब तुंग सोभए । अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के । सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं । मनों कि इंद्र [2]द्रप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं । उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्तजा । चिकंत पच अंबुजा ॥ छं० ॥ ३३० ॥
गाथा ॥ [3]मढ़ मे रष्षत बाले । लग्गा सेनाय पास चिहु बीरं ॥
धरि धीरं तन दुरयं । रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना ।

दूहा ॥ बाल धरक्कति वचनि गति । ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कमधज्जै देषि कै । बर चिंतै चहुआन ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

(१) मो.-पपील ।   (२) मो.-दर्प्पनं ।   (३) को.-पढ़ ।

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना।

कवित्त॥ देषि सुभर [1]लच्छिनति। फौज चतुरंग रिंगावै॥
अरी सेन सम भार। धार भंजत मग पावै॥
बहु गिरष्टता रिष्ट। हक्कि अप्पन पर धावहु॥
सुबर स्यंघ आलस्य। स्याल ह्वधौ करि पावहु॥
उट्ठैन बीर बीरहु उठत। सुबर मंच फुनि करिय बर॥
अभ्भंग सेन भद्दव सरिस। अभँग अंग [2] सज्जे कहर॥छं०॥३३३॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना।

दूहा॥ चाहुआन सब सेन जुरि। भिरि रूंधे चहुंपास।
देव दुतिय देवह दरस। बल बढ्ढिय आयास॥ छं०॥ ३३४॥

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना।

कवित्त॥ असुर सेन कमधज्ज। सु सुर प्रथिराज सेन बर॥
अम्रत कित्ति संग्रह्यौ। मदह भौ क्रोध बीर [3]तर॥
मदन मोह रंभनी। तहां शशिव्रता समानं॥
दुहुन बीच सुभ्भयै। हेत चहुआन सुजानं॥
अक्कित्त राह पच्छै फिरग। चक्र तेग सद्विय सुबुधि॥
अलि सकति सेन माया विषम। सुबर बीर बढ्ढिय सु सुधि॥छं०॥३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं। जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा।

दूहा॥ दुहूं तेग तारून्य तन। सयन सुक्रति प्रतिकाल॥
जिन रष्यौ द्रोपत्त पन। सो [4]रष्षै प्रति बाल॥ छं०॥ ३३६॥
देह कंचुकि दह दून अलि। विच सुंदरी अमूल।
डोल तीस संयोग भति। भी भारथ्य समूल॥ छं०॥ ३३७॥

(१) मो.-लष्षिन सु। (२) मो.-सज्जै।
(३) ए. कृ. को.-त्रासि। (४) ए. कृ. को-रष्षे।

गाथा ॥ भारथ्थं प्रति राजं । सज्जे सेनाय बीर बीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं । अधीरं [1]सब्ब सेनायं ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

दूहा ॥ देषि बाल पारस फिरिय । मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि पछ पारस सुभति । शंकर सोभत थान ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिवृता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया ।

शंकर रस आचार किय । मढ़ दिष्षिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय । मन कंद्रप रस भोइ ॥ छं० ॥ ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिवृता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं । ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे।

कवित्त ॥ [2]दहति तीन चैंडोल । मध्य चैंडोल बाल भय ॥
भमर टोल झंकार । दासि बिंटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार । पंति मंडिय चावद्दिसि ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल । सथ्थ आयो सुअंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे । बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी बाल देवल सुढिग । लग्गि पाइ परदच्छि फिरि ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की ।

दूहा ॥ उतरि बाल चैंडोल तें । प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्जौ । सो मंडन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना ।

मंडन रन छंडन कलह । दल दैवत्त सु जुद्ध ॥
बर वज्जे बाजिच सुनि । भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

---

(१) मो.-सर्व, सरब ।　　(२) ए. कृ. को.-दसत ।

विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि ध्रंम्म चित पान ॥
दुतिय ध्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान ॥ छं० ॥ ३४४ ॥

गाथा ॥ बढ्ढे दलं समूरं। लष्षं सेनाय अष्टतं बलयं ॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

सेना में बीर रस का जाग्रत होना।

छंद भुजंगी ॥ जग्यौ बीर बीरं सु डौंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै ॥
जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [1]रूपं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

दूहा ॥ भयौ बीर बीरह तिगुन। नच्चौ रुद्र बहु भेद ॥
सो दिष्यौ दिष्यौ [2]नहै। सो देषन गुन छेद ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
नह तारक्कि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान ॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सौ। चाहुआन बलवान ॥ छं० ॥ ३४८ ॥
चाहुआन कमधज्ज बर। बरै षटक्क सुबद्द ॥
देवग्गिरि [3]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी ॥ सुसद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[4]रहे देव थांनं [5]बटे देव थानं ॥
रहे सब्ब योंही टगी टग्गा लग्गे।
मनो चित्रलिष्षे विचित्रंत ठग्गे ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जो इज्जै मन चरियं। हरियं एक कग्गयौ सबदं ॥
सब सेना कमधज्जं। विंटे वा बाल्ल सर सायं ॥ छं० ॥ ३५१ ॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिव्रता का बर कहना जो उसे बिष सा लगा।

(१) ए. कृ. को.-सूपं। (२) मो.-नहीं।
(३) मो.-सु उगाहिए। (४) मो.-रहं (५) कृ. को.-वढे, ए.-वढ्ढे

बर जैचंद सुबंधं । प्रोहित पंग रष्षियं [1]आइयं ॥
सहचर चारु सुपढ़ियं । हालाहलं बालयं मनयं ॥ छं० ॥ ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया ।

दूहा ॥ चढ्यौ पंग नव साज बर । अरु भर लिन्ने सथ्थ ॥
शंभु थान पूजन मिसह । चलि बर आयौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में धँस पड़े ।

तब लगि दल चहुआन के । ग्रह गुपंति कर आइ ॥
रुक्कि सकै नन मध्य लिय । बोलै संमुह धाइ ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय । भेष कीनौ तिन वारं ॥
गोप तेग गहि गुपत । कपट कावरि सब भारं ॥
किहुन फरस किहुं छुरी । चक्र किन हाथन माही ॥
किन चिसूल किन डंड । सिंगि सब सथ्थ समाही ॥
सा अंग सिद्ध चहुआन लै । दूतन दूत बताइ हरि ॥
सा अंग बाल उतकंठ करि । पै लग्गी परदच्छि फिरि ॥छं०॥३५५॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की ।

अरिल्ल ॥ फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी ।
सुमन काम कामना सुभग्गी ॥
मन मन बंधि [2]कियौ हथ लेवं ।
सुमन मंच प्रारंभ सुदेवं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

* दोहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें । प्रीत प्रात छुटि लाज ॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी । मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

शशिव्रता का शिव जी की स्तुति करना ।

(१) ए. कृ. को.-आहि ।
(२) कृ.-किए, कियउ, कियत्र । * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

छंद हनूफाल ॥ प्रारभं मंच सु राम । तिहि जपौ अजपा नाम ॥
हरि हरी बरुन विरत्ति । कबि कही चंद किरत्ति ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
श्रुत कह्यौ वेद पुरान । ज्यों सुन्यौ श्रवन निआन ॥
तन स्याम अम्मर पीत । रघुबंस राजस रीत ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
द्दग कमल कमला पान । मधु मधुर मिष्टत बान ॥
जिन नाम [1]जनमह [2]कोट । कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ॥ ३६० ॥
गंभीर साइर मान । आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल वृद्ध किशोर । उर वरन स्याम न गौर ॥ छं० ॥ ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट । पीवै कि गोपिन [3]पोटि ॥
भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ । सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ॥ ३६२ ॥
निज पानि पद्म कटाच्छ । जिन भूमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास । सय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ॥ ३६३ ॥
आराम कलप निधान । सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग । परकार गर्व विभंग ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
पर पाप लिपत इहै न । भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार । गुन निद्धि सुभ्भर भार ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर । भव पार कढ्ढन तीर ॥
सुर सुरी नाथ नचाइ । भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं० ॥ ३६६ ॥
चतुरान घट्ट सु घूमि । सुरपत्ति फनपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास । सहभूत अंग निवास ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
चय मंच जंपित वार । हर दीन तँह हंकार ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
अरिल्ल ॥ बाले व्रित्त विषम्म प्रमानं । हय गय दल रुंध्यौ चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सलेवर हेमं । देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सतह परिमानं । संमुह दलन रुंध्या चहुआनं ॥
गहह गहह कित्ती अविसेशं । सुवर चित्त चिंते जु नरेशं ॥ छं० ॥ ३७० ॥
गाथा ॥ बर छित्ती छिति धारी । सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥
अग्गैई मृग जूथं । ना भ्रुकै [4]मग्गयं राजं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनमाहि । (२) ए. कृ. को-जोट । (३) मो.-फोटि ।
(४) ए. कृ. को.-मृग्गयो ।

उद्धरे सेन सेनो। [1]संग्रामं वीर सुभद्रायं ॥
कालिंद्रीय सुरंगे। सो अंगो सुद्ध [2]भूतायं ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में धँस पड़े।

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनो तिन वारं ॥
कपट कंध कावरिय। धसिय देवी दरबारं ॥
सर्व शस्त्र आरंभ। हस्त आरंभ सुरी सल ॥
धसिय भीर सम्मूह। जूह पाई समंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज। भुज सुकिल्ल चहुआन किय ॥
शशिवृत्त बाल रंभह समह। मिलिय गंठि बंधन सुहिय ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया।

दिठ्ठ दिठ्ठ लग्गी समूह। उतकंठ सु भग्गिय ॥
निष लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय ॥
छल बल कल चहुआन। बाल कुअंरप्पन भंजे ॥
दोषचोय मिट्टयौ। उभय भारी मन रंजे ॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि ॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त बीर गजराज गहि ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना ॥ गहत बाल पिय पानि। सु गुर जन संभरे ॥
लोचन [3]मोचि सुरंग। सु अंसु बहे षरे ॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रामे। (२) ए. कृ. को.-भूताय। (३) मो.-कामुंचि।

अपमंगल जिय जानि। सु नेंन मुष वही॥
मनों षंजन मुष मुत्ति। भरक्कत नंषही॥ छं० ॥ ३७५ ॥
दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल बिसाल। सु उरज षरक्कही॥
सो ओपम कवि चंद। चित में बस रही।
मनु कनक कसौटी मंडि। म्रग्ग मद [1]कसरही॥ छं० ॥ ३७६ ॥
गाथा॥ मृग मद कसयति चित्ते। मित्तं पुनरोपि चित्तयं बसयं॥
अजहूं कन्ह वियोगे। कालिंदी कन्हयो नीरं॥ छं० ॥ ३७७ ॥
गहियं गद्द गद्द कंठो। बचनं संजनाइं निठ्ठयो कहियं॥
जानिज्जै सत [2]पचं। बंधे [3]सदाइ भवरयं गहियं॥ छं० ॥ ३७८ ॥
तप तंदिल में रहियं। अंगं तपताइ उप्परं होइ॥
जानिज्जै कसु लालं। घटनो अंग एकयौ सरिसौ॥ छं० ॥ ३७९ ॥
अपमंगल अल बाले। नेनं नषाइ नष किं सलयौ॥
जानिज्जै धन छपनं। सपनंतरो दत्तयं धनयं॥ छं० ३८० ॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में वीभत्स रस का संचार हुआ।

कवित्त॥ गहि शशिव्रत्त नरिंद। सिढी लंघत ढहि योरी॥
काम लता कल्हरी। पेम मारुत झकझोरी॥
बर लीनी करि साहि। चंपि उर पुठ्ठि लगाई॥
मन सुरंग सोइ [4]बत्त। कंत लगि कान सुनाई॥
नृप भयौ रुद्र करुना सुचिय। बीर भोग बर सुभर गति।
सगपन सुहास बीभच्छरिन। भय भयान कमधज्ज दुति॥छं०॥३८१॥

(१) मो.- फरसही। (२) ए. पत्तं। (३) ए. कृ. को. शब्दाय।
(४) ए. कृ. को.-वात।

वीरवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ।

दोहा ॥ बीर गत्ति संधिय सुमति । वृत्त अवृत्त न जाइ ॥
घरी एक आवृत्त रषि । सुबर बाल अनुराइ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर से और कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी ।

बाल सु बैर स बैर चिय । भान विरुद्ध न कौन ॥
सकल सेन साधन घरी । कलहंकृत गति [1]चीन ॥ छं० ३८३ ॥
अरिल्ल ॥ आवृत्त वृत्त गुन निग्रह राज । देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
है गै दल सज्जै तिहि बीर । हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं०॥३८४॥

शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त ॥ घरिय पंच दिन रह्यौ । मंत जद्दव प्रारंभिय ॥
मिलि कमधज्ज नरिंद । सकट व्यूह आरंभिय ॥
अर्द्ध सथ्थ अप्पनौ । चरन मंडिय बाम दिसि ॥
व्यूह चक्र बिय पाइ । सथ्थ उभभौ नरिंद कसि ॥
उद्दवन भार अंगत सकट । सबर पुंज अप्पन सजिय ॥
रघुनाथ साथ बलियं बिहसि । हंकि सु लछिमन तहँ रजिय ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ भरं भीर भाजी । कहं कूह वाजी ॥
सुनै पुंज राजी । मनो मेघ गाजी ॥ छं० ॥ ३८६ ॥
सनाहं सु साजी । चढ़्यो बीर वाजी ॥
बगं मेल ताजी । सबै सेन साजी ॥ छं० ॥ ३८७ ॥
करौं काम आजी । सिरं मोहि लाजी ॥

(१) ए.-चिन्ह ।

उठी मुच्छि एनं। सिरं लग्गि गेनं॥ छं० ॥ ३८८ ॥
कमंद्धं निहारी। सयंनं विहारी॥
कमानै निहारी। तरक्कस्स झारी॥ छं० ३८९ ॥
अरी तुंग तारी। फिरै [1]गज्ज भारी॥
सरोसं विहारी। मया मोह जारी॥ छं० ॥ ३९० ॥
महंतं विडारी। ....॥
किए नैन रत्तं। रसं रोस पत्तं॥ छं० ॥ ३९१ ॥
मुरं बीन बीरं। करौ आज तीरं॥
परै मोहि गत्तं। हरै शशिशव्रत्तं॥ छं० ॥ ३९२ ॥
असी जा पहारं। चढ़्यौ धार धारं॥
लियौ हत भारी। परं सीस डारी॥ छं० ॥ ३९३ ॥
पर्यौ मद्ध धाई। असीजा पुलाई॥
बजी कूह कूहं। अवाजं सजूहं॥ छं० ॥ ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई।

कवित्त॥ सुनि वज्जी [2]घरियाल। लाग [3]नीसानन बाजिय॥
इक दिन दोऊ सेंन। चंपि चावद्दिसि साजिय॥
महन रंभ सा जग्य। मध्य मोहन शशिवृत्तं॥
असुर सु सुर मिलि मथहि। सूर बंसी रजपूतं॥
आरंभ पच मंड्यौ कपट। कपट मुक्कि कढ़्िढय लपट॥
दुहूं बीच जहीं कुंअरि। उभय सिंह सारह झपट॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले।

दूहा॥ चाहुआन कमधज्ज बर। मिले लोह जल छोह॥
भर भर टट्टर बज्जही। बंसह लग्गिय कोह॥ छं० ॥ ३९६ ॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे।

(१) मो.-गन्न। (२) ए. कृ. को.-घरि, घरी पंच।
(३) मो.-नीसानत।

गाथा ॥ उच्चरियं अरि भायं। सायक कस्सेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं। मार मारं जंपि जी हाई ॥ छं० ॥ ३९७ ॥

दूहा ॥ अट्टत घाइ घट भंग कौ। करन मतह बर बीर ॥
मनहु काल कपि दल निरति। लेन [1]लंक मति धीर ॥ छं० ॥३९८॥
[2]धर धीरत्तन बीर बर। करिय न पंग प्रवाह ॥
चचर सीचव रंग गति। विधि बंधन रिन चाह ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी॥ मिले घाइ [3]न्निघाइ सा पुंज राजै। लगे अंग अंगं सुरंगति छाजै॥
मिले हथ्थ बथ्थं सु सथ्थं निनारै। मनो वारुनी मत्त [4]मय मत्त भारै॥
छं० ॥ ४०० ॥

किधों जुद्ध लग्गे कि मल्लं सवारे ॥ .... ॥
उरै लोह पंती परै श्रोन रुद्रं। मनों रत्त धारा बरष्षै समुद्रं॥
छं० ॥ ४०१ ॥

उड़ै छिंछि इछं सनाहं सुभिज्जै। मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं। बजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०२ ॥

मनो पट्टनं मंझि कंसी डकारं। दुती [5]ओपमा चंद जंपै विचारं ॥
बज झल्लरी देवलं द्वार मारं। उड़ै सार किंची कि रच्चै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

मनो झिंगनं भद्दवं रैनि भारं। .... ॥
*सबै सस्त्र मंचं भरं जेम वाहे। षिझै षग्ग कढ्ढै बिहथ्थै समाहे ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै। रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै ॥
सिवा लोति सोभै [6]प्रनाली अनेकं। फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं॥
छं० ॥ ४०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-फलक। (२) मो.-धन।
(३) मा.-निघ्घान। (४) मे.-मै।
(५) मो.-उप्पमा। (६) ए. कृ. को.-मूनाली।
* ए. कृ. को. सबै शास्त्र मंत्रं भजैरं समाह। बिजै खग्ग कढ्ढै बिब्री हथ्थ वाह ॥

बहै नाग मुष्षी सु सोहै बिकंतं। फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं॥
वियं वांह षंचै गिरै गज्जराजं। मनो द्रोन षंचे कपी काज पाजं॥
छं० ॥ ४०६ ॥

षिजै दंत दंती भरं कंध डारै॥ मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै॥
भरं लोहि गिद्धो भ्रमै भंति छुट्टै। मनो देवलं इष्ट चलि डोरि तुट्टै॥
छं॥ ४०७ ॥

लगै लोह हथ्थी सिरं वंबिझारै। तिनं गात तिंदू जरै अग्गि लारै॥
परै षोपरी तुट्टि भेजी सुभावै। दधी [1]भाजनं जानि वायस्स आवै॥
छं० ॥ ४०८ ॥

फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं। मनो कर्क करवत्त विहरंत कट्टं॥
नचैजा कमंधं करै हाक शीशं। चरंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं॥
छं० ॥ ४०९ ॥

युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन।

गाथा॥ मानिक्क प्रति ताजं। हेमं हेमेल विद्ध साधरियं॥
जानिज्जै निसि मद्धं। निरमल तारक सोभियं गैनं॥ छं०॥ ४१०॥

मुच्छी उच्चस बंकी। बाल चंद सुभ्भियं [2]नभ्भं॥
[3]गज गुर घन नीसानं। रीसानं षंग षल्ल याई॥ छं० ॥ ४११ ॥

अरिल्ल॥ दहाक बज्जि नीसानति [4]नद्दं। सबै सेन संग्राम बिवद्दं॥
इक्क अंग चावद्दिसि सेनं। जरै राज रत्ते [5]रस नेनं॥ छं० ॥ ४१२॥

छंद रसावला॥ लगी कर कोह। लगें घन लोह॥
छकै अति छोह। महा तजि मोह॥ छं० ॥ ४१३ ॥
भरा भर भार। तुटै तरवार॥
मची घन मार। परंत प्रहार॥ छं० ॥ ४१४ ॥
धुकंत धरन्नि। सरोस सरन्नि॥
निफूटत रुन्नि। बरै सु बरुन्नि॥ छं० ॥ ४१५ ॥

(१) मो.- भोजनं। (२) मो.-गैनं।
(३) मो. को.-गत्त, गत। (४) ए. कृ. को.-नद्दै, विषद्दै। ५ मो.-रन।

करै घन घत्त । महा द्रुत मित्त ॥
लरै बर लत्त । फटै रिन षत्त ॥ छं० ॥ ४१६ ॥
कटारिय एक । लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ॥ ४१७ ॥
धषै अति धीर । मनौं बर बीर ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ सबर बीर कमधज्ज । अरघ अप्पिय षग मग्गं ॥
इष [1]अच्छित उच्छरहि । जानि परिमानन मग्गं ॥
सार धार पुंषियै । बीर मंगल उच्चारै ॥
सबै साथ बंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥
बर मुक्कि बरन बरनी सुबर । इह अपुब्ब पिष्यौ नयन ॥
उप्पनौ बीर सिंगार सँग । रुद्र बीर चौरौं नयन ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

दूहा ॥ सिर सोहत बर सेहरौ । टोप ओप अति अंग ॥
बगतर बागे केसरे । रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ॥ ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ बग्ग बर । कमधज बीर विसेज ॥
[3]मिले बीर बीरत्त बर । दोऊ दैवत तज ॥ छं० ॥ ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था ।

देव तेज दैवत्त गुन । अव्रत मत्ति गुन कंति ॥
शशिवृत्ता चहुआन सौं । सुव्रत मंत गुन पंति ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
सांइ स्हूर सांई सु गति । दल दुंदुभि दैवत्त ॥
विधरं कर वीरह करह । सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
कालकूट कीनौ विषम । कोलाहल घन कीन ॥
अव्रत वृत्त अंतह भषै । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
भारथ दिष्षिय तत्त मति । अव्रत चिंत बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२५ ॥

---

(१) मो.-अष्षित । (२) मो.-संगट ।
(३) मो.-मिलें ।

कंठ कील कीली सुट्टत। ट्टतत जुद्ध सम पाइ॥
सुबर बीर भारथ्थ गुन। उठे बीर बिरुझाइ॥ छं० ॥ ४२६॥
षल्ल संकुल अंकुल प्रक्रित। चतुर चित्त बिरुझाइ॥
मनु बड़वानल मध्य तें। समुद सत्त गुन भाइ॥ छं० ॥ ४२७॥
बीर थान बिभ्रम भइय। नयन रत्त सम सार॥
मानहु बर धरि अद्ध में। नाकपत्ति गिरि भार॥ छं० ॥ ४२८॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ नाक पत्ति संभरिय। उभै काया अधिकारिय॥
वह जित्यौ बलि राइ। यहन दुज्जन सम सारिय॥
छिति पत्ति अति अभ्भ। दुहुन आभा पति बुद्धं॥
वह गोरी सुरतान। इहति दानवति विरुद्धं॥
घग घुलै दुहुन पुज्जै न को। दोऊ बाउ बर बीरं रन॥
लै चल्यौ हरिव शशिब्रत्त को। पहु पंजलि पुज्जै तरुन॥छं०॥४२९॥
दूहा॥ तरुन तेज तम हरन बर। बाल बहिक्रम उच्छि॥
मानों रति आरूढ़ करि। बर बारधि मति लच्छि॥ छं० ॥ ४३०॥
लच्छि सु लच्छिरु लीन हरि। इह लीनी संग्राम॥
घटि बढ़ि मंचह समन बरि। दोऊ बीर बढ़ि [1]वाम॥ छं० ॥ ४३१॥
गाथा॥ चावद्दिसि न्रप [2]बिंध्यौ। पुंजं सेनायं सेनयौ बीरं॥
धर धरनी आधारं। सा धारं डुलियं शीशं॥ छं० ॥ ४३२॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे।

[3]मुरिल्ल॥ बढ़ि सस्त्र दुहाइय बीर रसं। दुहु सेन सुधावत अंग कसं॥
मुष बीर बिगस्सिय रेन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी॥
छं० ॥ ४३३॥
छंद बिराज॥ लगे लोह सारं। दोऊ बीर भारं॥
महा तेज तारं। बरं कंज भारं॥ छं० ॥ ४३४॥

(१) मो.-काम। (२) मो.-बिंटं।
(३) मो.-प्रति में यह छन्द त्रोटक नाम से लिखा है।

घरी यार सारं । परैं कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
करै मार मारं । बबक्कै बकारं ॥
चलैं रुद्धि धारं । पलं मच्चि गारं ॥ छं० ॥ ४३६ ॥
चरं मंस चारं । दिषै प्रेत दारं ॥
धपै धार धारं । टरैं जे न टारं ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
डकै भूत डारं । ढरै सीस ढारं ॥
उड़ी बीर रैंनी । भ्रमै भौंर सेंनी ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
अवध्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

दूहा ॥ कोपि बीर कायर धरकि । परषि पर्यंपन जोग ॥
यह गति छंडै बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ बांन पथ्थ बलभीम । सत्त [1]सिवरी अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिंघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
बल सुजग्य सक्रह बिसाल । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन धुन धू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥
बर सिंघ सिंघ रष्षै मरन । बर कोबिद कोबिद डरिय ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा ॥ सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ॥ ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरै मुष ना मुरै । मरट [4]मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुति । रति नाइक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग बल । इह लग्गी अति बीर ॥ छं० ॥ ४४४ ॥

(१) मो.-सिवरं । (२) मो.-गंभीरं ।
(३) मो.-भारी । (४) मो.-मूल ।

धन्य हैं उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते।

अरिल्ल ॥ द्रव्य [1]वस्य नन होइ प्रमानं। अप्पन [2]प्रान स्वांम क्रत दानं॥
जिन जग जित्ति कित्ति बसि कीनी। मरन स्हर सस्त्रह बर लीनी॥
छं० ॥ ४४५॥

दूहा ॥ कहां पंच पंचौ बसत। कहां प्रकृति प्रति अंग॥
कहां हंस हंसह बसै। कौन करै रन जंग॥ छं० ॥ ४४६॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध।

इह कहि कढ्ढिय सार कर। षोलि षग्ग दोउ पानि॥
मानहु मत्त अनंग ह्वै। ध्रत छुट्टै [3]जम जांनि॥ छं० ॥ ४४७॥

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ मिले हथ्थ बथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ बारुनी मत्त गज दंत न्यारे॥
उड़ै लोह पंती परै श्रोन [4]रुंदं। मनौ रुद्धि धारा बरष्षंत बुंदं॥
छं० ॥ ४४८॥

घुमे घाय घायं अघायं अघायं। झुमै झार झारं झनक्कै झकायं॥
करै जोगनी जोग काली कराली। फिर पैट धाये महा विक्कराली॥
छं० ॥ ४४९॥

परै स्हर वाहै बहथ्थी क्रपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मलं चारि जानं॥
धमां धम्म मत्ती महो माहि [5]धानों। पिंजारे सतं रुव पीजंत मानों॥
छं० ॥ ४५०॥

महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। [6]कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं॥
छं० ॥ ४५१॥

मुरिल्ल ॥ [7]हाहरे रूष कायर प्रकार। [8]छंडीति लज्ज अरु बीर मार॥
अभ्यसै स्हर जिन स्हर रूप। दैवत्त भूप दिष्षै अनूप॥ छं० ॥ ४५२॥

---

(१) मो.-बसें। (२) ए. कृ. को.-काम। (३) मो.-यम।
(४) ए. कृ. को.-रुद्दं। (५) मो.-वानों। (६) मो.-वहै।
(७) मो.-हारे। (८) मो.-छंडी लज भये बासी मार।

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ विषम जग्य आरंभ । वेद प्रारंभ शस्त्र बल ॥
हैं गै नर होमियै । शीश आहुत्ति [1]स्वस्ति कल ॥
क्रोध कुंड विस्तरिय । कित्ति मंडप करि मंडिय ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल । पेषि पल साक्कत छंडिय ॥
तुंबर सु नाग किंनर सु चर । अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥
मिलि दान अस्स अप्पन जुगति । भुगति मुगति तत पावहीं ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

दूहा ॥ करि सुचार आचार सब । समद कित्ति फल दीन ॥
गुरुजन मिस्ति करुना करिय । कायर हाहर कीन ॥ छं० ॥ ४५४ ॥

कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मिलि जद्दव कमधज्ज । अहिर व्यूहं आरंभिय ॥
पुच्छ सु लषि मनि बंध । पांइ गुज्जर पारंभिय ॥
सुधर मंडि वर बीर । पंग बंधह रचि गड्ढै ॥
फन अप्पन भय पुंज । जीभ कूरंभ सु ठड्ढै ॥
हयनारि जोरि जंबूर घन । दसन हड्ड हग मुष्ष करि ॥
मनि भयौ मेर मारूफ़ षां । [2]चचचर सीचौ रंग परि ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

गाथा ॥ अप्पं व्यूह अरंभो । प्रारंभो बीर भद्रायं ॥
जानिज्जै चव रंगं । चतुरंग इक्क घंटायं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

दूहा ॥ घटिय घट्ट अघटन घटिय । पढ़िय सार दुअ सैन ॥
पंगराइ बंध्यौ सु हृत । किये रत्त बर नैन ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
रत्ते नैन विषम्म गति । दावानल प्रथिराज ॥
बीर चंद घन उन्नयौ । सार सु बुट्ठन आज ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मोर व्यूह प्रथिराज । सथ्थ [3]सज अप्पन कीनौ ॥
चुंच केश मंडली । कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥

(१) ए.-सुस्ति । (२) को.-षचर । (३) मो.-जल ।

पांड पिंड विधि पंष । गरुत्र गहिलोत बीर सजि ॥
पुंच्छ राज रघुवंश । चारन पुंडीर चंद रजि ॥
दुहु लोह कढ्ढि परियार तें । सारधार में अग्नि भर ॥
पल पंच तरंगनि रुक्कि जल । जांनि कमोदनि नंचि सर ॥ छं० ॥ ४५९ ॥
दिषि वर [1]लष्षिन फवज । चंपि चतुरंग रिँगावहु ॥
अरि सयन्न संभार । धोर भंजै मग पावहु ॥
बहु गरिष्ट तारिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहिं ॥
सु बर सिंघ आलसैं । स्याल छुधौ करि ध्यावहिं ॥
उठ्ठै न बीर बीरह उठत । सुबर [2]मंत फुनि फुनि करैं ॥
वरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न [3]समर सरवर भरै ॥ छं० ॥ ४६० ॥
गाथा ॥ समर सु मथ्यौ सेनं । तारं झंकार बीर भद्रायं ॥
केवल गति कल रूपं । भूयं बीर जुद्धयो समरं ॥ छं० ॥ ४६१ ॥

बीररस में शृंगाररस का वर्णन ।

दूहा ॥ समर जुद्ध मच्चिय समर । हालाहल बर [4]मत्ति ॥
कोलाहल पंषिन कियौ । कांम रूप बर जित्त ॥ छं० ॥ ४६२ ॥
छंद नाराच ॥ बरंत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ॥
लगै सु गौरि पासयं । परक्रिया कटाछयं ॥ छं० ॥ ४६३ ॥
सरंत तीर सोहयं । उरंद मुट्ठि छोहयं ॥
हला हलं हलं मलं । भिलंत अंग संभिलं ॥ छं० ॥ ४६४ ॥
[5]कडा कडी कडक्कयं । दडा दडी दडक्कयं ॥
पडै सिरं पडक्कयं । डकंत बीर डक्कयं ॥ छं० ॥ ४६५ ॥
षिसै न ज्यों षडक्कयं । तुटंत तेजि डक्कयं ॥
हडा हडी हडक्कयं । .... ॥ छं० ॥ ४६६ ॥
निरष्षि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
बरंत अच्छरी बरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ॥ ४६७ ॥
लगंत लोह [6]सो लरं । अरिंम मत्त संमरं ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

(१) ए. कृ. को.-लच्छन । (२) ए कृ. को.-मंत्र । (३) मो.-समूर ।
(४) को.-सत्ति । (५) ए. कृ. को–कटा कटी । (६) मो.-सौलरं ।

अरिल्ल ॥ आरिष्टन सम दिष्टन दिष्षिय। बीर चंद गह गह मुष भष्षिय ॥
यद भरि होंन न परत सुबंधं। बर भारथ बीर रस संधं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गाथा ॥ उट्ठहि एक प्रमानो। धावंताय पंचयो सयनं ॥
[1]वाहंतं वर लोहं। साइनं देषयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७० ॥
रुधिरं पच तसतयौ। दो मझ [2]काय हक्कयौ सिरयं ॥
अति गति दुष्ट प्रकारं। अगिनत होंइ बीर सम सेनं ॥ छं ॥ ४७१ ॥
अगनित गने न जानं। ई कोइ कोपि रुड्डयो सहसं ॥
बर बीरार सुभट्टं। दावानलं पंगयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना।

दूहा ॥ तव चहुआन सु कन्ह वर। ठट्ठौ करि गुरुराज ॥
हुकम नृपति छुट्टौति इम। [3]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ मुष छुट्टत नृप बैन। नैन दिट्ठौ धावंतौ ॥
क्रंम बंध बल मोह। छोह बंधयौ सु बरत्तौ ॥
सु बर सेन चहुआन। सिंग जद्दूनं [4]नवाई ॥
जनुं मंदिर विय बार। ढंकि इक बार बनाई ॥
तकसीर करन दोउ अंस बर। कित्ति मग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविह आदित्य दिन। अगनि सार बुट्टिय कहर ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

गाथा ॥ मुष छुट्टा नृप बैनं। कै दिट्ठाय धावता नैनं ॥
बज्जी वाहु सुबारं। धारं ढारि [5]मत्तयौ धरयं ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ मत्त ढरहि संमुष भिरहि। स्वांमि सनाह सहूर ॥
आज मुष्य चहुआन कन्ह। सिंधु सत्त कौ नूर ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

गाथा ॥ सद्दं सिद्धत नूरं। कारूरं करनयो नथ्थी ॥
एक्को अंग सुरंगो। दिष्षे वा बीरयं बीरं॥ छं० ॥ ४७७ ॥

(१) को.-व्याहंतं। (२) मो.-काम। (३) मो.-मनु
(४) मो.-नमाई। (५) ए. कृ. को-मत्तयो।

धनयं लछि नरिंदं । तिहि संचिय सायरो नथ्थी ॥
कलहंतं बल विषमं । जुषमं देहीय लज्जतौ सूरं ॥ छं० ॥ ४७८ ॥
कढ्ढै लोह दुहथ्थं । सत घरियाय बज्जयौ अंगं ॥
चावद्दिसि चतुरंगी । अनुरंगी सेन सब्बाइं ॥ छं० ॥ ४७९ ॥
दूहा ॥ अनुरंगी सेना [1]सकल । सह सुरद्ध विरुद्ध ॥
अबुध बुद्ध भारथ्थ में । दान मान सु [2]प्रबद्ध ॥ छं० ॥ ४८० ॥
गाथा ॥ बर अथवंत सु दीहं । झुझ्झं विन जोतयं कलयं ॥
घरिघट अघट नरिंदं । सा बुद्धं बीर भद्रायं ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

पृथ्वीराज के बीर सामंतों का प्रशंसा ।

मुरिल्ल ॥ बीरभद्र अरु रुद्र जल्लप्पिय । कहौ सत्त संकरषन थप्पिय ॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिष्यौ । इन समान कोइ बीर विसष्यौ ॥
छं० ॥ ४८२ ॥
गाथा ॥ को [3]दिठौ सम बीरं । सामंतं स्वामयौ [4]क्रमयं ॥
इक्कं करन प्रमानं । अंगद कामेय रावनो [5]भिरयं ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
चौपाई ॥ राम कांम अंगद अधिकारी । स्वांमि कांम सामंतव धारी ॥
जिन हय गय तन तिन वर जान्यौ । सुमत भ्रंम स्वामित्त पिछान्यौ ॥
छं० ॥ ४८४ ॥
[6]सुपति भ्रम्म जिन तंत प्रमानिय । मुकति सुर्ग केवल सुनि बानिय ॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंद्यौ । सुपथ साथि आपथं सु मंद्यौ ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय । सार कढ्ढि हय तज्जि सु धारिय ॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं । जड़ता तज्ज लगत तम तारं ॥ छं० ॥ ४८६ ॥
छंद विराज ॥ लगे बीर सारं । किए मत्त पारं ॥
बहथ्थंत धारं । अनुज्झा प्रहारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥
तुटै धार धारं । मनों श्रुत्त तारं ॥
अवित्तं विहारं । कलिंदी कहारं ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुवल । (२) ए. कृ. को.-प्रबुद्ध ।
(३) मो.-नट्ठौ । (४) को-मो.-कृतयं ।
(५) मो.-भरयं । (६) ए.-सुमति । (७) मो.-पराति ।

मनौं नभ्भ धारं । सु भारथ्थ सारं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

*चौपाई ॥ सार धार भारथ प्रहारं । मानहु दुत्तिय अंग बिहारं ॥
धार तिथ्थ कै तिथ्थह राजं । जनक काम कामनि सिरताजं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

कवित्त ॥ बर अथवंत सु दीह । झुझ्झि [1]लच्छिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम । ईस लीनौं जु शीश कर ॥
रह्यौ न तन दझ्झन सु मंस । पल चरन न षाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्षर [2]पलान । ढुढंत नन पाइय ॥
बरि लियन बीर अंतर मिल्यौ । [3]अच्छर [4]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान कौ । दिव दुंदुभि बज्जत बियौ ॥ छं० ॥ ४९१ ।
अगनि झार धर धार । सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिष्ट सिंघा सुरारि । भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात । बथ्थ अन बथ्थ सु लग्गा ॥
सुरत अंतरित सेत । मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नृप द्वै करिय । दोऊ घाव घन घुम्मि घट ॥
उबर्यौ कन्ह प्रथिराज क्रम । झुझ्झि पुंज बंध्यौ सुभट ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ।

छंद भुजंगी ॥ बजौ दुंदुभी आज आयास थानं । करे लोह लोहं [5]सुलोकंति गानं ।
कहै चंद सूरं महाबीर पाई । परै पुप्फ बर विष्ट वज्जै चिघाई ॥ छं० ॥ ४९३ ।

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी ।

कवित्त ॥ जीति लियौ जै पत्ति । चारु चतुरंग स मोरी ॥
बर बंध्यौ नृप पुंज । ढाल जद्दव न ढँढोरी ॥
बर [6]लच्छिन परि षेत । कन्ह चहुआन उपारिय ॥

---

* मो.-प्रति में अरिल्ल ।　　(१) मो.-लन ।
(२) मो.-प्रमान ।　　(३) मो.-अत्सर ।　　(४) मो.-सुत्सर ।
(५) ए. कृ. को.-लोकेसु ।　　(६) मो०—लष्पिन ।

षेत ढूंढ़ि प्रथिराज। सुभ्रत भोरी करि डारिय ॥
इतनें सु भान अस्तमित भये। दोऊ सेन बर उत्तरिय ॥
मुक्की न बग्ग कमधज्ज की। रोस राह विसरन भरिय ॥ छं० ॥ ४९४ ॥
बजी संझ घरियार। सार बज्यौ तन झंझर ॥
जनु कि बज्जि झननंक। ठनकि घन टोप स [1]उच्चर ॥
अनल अग्गि सम जग्गि। जेन धज बंधि सलग्गा ॥
मनु द्रप्पन में बैठि। नेत बडवा नल जग्गा ॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर। चिविध बीर गुन बर भरिय ॥
हर हार गंठि रुठि उमां। किम उतारि पच्छो धरिय ॥ छं० ॥ ४९५ ॥

कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना।

छंद भुजंगी ॥ भिर्यौ राम रन बीर कमधज्ज बीरं।
करो आज सर्वं [2]सुन्निब्बीर धीरं ॥
गुहै माल ईशं नचैं जोग बीरं।
निरं तंत प्रेतं धरं धीर हीरं ॥ छं० ॥ ४९६ ॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं।

दूहा ॥ परि पथ्थर सथ्थर सुरन। गनक गनें नहिं जाइ ॥
हथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी। मुरबी [3]मद्ध न माइ ॥ छं० ॥ ४९७ ॥
संझ सपत्ते न्रपति बर। नव नव रस अरपंत ॥
बर प्रथिराज नरिंद दुति। सो ओपम कविकंत ॥ छं० ॥ ४९८ ॥

तीन घड़ी रात्रि होजाने पर युद्ध बंद हुआ।

कवित्त ॥ घरिय तीन निसि गइय। बार बर सुक्र सु आगम ॥
पंति परी अरिजूह। बीर विंध्यौ अरि जागम ॥
कोट षलन सोभै। विसाल सामंत सूर थँभ ॥
जस देवल उप्पनौ। बीय गय गिरी सेत रँभ ॥
प्रथिराज देव दानव दलन। लच्छि रूप जद्दव कुँअरि ॥
नव रस विलास पूजा करहि। बर अच्छरि भइ पहुप सरि ॥ छं० ॥ ४९९ ॥

---

(१) ए.—उब्बर। (२) ए०—सन्निवरि। (३) ए०-सद्ध।

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन।

अम सु अंग बिंटयौ। सुधा [1]बिंटयौ जु बाल रस॥
अमिय चंद बिंटयौ। समुद बिंटयौ बडवा तस॥
अरि कैं दिल विष उरग। मंच ससि वृत्त प्रेम भर॥
लहि न सुद्धि सब बसन। आइ लग्गेति रोस भर॥
बजि बीर बार दुज दल सघन। लाग निसानन नृत्य पर॥
प्रथिराज सेन बंधौ स अति। सु कविचंद उच्चारि बर॥ छं०॥ ५००॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना।

भान कुंअरि शशिवृत्त। नैन शृंगार सुराजै॥
बीर रूप सामंत। रुद्र प्रथिराज बिराजै॥
चंद अदभ्भुत जानि। भए कातर करुना मय॥
बीभछ अरिन समूह। सात उप्पनौ मरन भय॥
उप्पज्यौ हास अपछरि अमर। भौ भयान भावी बिगति॥
कूरंभराव प्रथिराज [2]बर। लरन लोह चिंते तरनि॥ छं०॥ ५०१॥

राम रघुवंश का कहना कि जिस बीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुबंस। सुनौ सामंत सूर तुम॥
अमर नरन बंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम॥
धार तिथ्थ बर आदि। तिथ्थ काशी सम भज्जै॥
असि वरुना तिन मध्य। लोह तेजं सम गज्जै॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। अकल अपूरब बत्त इह॥
लभ्यौ न बीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभ्भि इह॥ छं०॥ ५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंच गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय॥

(१) मो.-बींट्यौ।　　(२) ए. कृ. को.-छर।

केस कंस मरद्दन्न । नंद नंदन लिलाट किय ॥
भोह भुअद्धर धरि समुह । नैंन निज्जिय नाराइन ॥
बदन दिद्व श्रीक्रष्ण । हृदय थप्पौ मथुराइन ॥
कटि जंघ गुविंद रक्षा करन । चरन थप्पि असरन सरन ॥
गुर इष्ट समरि प्रथिराज कौ । इह सुदिद्व रक्षा करन ॥ छं० ॥ ५०३ ॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ परि पारस जद्दव सयन । मिलि कमधज्ज प्रमान ॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै । [1]पंति सु मंडिय भान ॥ छं० ॥ ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ ।

छंद चोटक ॥ परि पारस पंग नरिंद घनं । मनो भान सुमेर कि पंति बनं ॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं । मनौं बज्जत दुंदुभि देव तनं ॥ ५०५ ॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी । जु कियौ सिरदार सु पंग अनी ॥
दिसि पच्छिम बालुकराय अर्यौ । तिनके मुख कन्ह पजून लर्यौ ॥
छं० ॥ ५०६ ॥
हुअ ईस दिसान दिसा न्रप मान । तिन कें मुष भौ रन भाटिय भांन ॥
दिसि पूरब भौ षुरसान षँधार । तिन कै मुष मंडि सलष्ष पँवार ॥
छं० ॥ ५०७ ॥
अगिनेव दिसा वन सिंघ अचाइ । तिन के मुष मंडिय निढ्ढुर राय ॥
दिसा जम लच्छिन बंधिय फौज । तिन के मुष चामँड दाहर कौज ॥
छं० ॥ ५०८ ॥
सुनै रति छच उथ्यौ कर बीर । तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर ॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल । [2]तिनें मुष भीम भिरे रिनमाल ॥
छं० ॥ ५०९ ॥
[3]सु उत्तर दै प्रभु पंग कुँआर । तिनें रघुवंस बजावत सार ॥
बढै गुर जंबुर [4]हथ्थह नार । मनौं गज भद्दव कौ उनिहार ॥
छं० ॥ ५१० ॥

---

(१) ए.०--पत्ति ।
(२, ३) पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है । (४) ए. कृ.०को.-हथं हथ ।

छुट्टै गुरजं बवियानन सें। षह तें पलटे मनों तारक सें॥
पति बंधि सनाह सयान करैं। अरि के मुष सामँत सूर लरैं॥
छं०॥ ५११॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ।

भयें प्रात जगंतय सूर षरे। तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे॥
गय सब्ब निशा पहु फट्टि ननं। दोउ संगम अंग विहंग घनं॥
छं०॥ ५१२॥

प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं। निशि लीय उसास निसास डरं॥
बर तोरत तारक भूषन सो। मुष मूंदि कमोदनि ना बिगसो॥
छं०॥ ५१३॥

पहु फट्टिय बीर प्रमांन नषै। रवि [1]रत्त सुतत्त वियोग लषै॥
जु भई गति सिथ्थल ता सगरी। सर छिप्पन केलि कला निसरी॥
छं०॥ ५१४॥

[2]बजि दुंदुभि देव निसान धुअं। प्रगटे सत पच सुरंग हुअं॥
बर रंग [3]जवा सन जोति फिरी। घन देहि असीस चकी चतुरी॥
छं०॥ ५१५॥

घन रोर चकोर कमोद भगे। जु गए दुरि चोर सु देव जगे॥
जमुना हुलसी जमराज हंस्यौ। जु गयौ तिमरं भजि तेज सज्यौ॥
छं०॥ ५१६॥

बर इंद अनंदिय चंद कह्यौ। जु सज्यौ रथ उंच अरुन्न गह्यौ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ। सु गयौ कमलं कर को अकरयौ॥
छं०॥ ५१७॥

बर उद्वग नीर पवन्न उछं। जु चले सब क्रंमज जग्गि गछं॥
जु भयौ धन भ्रंम मिटी वनिता। वल जाप अजाप न सो जपता॥
छं०॥ ५१८॥

गाथा॥ गई सर्व्वरी सु संबं। फट्टी पहुवँ नठ्ठयौ तिमिरं॥
तम चूरन प्रति किरनं। तरुनं विराइ तरुनयो रचयं॥ छं०॥ ५१९॥

(१) को.-वृत्त। (२) को.-वट्टि। (३) ए.-जवासनि।

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरबीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे।

कवित्त ॥ [1]सुफट किरनि पहु बीर। परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय षट्ट प्रगटीय। हक्क बोलंत हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन। प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन। जग्य जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेह नवम्मिय नव निसा। नव निसान दिशि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै। रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ॥ ५२० ॥

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ सुघटं किरनं बीरं। पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो। मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ॥ ५२१ ॥

दूहा ॥ दष्षिन पत्त सुमेर फिरि। यों पारस पहु पंग ॥
सार धार धारह मिले। सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ सार धार प्राहार प्रकार। मनौं मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तों विरझाइ। भान पयान न मत्त सुचाइ ॥ छं० ॥ ५२३ ॥

पृथ्वीराज का शुद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना।

गाथा ॥ ग्रह सुद्धा प्रथिराजं। अष्ट ग्रहं बंकमो विषयं ॥
विष्णुं बीर सुधारं। पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ॥ ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था।

दूहा ॥ सा पंजर दिय राज बर। सस्त्र लगै नहिं चाइ ॥
कोटि अंग घावह घने। भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ॥ ५२५ ॥

बैकुंठ बासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे।

गाथा ॥ बैकुंठह बर वासी। सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं। अनरष्षा मंचयो धरयं ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-भट।

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना।

दूहा ॥ बज्जि राग चौहान भर। उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार बज्जिय विषम। कहि ब्रंनन कविचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना।

छंद चोटक ॥ मुर तीन फवज्ज सु बंध थपी।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु बीर सुरंग अनी।
बिच बंधिय हथ्थियय पंति घनी ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
बर हब्बसि किन्नर रूमि बिचै।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सौर सुगंध बिछाइ घनं।
बहु जुझ्झ कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
हय उच्छरि षेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1]तिनं बनि बारि भगी ॥
अरची सरसीरुह [2]संकुचिता।
चकई चक मूंकति चूक तता ॥ छं० ॥ ५३० ॥
पवनं गवनं नन पंष वहै।
नव नेज धजा [3]धज लग्गि रहै ॥
फन फूंक फनं पति को बिसरी।
मुदरी दिग अठ्ठ हगं धुँधरी ॥ छं० ॥ ५३१ ॥
घन बज्जत घंट सघंट घनं।
नव नोरथ नारि निभंग मनं ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं।
[4]चमकै बल के मन चौज मनं ॥ छं० ॥ ५३२ ॥

(१) मो. नितम्बनि। (२) ए.-कृ. को.-संकुरित, संकरित।
(३) मो.-धन। (४) मो.--चमक्कें वलकें यमकें जमनं।

तिन की उपमा कविचंद करी।
मनौं मेघ महेंद्रव बीज झरी॥
घन मन्निय नद्द बिबंक सुरं।
सुभिद्दै बिब हथ्थ धजा बिथुरं॥ छं०॥ ५३३॥
गज नद्द जंजीरन के घुरयं।
मनौं बंधिय झिंगुर सा सुरयं॥
तिन के कछु दान कपोल झरे।
सु मनौं नभ के वरसे बदरे॥ छं०॥ ५३४॥
बजि लाग निसान धमंक सजी।
सहनाइन सिधुंअ राग बजी॥
नव नारद सारद ते किलकै।
नब बंदि बिरद्द नदे हलकै॥ छं०॥ ५३५॥
घन देषि अरिष्ट सुबाल डरी।
मुदरी नव आनद चित्त हरी॥
कमधज्ज कला चढ़ती बर पेषि।
मुंदरी ससिवृत्त दइ [1]अग्गि [2]लेखि॥ छं०॥ ५३६॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना।

निसाणी॥ फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा॥
अग्गें उभ्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा।
मनौ उभ्भै मेर कै अड्डी अग डंदा॥ छं०॥ ५३७॥
पीछै ठाढ़े राः बड़ बल जे विचरंदा।
जानकि उत्तर उन्नया घन लोह सहंदा॥
पाइक पंति अपार वर जनु मोर नचंदा।
बाग गहिग्गहि बाज कीन रन बीर नषंदा॥ छं०॥ ५३८॥

(१) ए. कृ. को.--गति। (२) मो.--पेषि।

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांक व्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	|=)	)||
कविवर बिहारीलाल–(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)||
गद्यकाव्यमीमांसा–(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	|)	)||
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्ण दास रचित)	|)	)||
समालोचना–(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)||
समालोचनादर्श–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	=)	)||
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र– (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	||)	–)
विसूचिका चिकित्सा	|)	)||
हरिश्चन्द्र–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)||
भगवद्गीता–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	|–)	)||
उथेलो–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	=)	)||
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १० भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य–प्रति भाग	१)	–)
हिन्दी लेकचर–(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	–)	)||
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	||=)	–)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	|–)	)||
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१|)	–)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	|=)	)||
प्राचीन-लेख-मणि-माला–१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	–)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	|)	)||
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	|–)	)||
पृथ्वीराजरासो–पहिला भाग (समय १–११)	४)	|)
" समय १२–२५	३)	=)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	=)	)||
श्रीधर का जंगनामा	|||)	–)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	||)	–)

सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित)	३॥)	=)॥
दादू दयाल की बानी	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	।॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

